RNI: UPHIN/2015/60902

राजधानी से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

www.theachivertimes.com

डाक पंजीयन संख्या

एस.एस.पी.एल.डब्लू/एन

पी.439/2015-2017

वर्ष : 9 अंक : 187

पृष्ठ : 8 मूल्य : 3 रुपया

लखनऊ, शुक्रवार, 27 अक्टूबर, 2023

द अचीवर टाइम्स

बॉर्डर पर हाई अलर्ट,बीएसएफ जवान को लगी गोली

जम्मू-कश्मीर के अरनिया सेक्टर के सभी पोस्ट पर दोनों ओर से फायरिंग

एजेंसी

अरनिया। आतंकी घुसपैठ की आशंका के चलते सीमा सुरक्षा बल पाकिस्तानी रेंजर्स को करारा जवाब दे रही है। जम्मू-कश्मीर के अरनिया सेक्टर की सभी छह बॉर्डर आउटपोस्ट पर दोनों तरफ से गोलीबारी हो रही है। आतंकी घुसपैठ की आशंका के चलते सीमा सुरक्षा बल पाकिस्तानी रेंजर्स को करारा जवाब दे रही है। सीमा सुरक्षा बल की तरफ से हाई मास्ट लाइट चढ़ाई जा रही है। पूरे बॉर्डर पर हाई अलर्ट कर दिया गया है। विक्रम पोस्ट पर बीएसएफ का एक जवान गोलीबारी में जख्मी हो गया है। बताया जा रहा है कि जवान के पैर में गोली लगी है। सीमा सुरक्षा बल की तरफ से रिहायशी क्षेत्र को बिजली बंद करने का आदेश दिया गया और लोगों को घरों के अंदर रहने के लिए कहा गया है। बॉर्डर के साथ गांव में भी

गोलियां बरसना शुरू हो गई हैं और बॉर्डर आउटपोस्ट पर बड़े फायर की घटना सामने आ रही है।

कुपवाड़ा में पांच आतंकी ढेर

इससे पहले आज ही उत्तरी कश्मीर के कुपावड़ा जिले में सुरक्षाबल एक बड़े आतंकी घुसपैठ को नाकाम करने में कामयाब रही। सुरक्षाबलों ने पांच आतंकियों को मार गिराया गया। मारे गए आतंकी लश्कर-ए-तैयबा से जुड़े हुए बताए जा रहे हैं। मामले को लेकर डीजीपी दिलबाग सिंह ने कहा कि सेना और पुलिस की तरफ से ऑपरेशन जारी है। घुसपैठ के लिए इस क्षेत्र से बार-बार कोशिश की जाती है। नियंत्रण रेखा के पार करीब 16 लान्चिंग पैड बनाए हैं। सेना और पुलिस की तरफ से पूरी सतर्कता बरती जा रही है। आतंकियों की तादाद दिन व दिन घटती जा रही है। आने वाले दिनों में इनकी गिनती और भी कम होगी।

सैन्य अफसरों के साथ की बैठक

इससे पहले वीरवार को डीजीपी ने उत्तरी कश्मीर के सीमांत जिले कुपवाड़ा में सेना के अधिकारियों के साथ बैठक की। इसके अलावा उन्होंने नियंत्रण रेखा के करीब कुछ अग्रिम इलाकों का दौरा किया। इस दौरान कश्मीर जोन के एडीजीपी विजय कुमार, एसएसपी युगल मन्हास समेत पुलिस और सेना के अधिकारी उनके साथ रहे।

सचिन पायलट ने ईडी की कार्रवाई पर उठाया सवाल

डराने-धमकाने वाले हथकंडे काम नहीं करेंगे

एजेंसी

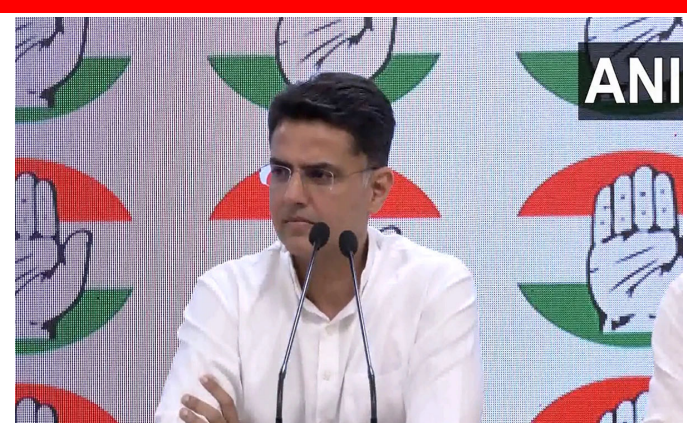

नई दिल्ली। कांग्रेस नेता ने कहा कि यह भाजपा ही है जिसने विपक्षी दल के नेताओं को निशाना बनाने, परेशान करने और डराने-धमकाने के लिए सरकारी एजेंसियों को एक हथियार और उपकरण के रूप में इस्तेमाल करने की आदत बना ली है। राजस्थान में जांच एजेंसियों की कार्यवाई को लेकर कांग्रेस केंद्र सरकार पर हमलावर हो गई है। कांग्रेस नेता सचिन पायलट ने भी केंद्र की भाजपा सरकार पर निशाना साधा है। सचिन पायलट ने संवाददाता सम्मेलन में कहा कि चुनावों में अपनी हार को देखते हुए, कांग्रेस नेताओं को विशेष रूप से निशाना बनाया गया और बिना किसी सबूत और तथ्य के छापे मारे गए। उन्होंने कहा कि इस तरह की छापेमारी यह संदेश देने के लिए की गई है कि अगर हम (बीजेपी) राजनीतिक रूप से कमजोर हो गए तो वे भारत सरकार की एजेंसियों का दुरुपयोग करेंगे चाहे वह सीबीआई ईडी हो या इनकम टैक्स और हम एक तरह का डर पैदा करने की कोशिश करेंगे।

कांग्रेस नेता ने कहा कि यह भाजपा ही है जिसने विपक्षी दल के नेताओं को निशाना बनाने, परेशान करने और डराने-धमकाने के लिए सरकारी एजेंसियों को एक हथियार और उपकरण के रूप में इस्तेमाल करने की आदत बना ली है। उन्होंने कहा कि जब उन्हें लगता है कि वे राज्य के लोगों के जनादेश के माध्यम से चुनाव नहीं जीत सकते हैं, तो वे इन एजेंसियों को शामिल करते हैं। उन्होंने कहा कि चुनाव की पूर्व संध्या पर लाया जाने वाला 12 साल पुराना मामला इस बात का बहुत बड़ा उदाहरण है कि भारत सरकार कैसे काम कर रही है और, निश्चित रूप से, वे इस तथ्य से भयभीत हैं कि वे फिर से जनादेश नहीं जीत पाएंगे जैसा कि उन्हें उम्मीद है।

पायलट ने कहा कि सभी 5 राज्यों में कांग्रेस बहुत अच्छा प्रदर्शन कर रही है और ये सभी डराने-धमकाने वाले हथकंडे काम नहीं करेंगे। मैं कहता रहता हूं कि हमें राहुल गांधी से प्रेरणा लेनी चाहिए, जिन्होंने इन सभी चुनौतियों का सामना किया है। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने राजस्थान में कथित परीक्षा पत्र लीक मामले की धन शोधन जांच के सिलसिले में बृहस्पतिवार को कांग्रेस की प्रदेश इकाई के अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा के जयपुर और सीकर में स्थित परिसरों पर छापे मारे तथा विदेशी मुद्रा उल्लंघन मामले में मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के बेटे को तलब किया है। आधिकारिक सूत्रों ने बताया कि पूर्व स्कूली शिक्षा मंत्री डोटासरा के परिसरों के अलावा दौसा में महवा सीट से पार्टी के उम्मीदवार ओमप्रकाश हुड़ला तथा कुछ अन्य के परिसरों की तलाशी ली जा रही है।

विजय रथ पर सवार टीम इंडिया के खिलाड़ियों ने किया इकाना स्टेडियम में अभ्यास

एजेंसी

लखनऊ। विश्वकप में लगातार पांच मुकाबले जीतकर अंक तालिका में शीर्ष पर काबिज टीम इंडिया की अगली चुनौती मौजूदा विश्वविजेता इंग्लैंड टीम होगी। अटल बिहारी वाजपेयी इकाना स्टेडियम में 29 अक्तूबर को होने वाले इस मुकाबले में जहां टीम इंडिया इस मुकाबले को जीतकर सेमीफाइनल का टिकट पक्का करना चाहेगी, वहीं दूसरी ओर संघर्ष कर रही इंग्लैंड टीम के आगे यह मुकाबला जीतकर विश्वकप में अपनी संभावनाओं को बनाए रखने का लक्ष्य होगा। मुकाबले के लिए इंग्लैंड टीम के खिलाड़ी शुक्रवार दोपहर लखनऊ आ जाएगी।

मुकाबले के लिए बुधवार रात लखनऊ पहुंचने वाली भारतीय टीम ने बृहस्पतिवार को इकाना स्टेडियम पहुंची। टीम ने अपने अभ्यास सत्र की शुरुआत खिलाड़ियों ने मुख्य स्टेडियम में फुटबॉल खेलकर की। मैच के दौरान जहां रोहित, कोहली और अश्विन जैसे सीनियर खिलाड़ी एक टीम में दिखे तो वहीं दूसरी ओर केएल राहुल और शुभमन गिल ने दूसरी टीम से जोर आजमाइश की।

इस दौरान तेज गेंदबाज बूमराह क्षेत्ररक्षण करते देखे गए। मुकाबले तैयारी की अगली कड़ी में खिलाड़ियों ने क्षेत्ररक्षण का अभ्यास किया। करीब 45 मिनट के अभ्यास के बाद टीम के खिलाड़ियों ने बी ग्राउंड का रुख किया, जहां खिलाड़ियों ने बल्लेबाजी और गेंदबाजी में अपनी तैयारियों को अंतिम रूप दिया। इस दौरान कई स्थानीय क्रिकेटर भी नेट्स से जुड़े, जिन्होंने कोहली, रोहित, राहुल को देर तक बल्लेबाजी का अभ्यास कराया।

टीम इंडिया ने अभी तक इकाना स्टेडियम में दो टी-20 और एक वनडे मैच खेले हैं। वेस्टइंडीज और श्रीलंका के खिलाफ जहां भारतीय टीम ने शानदार जीत दर्ज की, वहीं वनडे में शिखर धवन वाली अगुवाई वाली टीम को दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ नौ रन से हार का सामना करना पड़ा था। ऐसे में मेजबान टीम इकाना स्टेडियम में पहला वनडे जीतने का लक्ष्य लेकर उतरेगी।

29 अक्तूबर को इकाना स्टेडियम में होना वाला यह मैच लाल मिट्टी वाली पिच पर खेला जा सकता है। ऐसे में टीम प्रबंधन एक तेज गेंदबाज को कम करके अनुभवी ऑफ स्पिनर रविचंद्रन अश्विन को मौका दे सकता है। इससे टीम का स्पिन डिपार्टमेंट मजबूत होगा। जहां तक शार्दुल ठाकुर का सवाल है तो उन्हें घर्मशाला वाले मैच की तरह बेंच पर ही बैठना पड़ सकता है, क्योंकि न्यूजीलैंड के खिलाफ हुए इस मुकाबले की भांति टीम प्रबंधन पांच विशेषज्ञ गेंदबाजों को लेकर लखनऊ में उतर सकता है।

विश्वकप के अभी तक हुए तीन मुकाबलों की बात की जाए तो इकाना स्टेडियम में अभी तक बल्लेबाजों को खासी मदद मिली है। चूंकि देर शाम मौसम में ठंड हो गई है। ऐसे में ओस का असर मुकाबले में पड़ सकता है। हालांकि ओस के बावजूद लक्ष्य का पीछा करने वाली टीम के लिए जीत की संभावना ज्यादा होगी।

रक्षा मंत्रालय की याचिका खारिज

सेना प्रतिष्ठानों के पास भवन निर्माण को ध्वस्त करने से जुड़ा मामला

एजेंसी

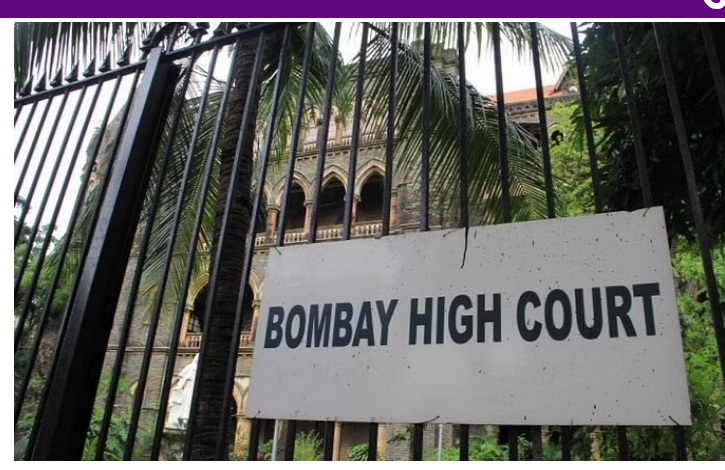

मुंबई। हाईकोर्ट ने आदेश में कहा, पुणे में भवन निर्माण की अनुमति रक्षा मंत्रालय द्वारा परिपत्र जारी होने से पहले 2008 में दी गई थी। परिपत्र केवल दिशानिर्देशों की प्रकृति में था, किसी भी चल रहे निर्माण पर रोक लगाने की मांग का अधिकार नहीं।

बॉम्बे हाईकोर्ट ने मामले की सुनवाई करते हुए कहा, आदर्श हाउसिंग घोटाले के बाद केंद्रीय रक्षा मंत्रालय द्वारा सेना प्रतिष्ठानों के आसपास निर्माण के लिए एनओसी जारी करने पर जारी एक परिपत्र केवल दिशानिर्देशों की प्रकृति में था और निर्माण पर रोक लगाने का कोई अधिकार नहीं देता है। न्यायमूर्ति एस बी शुक्रे और न्यायमूर्ति एम डब्ल्यू चंदवानी की खंडपीठ ने 23 अक्तूबर के अपने फैसले में मंत्रालय द्वारा दायर एक याचिका को खारिज कर दिया, जिसमें एक वाणिज्यिक गगनचुंबी इमारत, गंगा ट्रूनो को ध्वस्त करने की मांग की गई थी, जिसके बारे में उनका दावा है कि यह दक्षिणी कमान कंपोजिट सिग्नल रेजिमेंट की इकाई के पास थी। यह आदेश गुरुवार को उपलब्ध कराया गया। मंत्रालय ने मई 2011 में जारी एक परिपत्र पर भरोसा किया जिसमें सेना प्रतिष्ठानों के पास भवन निर्माण के लिए अनापत्ति प्रमाणपत्र (एनओसी) जारी करने के लिए दिशानिर्देश शामिल थे। सर्कुलर में आदर्श हाउसिंग सोसायटी घोटाले के बाद उपजे विवादों के बाद रक्षा प्रतिष्ठानों से सटी जमीन पर निर्माण के लिए एनओसी का मुद्दा उठाया गया है। उच्च न्यायालय ने अपने आदेश में कहा कि वर्तमान मामले में पुणे में भवन निर्माण की अनुमति रक्षा मंत्रालय द्वारा परिपत्र जारी होने से बहुत पहले 2008 में दी गई थी। पीठ ने कहा कि रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी परिपत्र केवल दिशानिर्देशों की प्रकृति में था और किसी भी चल रहे निर्माण और किसी भी इमारत के विध्वंस पर रोक लगाने की मांग करने का उसे कोई अधिकार नहीं मिलेगा। वर्तमान मामले में हमने पाया है कि रक्षा मंत्रालय के परिपत्र कार्यकारी निर्देशों की प्रकृति में भी नहीं हैं। बल्कि, वे केवल विभाग के अधिकारियों पर बाध्यकारी विभागीय परिपत्रों की श्रेणी में आते हैं। दक्षिण मुंबई के कोलाबा में सैन्य स्टेशन के आसपास बनी 31 मंजिला आदर्श हाउसिंग सोसाइटी अपने निर्माण के लिए अपेक्षित अनुमति नहीं होने के कारण जांच के दायरे में आ गई थी। रक्षा मंत्रालय ने कहा था कि आलीशान सोसाइटी सुरक्षा के लिए खतरा है क्योंकि यह सेना के महत्वपूर्ण प्रतिष्ठानों की अनदेखी करती है। अदालत ने कहा कि सर्कुलर के मुताबिक, आर्मी स्टेशन कमांडर को किसी भी निर्माण के बारे में अपनी आपत्तियों या विचारों को राज्य सरकार की एजेंसियों या नगरपालिका अधिकारियों को बताना होगा, न कि बिल्डरों या निजी पार्टियों को। इसमें कहा गया है कि सर्कुलर में यह नहीं कहा गया है कि निर्माण करने वाले भूमि मालिक को कोई एनओसी प्राप्त की जानी चाहिए। पीठ ने याचिका खारिज कर दी और संबंधित स्थानीय प्राधिकारी को आठ सप्ताह के भीतर इमारत को अधिभोग प्रमाणपत्र जारी करने का निर्देश दिया।

हिंसा के खतरे के कारण 31 तक इंटरनेट बैन

शिक्षा मंत्री बोले, 15,641 बच्चों का स्कूल में दोबारा दाखिला

एजेंसी

इंफाल। मणिपुर के चुराचांदपुर और कुछ अन्य पहाड़ी जिलों में भड़की हिंसा के कारण बच्चों पर काफी बुरा असर पड़ा है। करीब छह महीने पहले शुरू हुई हिंसा में मैतेई और कुकी समुदाय के लोगों का संघर्ष हुआ। नाजुक हालात के कारण लोगों को अपने घर छोड़ने पड़े। हजारों बच्चों की पढ़ाई छूट गई। ताजा घटनाक्रम में हालात पहले से बेहतर होने का दावा कर रही मणिपुर सरकार में शिक्षा मंत्री ने कहा कि 15,641 बच्चों को पास के स्कूलों में फिर से भर्ती कराया गया है।

15 हजार से अधिक बच्चों का दोबारा दाखिला

मणिपुर के शिक्षा मंत्री थौनाओजम बसंतकुमार सिंह ने गुरुवार को कहा कि 347 राहत शिविरों में 15,915 छात्रों ने शरण ली थी। इनमें से 15,641 को पास के स्कूलों में दोबारा प्रवेश दिया गया है। थौनाओजम ने कहा कि जब 3 मई को राज्य में हिंसा भड़की, तो स्कूल गर्मी की छुट्टियों के लिए बंद थे। बिगड़ती कानून व्यवस्था की स्थिति के कारण स्कूलों की छुट्टियों को बढ़ा दिया गया था। उन्होंने कहा, हालात सामान्य होने पर ÷कक्षा एक से 8वीं तक क्लास 5 जुलाई से फिर से खुल गई। उच्च कक्षाएं 10 अगस्त से शुरू हुईं।

केवल 26 स्कूल बंद हैं, 77 फीसदी अटेंडेंस

शिक्षा मंत्री के अनुसार 23 अक्टूबर को स्कूलों में उपस्थिति 77 प्रतिशत थी। उन्होंने कहा, ÷कुल मिलाकर, चुराचांदपुर में 18 और इंफाल पूर्व और जिरीबाम जिलों में 26 स्कूलों को फिर से खोला जाना बाकी है। इनका उपयोग राहत शिविरों के रूप में या केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों के कर्मियों के लिए किया जा रहा था।÷

दोबारा सर्टिफिकेट के लिए सरकारी मदद

विस्थापित छात्रों के कल्याण के लिए उठाए जा रहे कदमों पर, थौनाओजम ने कहा, ÷छात्रों को पास के स्कूलों में मुफ्त में प्रवेश दिया गया है। मुफ्त प्रवेश सुनिश्चित करने और पाठ्यपुस्तकें, नोटबुक, स्टेशनरी आइटम और यूनिफॉर्म के लिए स्कूल शिक्षा विभाग से नोडल अधिकारी नियुक्त किए गए हैं।÷ उन्होंने कहा कि विस्थापित छात्रों को पहचान पत्र जारी किए गए हैं और मणिपुर माध्यमिक शिक्षा बोर्ड और उच्चतर माध्यमिक शिक्षा परिषद मणिपुर दोनों हिंसा के दौरान नष्ट हुए दस्तावेजों और प्रमाणपत्रों को दोबारा प्राप्त करने में समन्वय कर रहे हैं।

छात्रों को मुफ्त ई-लर्निंग सामग्री

शिक्षा मंत्री थौनाओजम ने कहा, ÷100 प्रतिशत पाठ्यक्रम को पूरा करने के लिए शीतकालीन छुट्टियों में कटौती की जाएगी। शनिवार को पूरे दिन की कक्षाएं होंगी। इस संबंध में जल्द ही एक नया आदेश जारी किया जाएगा।÷ उन्होंने बताया कि जियो टीवी पर ÷लैरिक÷ नामक एक समर्पित शैक्षिक टीवी चैनल छात्रों को मुफ्त ई-लर्निंग सामग्री प्रदान कर रहा है।

कॉलेज छात्र पुनर्वास योजना 2023

उन्होंने मुख्यमंत्री एन बीरेन सिंह की सरकार की तरफ से की गई पहल के बारे में कहा कि मुख्यमंत्री कॉलेज छात्र पुनर्वास योजना 2023 शुरू की गई है जिसके तहत मुफ्त प्रवेश प्रदान किया जाएगा। शिक्षा मंत्री थौनाओजम ने कहा कि सरकार जल्द ही मोबाइल इंटरनेट सेवाएं बहाल करने पर गंभीरता से विचार कर रही है। उन्होंने कहा, ÷सरकार एक दो दिनों के भीतर मोबाइल इंटरनेट सेवाएं बहाल करने की इच्छुक है। सुरक्षा एजेंसियों से भी इनपुट लिया गया है।÷

31 अक्तूबर तक बढ़ाई गई इंटरनेट पर पाबंदी

हालांकि, गुरुवार देर शाम आई रिपोर्ट के अनुसार सरकार ने इंटरनेट पर पाबंदियों को बढ़ाने का फैसला लिया है। अधिकारियों ने गुरुवार को कहा कि मणिपुर सरकार ने मोबाइल इंटरनेट प्रतिबंध को अगले पांच दिनों के लिए- 31 अक्तूबर तक बढ़ा दिया है।

एन.बीरेन सिंह ने क्या कहा?

गौरतलब है कि मुख्यमंत्री एन बीरेन सिंह ने बमुश्किल एक हफ्ते पहले कहा था कि सरकार अगले कुछ दिनों में प्रतिबंध वापस ले लेगी। सरकारी अधिसूचना के अनुसार, ÷इस आशंका के बाद प्रतिबंध बढ़ा दिया गया था कि कुछ असामाजिक तत्व जनता की भावनाओं को भड़काने वाली तस्वीरें, नफरत भरे भाषण और नफरत भरे वीडियो प्रसारित करने के

मेरी माटी-मेरा देश कार्यक्रम के अन्तर्गत जनपद मुख्यालय पर अमृत कलश यात्रा का हुआ भव्य आयोजन

❖ 'मा0 राज्यमंत्री खाद्य एवं रसद विभाग श्री सतीश चंद्र शर्मा, मा0 सांसद उपेंद्र सिंह रावत, जिलाधिकारी श्री सत्येन्द्र कुमार द्वारा अमृत कलश यात्रा का स्वागत करते हुए जनपदवासियों के प्रति जताया आभार।'

द अचीवर टाइम्स अनुराग मल्होत्रा

बाराबंकी । ''मेरी माटी-मेरा देश'' कार्यक्रम के अन्तर्गत मिट्टी को नमन, वीरों एवं वीरांगनाओ का वन्दन एवं सम्मान देने के लिए जनपद के सभी विकास खण्डों, नगर पालिका एवं नगर पंचायतों से 'अमृत कलश' देश प्रेम की भावना के साथ भारत माता की जय एवं हाथों में तिरंगा लहराते हुए गाजे-बाजे के साथ के डी सिंह बाबू स्टेडियम में आयोजित जनपद स्तरीय भव्य कार्यक्रम में लाया गया। मेरी माटी-मेरा देश अभियान के तहत देश के वीर, वीरंगनाओ एवं अमर वीर बलिदानियों की स्मृति में कार्यक्रम आयोजित किया गया है। केडी सिंह बाबू स्टेडियम में आयोजित आकर्षक कार्यक्रम में जनपद के समस्त विकास खण्ड, नगर पालिका, नगर पंचायत से मिट्टी एवं अक्षत से भरा अमृत कलश यात्रा कार्यक्रम आयोजित किया गया। समस्त विकास खण्डों, नगर पालिका एवं नगर पंचायतों से लाये गये अमृत कलश को जनपद से अमृत कलश पूरे सम्मान के साथ पहुँचाया जाएगा। जनपद स्तर पर आयोजित मेरी माटी-मेरा देश कार्यक्रम में राज्यमंत्री, सांसद, जिलाधिकारी की गरिमामयी उपस्थिति सहित सम्मानित जन प्रतिनिधिगण द्वारा प्रतिभाग किया गया। कार्यक्रम का भव्य शुभारम्भ राज्यमंत्री, सांसद, जिलाधिकारी द्वारा दीप प्रज्जवलित कर किया गया। इस अवसर पर मा0राज्यमंत्री सतीश चन्द्र शर्मा ने सभी सम्मानित जन का स्वागत करते हुए अपने सम्बोधन में कहा कि हम सभी के लिए यह गर्व का क्षण है कि जिस मिट्टी में पले, बढ़े हमारे वीर सपूतों, अमर शहीदों ने भारत माता की रक्षा के लिए खुद को देश पर न्यौछावर किया है, उसी गॉव एवं घर की मिट्टी एवं अक्षत को हम सब प्रधानमंत्री की प्रेरणा से हम सबकों यह कार्य करने का अवसर मिला है। उन्होंने कहा कि देश की माटी एवं वीरों का वन्दन करने का यह अभियान हम सभी के अन्दर देश के प्रति सम्मान, स्वाभिमान एवं अमर वीर बलिदानियों के प्रति सच्ची श्रद्धांजली का जज्बा पैदा करता है। मा0 सांसद श्री उपेन्द्र सिंह रावत ने जनपद के सभी विकास खण्डों, नगर पालिका एवं नगर पंचायत से आये हुए सम्मानित जनपदवासियों एवं जन प्रतिनिधियों को हार्दिक स्वागत एवं आभार व्यक्त करते हुए कहा कि''मेरी माटी-मेरा देश'' अभियान के तहत अमृत कलश यात्रा का यह आयोजन सम्पूर्ण जनपदवासियों, मिट्टी को नमन, वीरों का वन्दन एवं देश भक्ति की भावना के साथ भारत माता एवं देश का सिर ऊँचा रखने वाले वीर क्रान्तिकारियों, अमर शहीदों एवं वीरांगनाओं के प्रति हार्दिक श्रद्धांजली तथा उनके बलिदानों को याद करने का पवित्र मिशन है।

यूपी में पेड़ से बांधकर महिला की पिटाई, दबंगों ने घर में घुसकर पीटा और खुद बनाई वीडियो

द अचीवर टाइम्स सुधांशु अवस्थी

सीतापुर। घर में घुसकर दबंगों ने पेड़ से बांधकर एक महिला को पीटा। इस पिटाई का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया। दबंगों का महिला को पीटने का वीडियो वायरल होते ही हड़कंप मच गया। सीतापुर में एक घर में घुसकर दबंगों ने पेड़ से बांधकर महिला को पीटा। महिला को पीटते हुए दबंगों ने खुद उसकी पिटाई का वीडियो भी बनाया। अब पेड़ से बांधकर महिला की पिटाई का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। जानकारी के मुताबिक मामला सीतापुर के रामकोट थाना इलाके के नवीन चौक का बताया जा रहा है। वीडियो में दिख रही महिला की पिटाई के पीछे जमीनी विवाद बताया जा रहा है। कि ये जमीनी विवाद का मामला न्यायालय में विचाराधीन है। इस विवाद में एक पक्ष के दबंगों ने दूसरे पक्ष के घर में घुसकर महिला को पेड़ से बांधा और पीटा। इसका जो वीडियो वायरल हो रहा है उसमें दिख रहा है कि कैसे महिलाएं मिलकर एक महिला को पीट रही हैं और उसे पेड़ से बांध रही हैं। वीडियो रिकॉर्ड करने वालों की भी जानकारी नहीं मिली है। वीडियो पड़ोस के किसी घर से बनाया गया है। वीडियो में ये भी दिख रहा है कि महिला को पीटते हुए दबंग खुद भी हाथमोबाइल लिए वीडियो रिकॉर्ड कर रहे हैं। सोशल मीडिया पर वीडियो वायरल होने के बाद पुलिस तक भी इसकी जानकारी पहुंची। पुलिस का कहना है कि मामले में जांच की जा रही है। हालांकि पुलिस को अभी इस मामले में तहरीर नहीं मिलने की बात कही जा रही है। पुलिस ने कहा कि वीडियो की पुष्टि की जा रही है और आरोपियों की पहचान कर जल्द कड़ी कार्रवाई की जाएगी। पुलिस वीडियो रिकॉर्ड करने वालों की भी जानकारी निकालकर मामले में पूछताछ में जुटी है।

उत्तर प्रदेश पुलिस विभाग की जमीन पर हुए अवैध कब्जा को आलाधिकारियों ने लिया संज्ञान

- पुलिस की भूमिका की एसीपी मलिहाबाद कर रहे जांच।
- तत्कालीन प्रभारी निरीक्षक पर हो चुकी है कार्यवाही।
- चौकी प्रभारी सहित कई पुलिसकर्मी कार्यवाही के घेरे में।
- जमीन की रखवाली के लिए लगाई गई पिकेट ड्यूटी।

द अचीवर टाइम्स, दीपक कनौजिया

लखनऊ। राजधानी की सरोजनीनगर तहसील के अंतर्गत काकोरी थाना क्षेत्र की ग्राम पंचायत शिवरी के पानखेड़ा गाँव और ग्राम पंचायत कूड़ा ईटगाँव में उत्तर प्रदेश पुलिस विभाग की जमीन स्थित है।जिसका क्षेत्र फल 34 बीघा से अधिक है।राजस्व विभाग के अभिलेखों में उक्त जमीन उत्तर प्रदेश विभाग के नाम दर्ज है।जिस पर एक साइनबोर्ड लगा था और बने एक कमरे की दीवारों पर %पुलिस सहायता केंद्र थाना काकोरी एवं यह जमीन पुलिस विभाग की है% लिखा हुआ था।कब्जा करने वाले उद्योगपति ने पुलिस का बोर्ड उखाड़ कर गायब कर दिया और कमरे की दीवारों से पुलिस द्वारा लिखवाया गया व संकेत मिटाकर अपनी कम्पनी के बोर्ड लगा दिए थे।साथ ही उक्त पूरी जमीन पर रेडीमेड बाउंड्रीवाल भी अगस्त माह में बनवाई थी।सूत्रों का कहना है कि घुरघुरी का तालाब पुलिस चौकी पर तैनात कार्यखास सिपाही व दो अन्य पुलिसकर्मियों का निर्माणकर्ता को पूरा संरक्षण दे रहे थे।जिसकी जानकारी एडीसीपी पश्चिमी चिरंजीवनाथ सिन्हा को हुई।तो उन्होंने काकोरी पुलिस को तत्काल प्रोटोकाल ने जमीन का स्थलीय निरीक्षण किया था।जिसके पश्चात तत्कालीन कोतवाली प्रभारी/अतिरिक्त निरीक्षक राजवीर सिंह को लाइन हाजिर करने के साथ ही मामले की जांच सहायक पुलिस आयुक्त मलिहाबाद को सौंपी गई है।एसीपी मलिहाबाद की जाँच रिपोर्ट आने के बाद चौकी प्रभारी सहित कार्यखास सिपाही पर भी कार्यवाही हो सकती है।गुरुवार को डीसीपी पश्चिमी राहुल राज ने दोपहर बाद जमीन का औचक निरीक्षण कर जरूरी दिशानिर्देश सम्बन्धितों को दिए। जानकारी के अनुसार काकोरी के शिवरी ग्राम पंचायत के पानखेड़ा व कुछ जमीन कूड़ा ईटगाँव में कूड़ा प्लांट के पास उत्तर प्रदेश पुलिस विभाग की 34 बीघा जमीन है।जिसके खसरा संख्या क्रमशः117 मि.क्षेतफल 0.3870,1176मि.क्षेत्रफल 0.1540,1300मि.क्षेतफल1.265 0,1299मि.क्षेतफल0.0250,130 0मि.क्षेतफल2.1620,1301मि.क्षे तफल3.0420,1363स क्षेतफल1.4550,1364स क्षेतफल 0.0100 है।कुल क्षेतफल 8.5000 है।जोकि की राजस्व अभिलेखों में उत्तर प्रदेश पुलिस विभाग के नाम दर्ज हैं।बताया जाता है कि एक उद्योगपती ने इसी वर्ष अगस्त महीने में जमीन के एक खसरा नम्बर पर पुलिस का लिखा हुआ एवं पुलिस के लोगो को मिटा कर रेडीमेड बाउंड्रीवाल करा रहा था।जिस पर मनाली पिगमेंट्स प्राइवेट लिमिटेड की नाम की कम्पनी के जगह-जगह पर बैनर लगाये गयें थे।क्षेत्रीय लेखपाल ने पुलिस को बताया था कि बिना अंस निर्धारण के यह निर्माण किया जा रहा है जोकि पूरी तरह से अवैध है।जबकि उक्त जमीन पुलिस के अधिकार में हैं।डीसीपी पश्चिमी राहुल राज के औचक निरीक्षण के समय एडीसीपी पश्चिमी चिरंजीव नाथ सिन्हा,एसीपी काकोरी अनूप कुमार सिंह,प्रभारी निरीक्षक काकोरी प्रवीण कुमार सिंह सहित अन्य पुलिसकर्मी मौजूद रहे।

एक नज़र

आसीवान थाना क्षेत्र के अंतर्गत अलग-अलग जगह हुई मार्ग दुर्घटना में दो लोग घायल

द अचीवर टाइम्स कुन्दन सिंह

मियाँगंज उन्नाव। आसीवन थाना क्षेत्र के गांव शाहपुर सिंधौरा निवासी नेकराम की 15 वर्ष की बेटी पुष्पा जो कक्षा 10 की छात्रा है साइकिल से विद्यालय से वापस घर लौट रही थी तभी अज्ञात वाहन ने उसकी साइकिल में जोरदार टक्कर मार दी जिससे किशोरी घायल होगी एक्सीडेंट की सूचना पर गांव निवासी टूड्डी पुत्र छोटेलाल उम्र 40 वर्ष पुष्पा को देख अस्पताल से वापस घर लौट रहा था तभी मियाँगंज सफीपुर मार्ग पर गांव मोहलिया के मोड पर बाइक अनियंत्रित होकर पलट गई जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया सूचना पर पहुंची पुलिस ने घायल युवक को मियाँगंज सीएचसी में भर्ती कराया जहां प्राथमिक उपचार के बाद चिकित्सक ने हालत नाजुक देख जिला अस्पताल रेफर कर दिया है।

रामलीला महोत्सव एवं मेले का भव्य आयोजन

द अचीवर टाइम्स दीपक कुमार कनौजिया

लखनऊ। नगर पंचायत काकोरी में मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम जी की लीलाओं का मंचन पिछले वर्ष की भांति इस वर्ष भी वृंदावन के कलाकारों द्वारा गोस्वामी तुलसीदास कृत श्री रामचरितमानस के आधार पर भगवान श्री राम जी की लीलाओं का मंचन श्री शीतला देवी मंदिर वनखंडेश्वर तीर्थ के प्रांगण में भव्यता के साथ मनाया जा रहा है जिसका प्रारंभ 27 अक्टूबर को श्री गणेश पूजन नारद मोह राम जन्म बालचरित्र से प्रारंभ होकर 4 नवंबर को श्री राम राज्याभिषेक तक भगवान श्री राम के चरित्र को चरितार्थ किया जाएगा इस कार्यक्रम को हिंदू जन सेवा समिति के द्वारा आयोजित किया जा रहा है।

आवासीय प्लाटिंग के नाम पर भूमाफिया डाल रहे हैं सरकारी जमीन पर डाका ।

द अचीवर टाइम्स दीपक कुमार कनौजिया

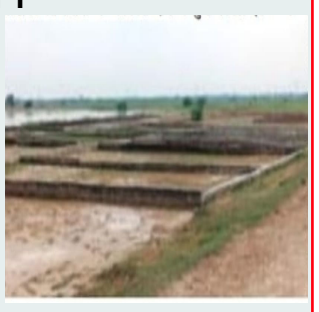

लखनऊ। राजधानी के काकोरी क्षेत्र में कुछ रियल स्टेट के कारोबारी अपने हेरा फेरी के पैमाने से बाज नहीं आ रहे हैं भू संपत्ति के लालच में अपने ग्राहकों के साथ ठगी करने की योजना बना रहे काकोरी विकासखंड में प्लाटिंग कारोबारी आलम या है की तहसील सदर के अंतर्गत गहलवारा व रेवरी में दस्तावेज तैयार कर पट्टे की जमीन बेचकर सरकारी जमीन भी भू माफियाओं ने बेच डाली इतना ही नहीं बाकायदा कब्जा करने के बाद सरकारी जमीन हथियाने के सुनियोजित ढंग से अपनाते है रियल एस्टेट कंपनी के नाम पर लगाया जा रहा है सरकार को चुना बेस कीमती जमीन को भी नहीं छोड़ रहे हैं भूमिया कारोबारों को तरह तरह के फंडा अपना कर लूटा जा रहा है भोले भाले ग्राहकों को।

पीईटी परीक्षा के लिए कंट्रोल रूम स्थापित

द अचीवर टाइम्स देवराज

रायबरेली । उत्तर प्रदेश अधीनस्थ चयन सेवा आयोग, लखनक के माध्यम से प्रारम्भिक अर्हता परीक्षा (PET) की लिखित परीक्षा दिनांक 26 एवं 29 अक्टूबर 2023 (शनिवार एवं रविवार) को 04 पालियों (प्रत्येक दिवस दो पाली) प्रथम पाली पूर्वान्ह 10.00 बजे से 12.00 बजे तक व द्वितीय पाली अपरान्ह 03.00 बजे से 05.00 बजे तक जनपद के 28 परीक्षा केन्द्रों आयोजित होगी। परीक्षा का सफल आयोजन, कानून एवं शान्ति व्यवस्था बनाये रखने एवं सूचनाओं के आदान-प्रदान व अन्य आवश्यक व्यवस्थाओं हेतु दिनांक 28 अक्टूबर प्रातः 05:00 बजे से सम्बन्धित कार्यवाही समाप्त होने तक जनपद स्तर पर कन्ट्रोल रूम नं0 9454418979 स्थापित करते हुए कई अधिकारियों की तैनाती की गयी है। जिनमें डा0 रजनीश प्रकाश तिवारी, प्रधानाचार्य,राजकीय इण्टर कालेज मो0 नं0- 9415742693, सुरेश कुमार मिश्रा, प्रधानाचार्य, राजकीय इण्टर कालेज हलोर, मो0नं0 9415054521,डा0 विनोद कुमार त्रिपाठी, प्रधानाध्यापक राजकीय हाईस्कूल परिचमगांव मो0 नं0 -9621373372 शामिल है। इंट्रीग्रेटेड कमाण्ड एण्ड कन्ट्रोल केन्द्र, कलेक्ट्रेट में दिनांक 28 अक्टूबर को 05.00 बजे सांय परीक्षा के सील्ड बक्स जमा होने तक व दिनांक 29 अक्टूबर को प्रातः 05.00 बजे तक परीक्षा के सील्ड बाक्स जमा होने तक तैनात कन्ट्रोल रूम के प्रधानाध्यापकों को निर्देशित किया गया है कि वह समय से पूर्व तैनाती स्थल पर पहुंचकर अनवरत प्राप्त सूचनाओं / समस्याओं को एक रजिस्टर में अंकित कर निराकरण करायेंगे। ये लोग अपरिहार्य स्थिति की सूचना तत्काल अपर जिलामजिस्ट्रेट प्रशासन के मो0 945446625,नगर मजिस्ट्रेट के मो0नं0 945441662,अपर पुलिस अधीक्षक के मो0 9454401108 न्याय सहायक प्रथम मो0नं0-7068225254 पर अवगत करायेंगे।

नाबालिग लड़की से छेड़छाड़ करने वाला गिरफ्तार

द अचीवर टाइम्स

लखनऊ। उत्तरी क्षेत्र में थाना अलीगंज पुलिस ने नाबालिग लड़की से छेड़छाड़ करना व पीछा करने वाला एक शातिर आरोपी गिरफ्तार, वादी द्वारा लिखित तहरीर दी गई, कि मेरी लड़की से छेड़छाड़ करना, व पीछा करना मना करने पर गाली गलोज करना,व जान से मारने की धमकी देना, मुखबिर की सूचना पर, यादव होटल बांधा रोड मोड़ अलीगंज से, आरोपी सैय्यद सिजान अब्बास उर्फ गयूर अब्बास,नि0456,294, सज्जाद बाग कॉलोनी थाना ठाकुरगंज लखनऊ, गिरफ्तार कर सफलता प्राप्त की, ज्ञातव है कि जब से वरिष्ठ अधिकारियों ने अपराधीयों के धर पकड़ में अभियान चलाया है, तब से स्थानीय पुलिस भी सक्रिय दिख रही है। और लगातार अपराधियों को पकड़ने में कामयाबी हासिल कर रही है। मालूम हो कि इसी क्रम में डीसीपी, दिशा-निर्देश पर गठित की कई टीमें लगातार अपराधियों को धर पकड़ कर रही है। जिसमें आज थाना अलीगंज प्रभारी निरीक्षक नागेश उपाध्याय, के नेतृत्व में पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर सफलता प्राप्त की, मा0 न्यायालय में पेश किया जा रहा है।

डेंगू ,मलेरिया, टाइफाइड ,वायरल फीवर महामारी से बचाव के लिए लगवाया निःशुल्क जन हितकारी कैम्प

- हसनगंज की ग्राम पंचायत मटरिया के चौमुखी विकास के लिए लगातार प्रयासरत -ग्राम प्रधान अभिषेक कुमार।

द अचीवर टाइमस महेन्द्र कुमार

हसनगंज उन्नाव। हसनगंज विकासखण्ड की ग्राम पंचायत मटरिया ग्राम प्रधान के द्वारा डेंगू ,मलेरिया, टाइफाइड, वायरल फीवर, चिकनगुनिया जागरूकता अभियान के तहत लगवाया गया जनहित कल्याणकारी निःशुल्क कैम्प। ग्राम प्रधान के द्वारा मिली जानकारी के अनुसार विकासखण्ड हसनगंज की ग्राम पंचायत मटरिया में लगवाया गया टाइफाइड, चिकनगुनिया, वायरल फीवर जागरूकता अभियान कार्यक्रम बताते चले कि वैशिक महामारी के बाद डेंगू टाइफाइड ,चिकनगुनिया ,वायरल फीवर इन दोनों ग्रामीण क्षेत्र में पैर पसारना शुरू किया है इसके चलते ग्राम प्रधान ने एक पहल शुरू की वर्तमान समय में फैल रही वायरल फीवर को देखते हुए क्षेत्र के गरीब असहाय लोगों को उनके स्वास्थ्य को देखते हुए ग्राम पंचायत में आंगनबाड़ी केंद्र पर ग्राम प्रधान अभिषेक के द्वारा निःशुल्क चिकित्सा शिविर कैंप लगवाया गया जिसमें सभी प्रकार की निःशुल्क जांच व दवाईयां वितरित की गई ग्राम पंचायत के सैकड़ो लोगों को इसका लाभ मिला ग्राम प्रधान ने कहा ग्राम पंचायत मटरिया के चौमुखी विकास के लिए लगातार प्रयासरत रहूंगा कहा हमारा प्रयास ग्राम पंचायत मटरिया का बेहतर विकास हो इसके लिए ग्राम वासियों ने ग्राम प्रधान का तहे दिल से आभार व्यक्त किया कहा ऐसी जानकारियां ग्राम वासियों को अब तक उपलब्ध नहीं हो सकी जो वर्तमान ग्राम प्रधान के द्वारा मिली हैं।

अच्छे कार्य के चलते बने पांच दरोगा।

द अचीवर टाइम्स महेन्द्र कुमार

लखनऊ। हसनगंज कोतवाली में दरोगा बनने पर हर्षोउल्लास मनाया गया दौड़ी कोतवाली में खुशी की लहर कोतवाली प्रभारी राजेश्वर त्रिपाठी व हसनगंज क्षेत्रधिकारी संतोष सिंह ने अपने शुभ हाथों से कौशल कार्य शैली को देखते हुए कोतवाली में कार्यरत सम्मानित दरोगा रैंक बैच (स्टार) लगाकर सभी का मुंह मीठा कराया जिससे कोतवाली क्षेत्र में खुशी की लहर दौड़ गई जिसमें सम्मानित रामकरण सिंह यादव , कृष्ण मोहन मिश्रा , प्रभात मिश्रा ,अखिलेश मिश्रा , विजय सिंह पटेल कोतवाली क्षेत्र वासियों ने तथा पत्रकार बंधुओ ने अपेक्षित शुभकामनाएं प्रेषित की और आने वाले समय के लिए क्षेत्र वासियों के को विश्वास दिलाया कि पुलिस विभाग आपकी सेवा में सदैव तत्पर है समाज में हो रही बुराइयों के लिए पुलिस बल हमेशा रोकथाम के लिए आपके साथ खड़ी है।

लोक बंधु अस्पताल में भी लेप्रोस्कोपिक सर्जरी शुरू

दो मरीज के किये सफल ऑपरेशन

द अचीवर टाइम्स रघुनाथ सिंह

लखनऊ । कानपुर रोड स्थित लोक बंधु अस्पताल में लेप्रोस्कोपिक सर्जरी शुरू हो गई है। डॉक्टरों ने गुरुवार को मरीज 35 वर्षीय हेमलता और 31 वर्षीय शिव सोनी के गॉल ब्लेडर की पथरी का सफल ऑपरेशन किया। दोनों मरीजों की सेहत में सुधार है। अस्पताल में लेप्रोस्कोपिक कोलीसिस्टेक्टोमी की सुविधा शुरू होने से मरीजों को बड़ी राहत मिली है। गॉल ब्लेडर की पथरी व हार्निया के मरीजों को दूसरे अस्पतालों के चक्कर नहीं लगाने पड़ेंगे। यह ऑपरेशन सर्जन डॉ. राजेश श्रीवास्तव, डॉ. राजेश, डॉ. सबी मज़हर और डॉ. अमित मिश्रा ने किया है। चिकित्सा अधीक्षक डॉ. अजय शंकर त्रिपाठी ने बताया कि अन्य मरीज़ की स्क्रीनिंग हो गई है। अगले हफ्ते इनके भी आपरेशन किये जाएगे। उन्होंने बताया कि कुछ दिन पहले अस्पताल में लेजर प्राक्टोलोजी से सात मरीज़ों के हेमरायड और फिस्टुला के सफल आपरेशन किये गए। अस्पताल के निदेशक डॉ. नीलाम्बर श्रीवास्तव ने डॉक्टरों की टीम को बधाई दी है। निदेशक ने बताया कि अस्साल में जल्द ही अपर जीआई इण्डोस्कोपी और यूरो सर्जरी की सुविधा शुरू की जाएगी।

मौंदा गांव में चल रही श्री रामलीला महोत्सव में प्रभु श्री राम का हुआ राजतिलक

द अचीवर टाइम्स दीपक कुमार कनौजिया

लखनऊ । काकोरी क्षेत्र के मौंदा गांव में चल रही श्री रामलीला महोत्सव के आखिरी दिन भरत मिलाप कर प्रभु श्री राम का राजतिलक करते हुए राज्याभिषेक किया गया। रामलीला समिति के द्वारा सभी लोगो ने तिलक लगाकर प्रभु श्री राम का राजतिलक किया। रामलीला समिति में धर्मेंद्र श्रीवास्तव अध्यक्ष, प्रेम गोपाल द्विवेदी मेला अध्यक्ष, जागेश्वर मेला मंत्री, मौंदा ग्राम प्रधान संगीता यादव, पुस्पेंद्र यादव, बिरपाल यादव विशेष सहयोगी राम लीला समिति सहित अनेकों लोग मौजूद रहे। रामलीला महोत्सव के दौरान मेला भी लगा हुआ था। जहां पर आने वाले ग्रामीणों ने अपने बच्चों के साथ जमकर खरीदारी किया। मेले में किसी भी तरह की कोई घटना ना घटित हो पाए इसके लिए समिति की तरफ से कुछ लोगों को देख रेख के लिए भी लगाया गया था। वही मौंदा गांव के ही एवं श्री रामलीला समिति के विशेष सहयोगी बीरपाल यादव ने बताया कि उनके गांव में हो रही रामलीला महोत्सव ने इस बार अपना 91वा वर्ष मनाया है। गांव में श्री रामलीला महोत्सव हर बार बहुत ही हर्षोल्लास के साथ मनाया जाती है, जहां पर हजारों की संख्या में लोग आते हैं, और मेले में अपने परिवार के साथ खरीदारी भी करते हैं।

पीजीआई में स्कल बेस सर्जरी सोसायटी ऑफ इंडिया का तीन दिवसीय सम्मेलन आज से

- दो मरीजों के ब्रेन ट्यूमर की सर्जरी का लाइव प्रसारण होगा।
- दिमाग में होने वाले कैंसर युक्त ट्यूमर के दोबारा होने की आशंका अधिक होती है।

द अचीवर टाइम्स रघुनाथ सिंह

लखनऊ। ऑपरेशन के बाद करीब 60 फीसदी मरीजों में ट्यूमर पांच साल के बाद व इससे पहले दोबारा से बन सकता है। ऐसे में मरीजों को ऑपरेशन के बाद भी डॉक्टर के संपर्क में रहना चाहिए। यह जानकारी पीजीआई में 27 अक्तूबर से शुरू हो रहे स्कल बेस सर्जरी सोसाइटी ऑफ इंडिया के वार्षिक सम्मेलन की पूर्व संध्या पर गुरुवार को आयोजित प्रेसवार्ता में न्यूरो सर्जरी विभाग के डॉ. अरुण कुमार श्रीवास्तव ने दी। आयोजक सचिव डॉ. अरुण श्रीवास्तव ने बताया कि जबकि कैंसर विहीन ट?यूमर 10 से 15 साल बाद हो सकता है, लेकिन यह छोटे आकार में होता है। शुक्रवार को दो ब्रेन ट्यूमर के ऑपरेशन का लाइव प्रसारण किया जाएगा। इसके बाद विशेषज्ञ न्यूरो सर्जन को केजीएमयू में कैडेवर पर ब्रेन ट्यूमर के ऑपरेशन का प्रशिक्षण दिया जाएगा। शनिवार और रविवार को सम्मेलन में देश और विदेश के करीब 400 न्यूरो सर्जन ब्रेन ट्यूमर के इलाज की आधुनिक तकनीक पर अनुभव साझा करेंगे।

देश में सिर्फ 60 डॉक्टर

पीजीआई के न्यूरो सर्जरी विभाग के प्रमुख डॉ. राज कुमार ने बताया कि दिमाग के करीब 25 फीसदी ट्यूमर स्कल बेस दिमाग के (निचले हिस्से) में होते हैं। यह ऑपरेशन बहुत जटिल होते हैं। इसके देश में सिर्फ 60 डॉक्टर हैं। सम्मेलन में देश के न्यूरो सर्जन को स्कल बेस सर्जरी सिखाने के लिए प्रशिक्षण और तकनीकी जानकारी दी जाएगी। डॉ. राजकुमार ने बताया कि ब्रेन ट्यूमर दिमाग के किसी भी हिस्से में हो सकता है। स्कल बेस सर्जरी के लिए विशेषज्ञों की टीम की जरूरत होती है। इसमें न्यूरो सर्जन के साथ न्यूरो ऑटोलॉजिस्ट, एनेस्थीसिया, प्लास्टिक सर्जन, रेडियोलाजिस्ट एवं रिहैबिलिटेशन विशेषज्ञों की जरूरत होती है। सम्मेलन में हाईकोर्ट की लखनऊ पीठ के न्यायमूर्ति राजीव सिंह, पीजीआई निदेशक डॉ. आरके धीमन समेत न्यूरो सर्जन हिस्सा लेंगे।

डिवाइडर से टकराकर एक युवक की मौत एक गंभीर रूप से घायल

द अचीवर टाइम्स देवराज

बछरावां रायबरेली। स्थानीय थाना क्षेत्र के अंतर्गत चुरूवा बाईपास पर मोटरसाइकिल सवाल डिवाइडर से भिड़े, एक युवक की मौके पर ही मौत दूसरा लड़ रहा है जिंदगी से जंग। पूरा मामला थाना क्षेत्र के अंतर्गत चुरूवा बाईपास का है, जहां पर भावा खेड़ा निगोहा निवासी सोनू पुत्र गया प्रसाद व उनके साडू लाल बहादुर पुत्र शीतला प्रसाद निवासी मीरखनगर किसी कार्य से निगोहा से बछरावा आ रहे थे, कि रास्ते में चुरूवा बाईपास के पास उनकी मोटरसाइकिल अनियंत्रित होकर डिवाइडर से टकरा गई। जिससे सोनू की मौके पर ही मौत हो गई। राहगीरो की सूचना पर पहुंची एंबुलेंस ने घायल व मृतक को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बछरावां पहुचाया, जहां पर डॉक्टरों द्वारा सोनू को मृतक घोषित कर दिया गया। वहीं उनके साडू लाल बहादुर का प्राथमिक उपचार करने के बाद डॉक्टरों ने उन्हे जिला अस्पताल के लिए रेफर कर दिया गया है।

धर्मपाल सिंह ने जिला कार्यालय का किया उद्घाटन

द अचीवर टाइम्स हिमांशु मिश्रा

लखनऊ। लखनऊ के नवनियुक्त जिला अध्यक्ष विनय प्रताप सिंह के जिला कार्यालय का उद्घाटन फैजुल्ला गंज के हनुमंत पुरम दो निकट जुड़वा मंदिर के पास उत्तर प्रदेश बीजेपी के संगठन महामंत्री धर्मपाल सिंह ने हवन पूजन के बाद फीता काट कर किया । जिसमे विशिष्ट अतिथि क्षेत्रीय अध्यक्ष अवध क्षेत्र कमलेश मिश्रा प्रदेश मंत्री शिवभूषण सिंह उपस्थित रहे , कार्यालय उद्घाटन समारोह में अवध क्षेत्रीय महामंत्री विजयद्ध प्रताप सिंह, बीकेटी विधायक योगेश शुक्ला ,मोहनलालगंज विधायक अमरीश रावत, मलिहाबाद विधायक जय देवी कौशल,युवा मोर्चा जिला अध्यक्ष धीरू पांडेय,बीजेपी जिला आईटी से विवेक सिंह चौहान,मंडल अध्यक्ष बीकेटी गौरव सिंह चौहान(अतुल) सभासद विकास सिंह भीम , सभासद प्रतिनिधि (कमलाबाद बडौली) अतुल मिश्रा ,भाजपा नेता संजेश सिंह , सभी मंडल अध्यक्ष बीजेपी के कार्यकर्ता व पदाधिकारी उपस्थित रहे। जिला कार्यालय उद्घाटन के बाद जिला अध्यक्ष विनय प्रताप सिंह ने कहा कि भाजपा के शीर्ष नेतृत्व द्वारा मुझे जो जिला अध्यक्ष के रूप में जिम्मेदारी दी गई है उसका मैं बखूबी निर्वहन करुंगा यह कार्यालय सभी कार्यकर्ता एवं समस्त जनता को समर्पित है ।

डलमऊ में आयोजित होने वाले मेले की तैयारियों की समीक्षा बैठक सम्पन्न

कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर लगता है भव्य मेला

❖ प्लास्टिक मुक्त मेला आयोजित किया जाएःडीएम

द अचीवर टाइम्स देवराज

रायबरेली । जिलाधिकारी हर्षिता माथुर ने कहा कि कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर डलमऊ में आयोजित होने वाले मेले की समस्त व्यवस्थाओं को शीघ्र ही पूर्ण कर लिया जाए। उन्होंने कहा कि मेले की ओर जाने वाले समस्त सड़कों की आवश्यकतानुसार मरम्मत सुनिश्चित करा ली जाए ताकि किसी भी प्रकार की दुर्घटना की आशंका न रहे। जिलाधिकारी बचत भवन सभागार में इस सम्बन्ध में आयोजित एक बैठक की अध्यक्षता कर रही थीं। जिलाधिकारी ने कहा कि मेले में आने के लिए प्रतिबंधित वाहनों का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए। उन्होंने अपील की कि शासन द्वारा आवागमन के लिए जिन वाहनों की अनुमति प्रदान की गई है उन्हीं का प्रयोग किया जाए। उन्होंने मेला परिसर में साफ-सफाई एवं आकस्मिक सेवाओं की व्यवस्था पर विशेष ध्यान देने के निर्देश दिये। जिलाधिकारी ने कहा कि यह मेला पूर्ण रूप से प्लास्टिक मुक्त मेले के रूप में आयोजित किये जाने के प्रयास किये जाएं। उन्होंने कहा कि प्लास्टिक मुक्त मेला पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि निराश्रित पशुओं तथा जीव जंतुओं से स्नानार्थियों की सुरक्षा के विशेष प्रबंध किये जायें। उन्होंने कहा कि साफ-सफाई पर विशेष ध्यान देते हुए सुनिश्चित किया जाए कि आवागमन के समय किसी प्रकार की अव्यवस्था की समस्या उत्पन्न न हो। माहिलाओं के लिए बने चेंज रूम के आस पास कड़ी सुरक्षा व्यवस्था की जाए। उन्होंने कहा कि आकस्मिक सेवाओं तथा अन्य आवश्यक सेवाओं का समय रहते मॉक ड्रिल भी कर लिया जाए। उन्होंने कहा कि मेले में आवागमन की व्यवस्था इस प्रकार सुनिश्चित की जाए कि एक रास्ता जाने का हो और दूसरा आने का, वन-वे व्यवस्था लागू करने के प्रयास किये जायें। उन्होंने कहा कि शौचालय पर्याप्त संख्या में बनाये जाएं और महिला पुरुष शौचालयों की संख्या अधिक से अधिक बनाया जाए। जिलाधिकारी ने अधिकारियों से मेले में आने वाले तीर्थ यात्रियों के लिए सभी आवश्यक सुविधाएं मुहैया कराने के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि ट्रैफिक व्यवस्था चाक चौबद रहे, अनावश्यक भीड़ न होने पाये। जिलाधिकारी ने स्नान करने वाले स्थान सड़क घाट, रानी शिवाला घाट तथा पक्का घाट आदि की बैरिकेटिंग व्यवस्था दुरूस्त रखने के लिए निर्देशित किया। उन्होंने कहा कि संबंधित एसडीएम बेरिकेटिंग,पानी की व्यवस्था,विद्युत विभाग बिजली की व्यवस्था को पूरी तरह से दुरूस्त रखेंगे। उन्होंने कहा कि जिन घाटों पर स्नान आदि होता है, वहां पर नाव व गोताखोरों की पर्याप्त व्यवस्था रखी जाये। बैठक में मुख्य विकास अधिकारी पूजा यादव, अपर जिलाधिकारी प्रशासन प्रफुल्ल त्रिपाठी सहित अन्य समस्त सम्बन्धित अधिकारी उपस्थित रहें।

सीता राम विवाह और वन गमन की लीला देख भाव विभोर हुए दर्शक

द अचीवर टाइम्स रमेश चंद्र

लखीमपुर खीरी फरधान। क्षेत्र के मन्योरा गांव में मेला मैदान में चल रही रामलीला में का शुभारंभ गुरुवार की शाम को थानाध्यक्ष फरधान ने किया। रात में कलाकारों ने राम विवाह और वनवास की लीला मंचन किया। राम वनवास लीला का शानदार मंचन देख दर्शक भाव-विभोर हो उठे। मन्योरा गांव में वर्षों से दशहरे मेले का आयोजन किया जाता है। इसमें सभी कलाकार मन्योरा गांव के ही मंचन करते है। मेले में पहले दिन कलाकारों ने राम विवाह का मंचन किया। उसके बाद रामलीला मंचन में मंथरा-कैकयी से कहती है कि जाल फैलाकर साजिश के तहत राम के राजतिलक के लिए समय सुनिश्चित किया है। कैकयी कोप भवन में चली जाती है और वहां जाकर जमीन पर सो जाती है। तब राजा दशरथ कोप भवन में आते हैं और कैकयी से उनकी उदासी का कारण पूछते हैं। कैकयी कहती हैं कि जब देवासुर संग्राम में मैंने आपकी रक्षा की थी तब आपने मुझे दो वर देने की बात कही थी। उसके बाद कैकेयी के वरदान देकर राम सीता का वन गमन का सुंदर मंचन किया।

एक नज़र

तहसील डलमऊ में रिक्त ग्राम पंचायत बरस नवीन उचित दर विक्रेता हेतु करें सभी आवेदन 30 अक्टूबर को प्रतिभाग करें

द अचीवर टाइम्स देवराज

रायबरेली। उपजिलाधिकारी डलमऊ अभिषेक वर्मा ने बताया है कि रिक्त ग्राम पंचायत बरस विकास खण्ड व तहसील डलमऊ, रायबरेली में लॉटरी के माध्यम से नवीन उचित दर विक्रेता के चयन हेतु आवेदन पत्र आमंत्रित किये गये थे। उन्होंने बताया कि ग्राम पंचायत बरस में 29 आवेदकों द्वारा आवेदन पत्र कार्यालय में जमा किए गए। आवेदन पत्रों की जांच कर लॉटरी के माध्यम से उचित दर विक्रेता के चयन किए जाने हेतु 30 अक्टूबर 2023 को अपरान्ह 03 बजे तिथि निर्धारित की गयी है। उपजिलाधिकारी डलमऊ ने कहा कि 30 अक्टूबर 2023 को अपरान्ह 03 बजे तहसील सभागार डलमऊ में रिक्त ग्राम पंचायत बरस में नवीन उचित दर विक्रेता के चयन हेतु निर्धारित समय पर सभी आवेदक एवं तहसील स्तरीय चयन समिति के सदस्य समय से प्रतिभाग करें।

पुलिस ने आरोपी को छेड़ छाड़ के मामले में भेजा जेल

द अचीवर टाइम्स सुधांशु अवस्थी

मछरेहटा /सीतापुर। सीतापुर के मछरेहटा थाना क्षेत्र से एक नाबालिग बालिका से दुष्कर्म का मामला प्रकाश मे आया है । प्राप्त जानकारी के अनुसार थाना क्षेत्र के एक गांव की पीड़िता के माता पिता ने थाने मे प्रार्थनापत्र देकर गांव के ही युवक पर दुष्कर्म का आरोप लगाया है कि 24/25 की रात 9 बजे उसकी नाबालिग लड़की (उम्र लगभग 11 वर्ष) शौच के लिए गांव के बाहर गई थी । उसी समय पहले से ही घात लगाए बैठे गांव के ही युवक ने उसे खेत से उठाकर अन्यत्र जगह कई घण्टे तक अपने पास रखा । लड़की के शोर मचाने पर उसे जान से मारने की धमकी देता हुआ वहां से भाग गया किसी प्रकार से पीड़िता अपने घर वापस आई और अपने परिजनों को आप बीती सुनाई। प्रार्थनापत्र के आधार पर पुलिस ने कार्वाई करते हुए आरोपी को धर दबोचा । एसआई अमित कुमार दुबे ने बताया कि एफआईआर दर्ज कर विधिक कार्रवाई प्रचलित है । पुलिस ने बयान दर्ज कराने के लिए लडकी को न्यायालय भेजा है । लेकिन दो दिनों से माता-पिता को थाने मे ही बैठाकर पुलिस किसी से मिलने नहीं दे रही है जिससे पुलिस की कार्रवाई संदेहास्पद लग रही है । पीड़िता की मां ने पहले जो प्रार्थनापत्र दिया था उसमे बालिका के साथ असलहे के बल पर बलात्कार का जिक्र था लेकिन पुलिस ने पूरी एफ आई आर ही बदलकर मुकदमा छेड़खानी में दर्ज कर दिया ।बताते चलें कि जबसे महिला थानाध्यक्ष पूजा यादव ने कार्यभार संभाला है तबसे हो रही चोरियों का खुलासा भी नहीं हो पाया और क्षेत्र मे हो रही घटनाओं को दबाकर गुडवर्क दिखाने का प्रयास किया जा रहा है ।

नारी वन्दन थीम पर होगा मेगा कार्यक्रम का आयोजन

द अचीवर टाइम्स निशान्त शुक्ला

हरदोई। मुख्य विकास अधिकारी सौम्या गुरूरानी ने बताया है कि 02 नवम्बर 2023 को मा0 मुख्यमंत्री जी का जनपद भ्रमण कार्यक्रम प्रस्तावित है, जिसमें प्रशासन की ओर से मिशन शक्ति के अन्तर्गत नारी सशक्तीकरण हेतु नारी वन्दन थीम पर मेगा कार्यक्रम का आयोजन शाहाबाद में किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि इस अवसर पर जनपद की 05 महिला/बालिकाओं को मा0 मुख्यमंत्री जी के कर कमलों द्वारा पुरस्कार प्रदान किये जाने हेतु चयनित किये जाने हेतु समिति का गठन किया गया है। इस समिति मे जिला विकास अधिकारी, परियोजना निदेशक, डी0आर0डी0ए0 तथा उप निदेशक कृषि को नामित किया है। उन्होंने समिति को निर्देशित किया है, कि राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त/पुरस्कार प्राप्त महिलाओं/बालिकाओं का चिन्हांकन कर अपनी आख्या/सूची 03 दिवस मे अद्योहस्ताक्षरी को उपलब्ध कराना सुनिश्चित करें।

पुरानी रंजिश के चलते घर में घुसकर महिला को पीटा पांच पर मामला दर्ज

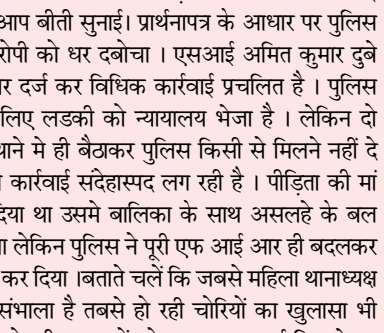

द अचीवर टाइम्स निशांत शुक्ला

पाली/हरदोई। जनपद हरदोई के पाली थाना पर पीड़िता ऊषा सिंह पत्नी राजवीर सिंह नि0 ग्राम कनकापुर लाल थाना पाली जनपद हरदोई ने पाली थाने पर शिकायती पत्र देकर बताया कि दि0 22.10.023 समय करीब साढ़े 7 बजे सुबह पुरानी रंजिश को लेकर विपक्षी गौरा देवी पत्नी नर सिंह व आजाद पुत्र छोटे भइया व ललिता पत्नी सूरज सिंह व छोटे भइया पुत्र रामेश्वर सिंह व अमन पुत्र छोटे भइया सर्व नि0 ग्राम कनकापुर लाल थाना पाली जनपद हरदोई उसके घर में घुसकर गाली गलौज करते हुए घूसा लात व डन्डो से मारा पीटा।जिससे उसके के शरीर में गुम चोटे आई है मौके पर शोर गुल सुनकर उसके पति राजवीर सिंह आ गये और उसे बचाया।पूरे मामले पर थानाध्यक्ष अरविन्द कुमार राय पाली ने बताया है महिला की तहरीर पर डॉक्टरी परीक्षण के उपरांत मामला दर्ज कर जांच पड़ताल शुरू कर दी है गई है जल्द ही आरोपितों की गिरफ्तारी की जाएगी।

मेरी माटी मेरा देश के अंतर्गत भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम का हुआ आयोजन

द अचीवर टाइम्स देवराज

रायबरेली । आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत, मेरी माटी मेरा देश सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन मुंशीगंज स्थित शहीद स्मारक पर हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत जिलाधिकारी हर्षिता माथुर ने दीप प्रज्वलित करके किया। उससे पहले विभिन्न स्थानों से ले गए मिट्टी कलश को कार्यक्रम स्थल पर रखा गया। इस दौरान जिलाधिकारी ने सभी को मेरी माटी मेरा देश कार्यक्रम के अंतर्गत शपथ दिलाई। जिलाधिकारी ने स्मारक स्थल पर शहीदों को पुष्प अर्पित करके उन्हें याद किया। कार्यक्रम में संस्कृति विभाग और विभिन्न विद्यालयो के छात्र-छात्राओं द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। कार्यक्रम में मुख्य विकास अधिकारी पूजा यादव, एडीएम प्रशासन प्रफुल्ल त्रिपाठी, नगर मजिस्ट्रेट प्रकाश चन्द्र, जिला विकास अधिकारी सहित अन्य अधिकारी गण उपस्थित रहे।

देश की जनता लोकसभा चुनाव में भाजपा को सिखाएगी सबक, गौरव कुमार रावत

द अचीवर टाइम्स अनुराग मल्होत्रा

बाराबंकी। वर्तमान सरकार से देश की जनता पूरी तरह से ऊब चुकी है,प्रतिदिन बढ़ती मंहगाई से लोगों का जीना मुश्किल हो रहा है, बेरोजगारी से तंग आकर नौजवान आत्महत्या करने के लिए विवश हो रहे हैं, देश की स्वास्थ्य सेवाएं पूरी तरह से ध्वस्त हैं,फ़सल लागत बढ़ जानें के कारण किसान खुद भुखमरी की कगार पर है और सरकार किसानों की आय दोगुनी कर देने का ढिंढोरा पीट रही है इसका जवाब आगामी लोकसभा चुनाव में जनता जनार्दन भाजपा को सत्ता से बेदखल करके देगी द्य उक्त विचार गुरूवार को विधानसभा जैदपुर से सपा विधायक गौरव कुमार रावत ने देश बचाओ देश बनाओ साइकिल यात्रा के विधानसभा जैदपुर के जरहरा गांव पहुंचने पर स्वागत के दौरान वयक्त किए उन्होंने आगे कहा कि ये साईकिल यात्रा पूरे प्रदेश में भाजपा के ताबूत में आखिरी कील ठोंकने का काम करेगी सपा विधायक ने नौजवानो से एकजुट होकर लोकसभा चुनाव में भाजपा की जुल्मी सरकार को सत्ता से उखाड़ फेंकने का आह्वाहन किया स्वागत सभा को सम्बोधित करते हुए सदर विधायक सुरेश यादव ने नौजवानों से समाजवादी विचारधारा को जन जन तक पहुंचाने की अपील करी द्य पूर्व कारागार मंत्री राकेश कुमार वर्मा ने समाजवादियों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि भाजपा का पतन शुरू हो चुका है इंडिया गठबंधन की सरकार बनना तय है साइकिल यात्रा का नृतत्व कर रहे लोहिया वाहिनी के प्रदेश अध्यक्ष ने सपा कार्यकर्ताओं पदाधिकारियों द्वारा मिल रहे सहयोग के लिए जनपद के सपाईयों का आभार जताया द्य इस अवसर पर विशेष रूप से पूर्व एमएलसी राजेश यादव राजू,सपा जिलाध्यक्ष हाफ़िज़ अयाज़, जैदपुर विधानसभा अध्यक्ष शानू प्रधान,सहित अन्य पदाधिकारी व कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

मेरी मॉटी मेरा देश, मिट्टी कार्यक्रम से लोगों में देश प्रति सर्म्पण की भावना जागी हैं: जय प्रकाश रावत

- मिशन शक्ति अभियान से महिलों एवं बालिकाओं का आत्म सम्मान बढ़ा हैः मुख्य अतिथि।
- मेरी मॉटी मेरा देश कार्यक्रम से गांव-गांव के लोगों में देश प्रेम की भावना को जागृत किया हैः अशोक रावत।
- 18 की आयु पूर्ण कर रहे सभी लोग अपना नाम मतदाता सूची में दर्ज करायेंः जिलाधिकारी

द अचीवर टाइम्स निशान्त शुक्ला

हरदोई। रसखान प्रेक्षागृह में मेरी माटी मेरा देश, मिट्टी को नमन, वीर वंदन अमृत कलश यात्रा, देश के लिए बलिदान देने वाले वीरों को सर्मपित कार्यक्रम एवं मिशन शक्ति के तहत आयोजित भव्य कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि सांसद हरदोई जय प्रकाश रावत ने विशिष्ट तिथि सांसद अशोक रावत, जिला पंचायत अध्यक्ष प्रेमावती, भाजपा जिलाध्यक्ष अजीत सिंह बब्बन के साथ संयुक्त रूप से दीप प्रज्जवलित कर किया। इस अवसर पर सांसद जय प्रकाश रावत ने कहा कि देश के लोगों को एक सूत्र में बांधने के लिए मा0 प्रधानमंत्री जी द्वारा मेरी माटी मेरा देश अभियान चलाया जा रहा है ताकि लोग अपने देश एवं देश की मॉटी के प्रति सर्मपित हो और देश के उत्थान के लिए आगे आये। उन्होने कार्यक्रम को भव्य रूप प्रदान के लिए जिलाधिकारी एवं जिला प्रशासन की प्रशंसा करते हुए कहा कि ऐसे कार्यक्रमों से छात्र-छात्राओं में उत्साह बढ़ता है और वह देश के प्रति होने वाले रंगारंग कार्यक्रमों में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करते है। सांसद ने कहा आज मिशन शक्ति के तहत महिलों एवं बालिकाओं का आत्म सम्मान बढ़ा है और अब वह निडर होकर किसी भी समय घर के बाहर निकल सकती है। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि सांसद अशोक रावत ने कहा कि मा0 प्रधानमंत्री जी के मेरी मॉटी मेरा देश कार्यक्रम से गांव-गांव के लोगों में देश प्रेम की भावना को जागृत किया है तथा बलिदानियों के प्रति सम्मान बढ़ा है और मिशन शक्ति अभियान से महिलाओं में जागरूकता आयी है और अब वह हर क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभा रही है। इस अवसर पर जिला पंचायत अध्यक्ष, भाजपा जिलाध्यक्ष तथा विधायक सवायजपुर माधवेन्द्र प्रताप सिंह रानू ने भी भव्य कार्यक्रम के आयोजन पर जिला प्रशासन की प्रशंसा करते हुए मेरी मॉटी मेरा देश तथा मिशन शक्ति के बारे में लोगों को बताया। कार्यक्रम में आये अतिथियों का आभार व्यक्त करते हुए जिलाधिकारी ने कहा कि मेरी मॉटी मेरा देश तथा मिशन शक्ति कार्यक्रम को भव्य एवं सफल बनाने में जनपद के जनप्रतिनिधियों के अलावा अधिकारियों, कर्मचारियों, शिक्षकों एवं छात्र-छात्राओं का विशेष योगदान रहा है। इस अवसर पर जिलाधिकारी ने उपस्थित लोगों एवं छात्राओं से कहा कि 27 अक्टूबर 2023 से मतदाता सूची का पुनरीक्षण कार्यक्रम प्रारम्भ हो रहा है और जो लोग 01 जनवरी 2024 को 18 की आयु पूर्ण कर रहे है या जिनका मतदाता पहचान पत्र अभी तक नहीं बना है वह अपने बूथ पर जाकर अपना नाम मतदाता सूची में दर्ज करायें। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि एवं अन्य जनप्रतिनिधियों ने मेरी मॉटी मेरा देश कार्यक्रम में उत्कृष्ट कार्य करने वाली नगरीय निकाय, विकास खण्ड, महिला पुलिस कर्मियों, शिक्षकाओं, महिला ग्राम प्रधानों तथा छात्र-छात्राओं को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया।

ग्राम पंचायतो से एकत्र की गयी मिट्टी गाजे बाजे के साथ कलश यात्रा रवाना

द अचीवर टाइम्स अनुराग मल्होत्रा

मसौली बाराबंकी। मेरी माटी मेरा देश कार्यक्रम के तहत विभिन्न ग्राम पंचायतो से एकत्र की गयी मिट्टी को गुरुवार को गाजे बाजे के साथ जिला मुख्यालय को रवाना किया गया।

आजादी के अमृतमहोत्स्व के क्रम मे चलाये जा रहे अभियान के तहत घर घर इकठ्ठा की गयी मिट्टी को गत 11 अक्टूबर को ब्लाक मुख्यालय पर इकट्ठा किया गया था गुरवार को खण्ड विकास अधिकारी डा संस्कृता मिश्रा ने जिला मुख्यालय पर होने वाले कार्यक्रम मे ब्लाक मुख्यालय से गाजे बाजे के साथ कलश को रवाना किया। इस मौके पर एडीओ आई एस बी मदन गोपाल कनौजिया, एडीओ पंचायत जानकीराम, जे ई एम आई अरुण कुमार, अनिल दुबे प्रदीप कुमार, सचिव जैसराम, अजय वर्मा, दिलीप रावत, संदीप कुमार, सूरज, मदन, उत्तम वर्मा, महेश प्रताप सिंह, प्रताप नरायण, ज्योति यादव, सीमा वर्मा, विनोद कुमार राव, मन मोहन वर्मा, आदि लोग मौजद रहे।

ग़ामीणों में दहशत, खेत गए किसान को सांड ने मारा,मौत

द अचीवर टाइम्स निर्मल सैनी लखनऊ। रहीमाबाद थाना क्षेत्र अंतर्गत एक आवारा सांड ने किसान की जान ले ली।सांड ने किसान पर अपने सींग से इस कदर हमला किया कि उसकी मौत हो गई।यह हादसा उस वक्त हुआ जब किसान आवारा गोवंशों से अपनी खेत की रक्षा के लिए पहरेदारी करने में जुटा था। मिली जानकारी अनुसार थाना क्षेत्र के ग्राम सहिंजना गांव में साठ वर्षीय किसान फकीरे घर लगभग पांच सौ मीटर दूर अपने खेत की रखवाली कर रहे थे।आवारा गोवंशों का झुंड जब खेत पर पहुंचा तो फकीरे उन्हें खेत से भगाने में जुट गए।आवारा सांड को खेत से भगाते समय सांड ने किसान पर हमला कर उसे लहूलुहान कर दिया। बगल के खेत में मौजूद किसानों ने हमलावर सांड को किसी तरह भगाया लेकिन तब तक किसान ने दम तोड़ दिया था।परिजनों ने देर शाम अंतिम संस्कार कर दिया।

हरदोई जेल में बंद अब्दुल्ला आजम से मिलने पहुंचे कांग्रेस प्रतिनिधिमंडल को जेल प्रशासन ने मिलाई कराने से किया इनकार

द अचीवर टाइम्स निशान्त शुक्ला

❖ अब्दुल्ला आजम द्वारा जेल प्रशासन को मिलाई करने वालों की उपलब्ध कराई गई सूची में नहीं है कांग्रेस प्रतिनिधिमंडल के किसी सदस्य का नाम।
❖ कांग्रेस जिलाध्यक्ष ने अब्दुल्ला आजम व उनके परिवार को बताया जान का खतरा।
❖ उनके पत्र व पर्ची को अब्दुल्ला आजम तक न पहुंचाने का जेल प्रशासन पर लगाया आरोप।
❖ जेल अधीक्षक ने राजनीतिक रुप से किसी भी व्यक्ति को कैदी से मिलाई न करने की नियमावली का दिया हवाला।

हरदोई। रामपुर जेल से स्थानान्तरित सपा नेता पूर्व मंत्री आज़म खां के बेटे अब्दुल्ला आजम को सात साल की सजा होने के बाद जिला कारागार हरदोई में अभी हाल ही मे शिफ्ट किया गया। कांग्रेस का प्रतिनिधिमंडल अब्दुल्लाह आजम से जिला कारागार मिलने पहुंचा था लेकिन जेल प्रशासन ने जेल मैनुअल का हवाला देकर मुलाकात कराने से इंकार कर दिया। दरअसल उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष अजय राय के निर्देश पर हरदोई जेल में निरुद्ध पूर्व विधयाक अब्दुल्ला आजम खान से मुलाकात करने के लिए कांग्रेस प्रतिनिधिमंडल जिला कारागार पहुंचा। मगर अहंकार में चूर सत्ता शासन ने उनके परिवार से मिलने वाले शुभ चिंतकों पर प्रतिबंध लगा दिया है। जबकि आज की मिलाई के संदर्भ में कल ही जिलाधिकारी की अधिकारिक ई मेल आईडी पर पत्र भी भेजा गया था।परन्त कोई संज्ञान नहीं लिया गया। कांग्रेस जिलाध्यक्ष आशीष कुमार सिंह सोमवंशी ने रोष व्याप्त करते हुए कहा कि इस संदर्भ मे जिलाधिकारी को पत्र दिया था आज भी जेल अधीक्षक से मुलाक़ात की थी, उन्होने मुलाकात कराने से इंकार किया है। फिर भी जो कोई पर्ची भेजे उस पर्ची को कैदी तक पहुँचना चाहिए, वो कैदी पर निर्भर है वो उसे स्वीकार करे या अस्वीकार करे। ऐसा प्रशासन ने नहीं किया। हमने कई बार कहा हमारी पर्ची को कैदी तक भेज दें नहीं मिलना चाहते होंगे तो रिमार्क लगा दें। इसमे भी असमर्थता व्यक्त की है। मै समझता हूँ की इतना ज्यादा सत्ता का अहंकार,सत्ता का घमंड, और ये सत्ता हमेशा नहीं रहेगी, घमंड और अहंकार जब सत्ता मे आ जाए निश्चित ही ये बादल छटेगें, और सवेरा होगा। इंडिया गठबंधन आएगा। और निश्चित ही ये जो झूठे मुकदमे लिखे जा रहे है इस पर रोक लगेगी। कांग्रेस जिलाध्यक्ष ने कहा राजनैतिक विद्वेष के कारण आजम खान के परिवार को तंग किया जा रहा है।राष्ट्रीय राजनीति में सांसद, मंत्री रहते हुए आजम खान और उनके परिवार का सकारात्मक योगदान रहा है।हर गरीब की मदद करने में हमेशा आगे रहना उनका स्वाभाव है।उन्होंने गरीब मजदूर के बच्चों व को तालीम देने के विश्विद्यालय की स्थापना की।सदन के अंदर मंहगाई, बेरोजगारी, गरीबी जैसे विषयों पर उनकी तकरीरें इतनी जबरदस्त थीं कि भाजपा सरकार को उनसे भयभीत होने लगी थी।उन्होंने पुस्तकालय खोले मगर दमनकारी भाजपा सरकार को यह सब रास नहीं आया। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य बिलग्राम मल्लावां विधानसभा से कांग्रेस प्रत्याशी रहे सुभाष पाल प्रशासन के रवैये की कड़ी निंदा की।उन्होंने कहा अब्दुल्ला आजम पूर्व विधायक है आज वो जिला कारागार में निरुद्ध है ऐसे में उनके शुभ चिंतकों को उनसे मिलने नहीं देना,उनकी पर्ची तक उनतक न पहुंचने देना गलत है।कांग्रेस प्रतिनिधि मण्डल को मिलने से रोकना गलत है। सोशल आउटरीच के प्रदेश चेयरमैन विक्रम पाण्डेय ने कहा कांग्रेसजन पूर्व सांसद पूर्व मंत्री आजम खान के परिवार के साथ मजबूती से खड़े हैं।और न्याय के लिए लड़ाई भी लड़ेंगे।

सम्पादकीय

क्या टिकट की मारामारी इसलिए क्योंकि राजनीति ही सर्वाधिक 'लाभ का धंधा' है?

मध्यप्रदेश विधानसभा चुनाव में इस बार सत्ता के दावेदार दो प्रमुख राजनीतिक दलों भाजपा और कांग्रेस में टिकट को लेकर जिस बड़े पैमाने पर बगावत और नाराजगी दिखाई दे रही है, वह देश की राजनीति में आ रहे चरित्रगत बदलाव का संकेत है। साथ ही यह वैचारिक और दलीय प्रतिबद्धता पर हावी हो रहे व्यक्तिवाद और निजी स्वार्थ की स्पष्ट छवि भी है। चुनाव के लिए नामांकन प्रारंभ होने के बाद भाजपा और कांग्रेस में करीब 70 सीटों पर भारी असंतोष और बगावत की लपटें हैं। समय रहते इन्हें शांत नहीं किया जा सका तो ये बागी, चुनाव में राजनीतिक दलों के समीकरणों को बिगाड़ सकते हैं। सबसे बड़ा सवाल तो यह है कि क्या अब चुनाव का टिकट पाना या उसका कटना ही नेताओं के जीवन- मरण का प्रश्न बन गया है? क्या समाज में जनसेवा के दूसरे माध्यम बेमानी हो चुके हैं और यह भी कि क्या राजनीति अब सबसे ज्यादा लाभ और रौब का धंधा बन चुकी है? ऐसा नहीं है कि चुनाव के समय राजनीतिक दलों में टिकट वितरण को लेकर असंतोष नहीं होता। यह स्वाभाविक भी है कि जो राजनीतिक कार्यकर्ता वर्षों मेहनत करे और टिकट वितरण के समय उसे दरकिनार कर दूसरे या किसी आयातित व्यक्ति को टिकट दे दिया जाए तो राजनीति में निष्ठा और समर्पण का पैमाना अपने आप दफन होने लगता है। वैसे भी हर पार्टी में एक सीट पर टिकट के एक से अधिक आकांक्षी होते हैं। दलों की संवैधानिक मर्यादा है कि वे चुनाव में किसी एक को ही टिकट दे सकती हैं। ऐसे में बाकी को या तो पार्टी के अधिकृत उम्मीदवार का समर्थन करना होगा या फिर दूसरे किसी दल से टिकट लेकर अथवा निर्दलीय चुनाव में खड़ा होना होगा। तीसरे, वह पार्टी हाई कमान और टिकट वितरणकर्ताओं के सामने खुलकर अपनी नाराजगी का प्रदर्शन कर मन को हल्का करे। चौथा और अनैतिक विकल्प यह है कि वह पार्टी में रहकर ही भीतरघात कर पार्टी के अधिकृत प्रत्याशी को हरवाकर अपनी उपेक्षा का बदला ले और अगले चुनाव में अपनी उम्मीदवारी का खाता खुला रखे।

मध्यप्रदेश में विरोध के दिख रहे अलग-अलग तरीके

मध्यप्रदेश में जो सीन बन रहा है, वह इन सारे दृश्यों का नकारात्मक कोलाज है। बात अब विरोध के प्राचीन तरीकों जैसे कि नारेबाजी, धरना प्रदर्शन से मीलों आगे जाकर शीर्ष नेताओं के घरों के सामने आत्मदाह करने, पार्टी दफ्तरों पर हमले, नेताओं के कपड़े फाड़ने, हाथापाई, सामूहिक इस्तीफे और टिकट कटने के बाद मातमी अंदाज में जार-जार आंसू बहाने से लेकर इस परिस्थिति के लिए गालियां खाने की पावर ऑफ एटार्नी ट्रांसफर करने तक पहुंच गई है। अमूमन ये सब करने और कराने वाले वही लोग होते हैं, जो टिकट कटने से पहले पार्टी के निष्ठावान और प्रतिबद्ध कार्यकर्ता कहलाते थे। आलम यह है कि कई जगह तो बड़े नेताओं को अपने ही कार्यकर्ताओं के हिंसक आक्रोश का शिकार होने से बचने जान बचाकर भागना पड़ रहा है। मानो सभी दलों में अनुशासनहीनता और अराजकता की एक अघोषित स्पर्द्धा चल रही हो, जिसमें हर असंतुष्ट अपने गिरोह के साथ दूसरे को पीछे छोड़ने की दबंगई में लगा है। ऐसा नहीं है कि आला नेताओं को कार्यकर्ताओं के इस तरह उग्र अथवा बागी होने का अंदाजा न हो। लेकिन पार्टियां चुनाव का टिकट बांटती हैं तो टिकट देने और टिकट काटने के उसके अपने पैमाने होते हैं। कई बार तो ये पैमाने ही एक- दूसरे को काटते दिखाई देते हैं। मप्र में भाजपा और कांग्रेस ने जो सूचियां जारी की हैं, उसमें कोई निश्चित पैटर्न या फार्मूला नजर नहीं आता, सिवाय किसी कीमत पर सत्ता में लौटने या उसे कायम रखने की व्यग्रता के। इसमें नेताओं की आपसी प्रतिद्वंद्विता, जुगाड़, डीलिंग, राजनीतिक शह और मात, तथाकथित सर्वे, निजी पसंद- नापसंद, किसी भी हद तक जाकर उपकृत करने की बेताबी और विवशता, जातिगत समीकरण, धन और बाहुबलीय क्षमता तथा अपने ही नैतिक प्रतिमानों का खुशी-खुशी विध्वंस भी इसमें शामिल है।

दोनों पार्टियों में टिकट बांटने के लिए बैठकों पर बैठकें हुईं। जोड़- तोड़ जुगाडों के सत्र चले। गोपनीयता का आवरण ओढ़ा गया। हर दिन राजनीतिक हानि- लाभ का नया चौघड़िया रचने की कोशिशें हुईं। चेहरों के हिसाब से दर्पण सजाने के उपक्रम हुए। इतना कुछ हुआ कि भगवान भी अगर इस टिकट वितरण का विश्लेषण करने बैठें तो चकरा जाएं। यानी एक दिन पहले पार्टी में शामिल को भी टिकट मिले तो उन बुजुर्गों को भी टिकट से नवाजा गया जो खुद चार धाम की यात्रा पर जाने की तैयारी में थे। कुछ को टिकट दिया भी उस क्षेत्र से, जहां उसे अपनी नेतागिरी का नारियल फोड़ना है। एक ऐसे नाराज माने जाने वाले विधायक को भी टिकट दिया गया, जिसने नाउम्मीदी में टिकटों की घोषणा से पहले ही राजधानी में अपना सरकारी आवास खाली कर दिया था। कहीं भाई- भाई या सगे रिश्तेदारों को लड़ा दिया गया तो कहीं सालों से मेहनत करते कार्यकर्ता के हाथ में ऐन वक्त पर तुलसी पत्र पकड़ा दिया गया। कई उन मंत्रियों और विधायकों को फिर से टिकट मिल गया, जिन्होंने पांच साल में सिर्फ माल कमाया, अकड़ दिखाई और पब्लिक की गालियां खाईं। टिकट जुगाड़ने के लिए कहीं धमक काम आई, कहीं पैसा काम आया। कहीं सेवा का तड़का लगा तो कहीं चरणोदक काम आया। अगर इस समूची प्रक्रिया में कोई ठगा गया तो वह मतदाता।

चुनाव पर क्या होगा इसका असर?

जाहिर है कि जब दो प्रमुख दलों में इतने बड़े पैमाने पर बगावत है तो उसका असर चुनाव नतीजों पर पड़ेगा ही। अभी करीब एक दर्जन टिकटवंचित उम्मीदवार छोटे दलों के टिकट पर चुनाव मैदान में उतरने का एलान कर चुके हैं। नाम वापसी तक यह संख्या और बढ़ सकती है। हालांकि, नाराजों को बिठाने और चुप कराने के लिए दोनो? दलों में बड़े नेता साम-दाम-दंड-भेद सभी तरीके अपनाने में लगे हैं। लेकिन राजनीतिक कार्यकर्ता यह बखूबी जानता है कि बड़े नेताओं द्वारा उससे किए वादे भी ज्यादातर चुनावी वादों की तरह खोखले अथवा आधे-अधूरे होते हैं। साथ में यह भी सच है कि बड़े दलों में अब वो ऋषि राजनेता नहीं रहे, जिनकी कार्यकर्ता के मन पर पकड़ थी और जो शीर्ष नेतृत्व और जमीनी कार्यकर्ता के बीच रेशमी धागे का काम करते थे। जो गरल को भी अमृत के भाव से पी सकते थे, पिला सकते थे। ऐसे दिग्गत नेताओं का नैतिक प्रभाव खत्म होने के बाद आजकल कार्यकर्ताओं को मनाने का फार्मूला मोटे तौर पर अगले चुनाव में टिकट के वादे, सत्ता में आने पर किसी पद की रेवड़ी, किसी कार्यकर्ता के घर जाकर चाय आदि पीने की दरियादिली या फिर बात-बेबात उसकी पीठ थपथपाने, मंच से तारीफ के दो शब्द कहकर भावनात्मक शोषण करने या फिर कैश डीलिंग के रूप में भी हो सकता है। ध्यान रहे कि राजनीति में 'ठगना' शब्द के अनेकार्थ हैं और वो परिस्थिति तथा पात्र के हिसाब से बदलते रहते हैं। चुनाव के मंगलाचरण में अगर बड़े नेताओं का यह 'समझाइश कैम्पेन' खास सफल नहीं रहा और घोषित तौर पर बैठे प्रत्याशी ने अघोषित रूप से अंदर ही अंदर पार्टी प्रत्याशी को पलीता लगा दिया तो नतीजे चौंकाने वाले हो सकते हैं।

धूमिल होती राजनीति की बुनियादी नैतिकता

यहां सबसे बड़ा सवाल तो राजनीति में बुनियादी नैतिकता का है? लोकतंत्र में चुनाव टिकट की आकांक्षा रखना स्वाभाविक है, लेकिन उसे जीने-मरने का सवाल बना देना क्या संदेश देता है? क्या चुनाव का टिकट मिलना कोई कुबेर के खजाने की चाभी है या उसका न मिलना घर के कर्ता पुरूष की असामयिक मौत है? टिकट न मिलने पर इतना शोक और रूदन क्यों? और मिल जाने पर आकाश स्पर्श का परमानंद क्यों? दरअसल राजनीतिक व्यवस्था मूलत- लोकतंत्र को चलाने और इस तंत्र के असल मालिक लोक के जीवन को सुचारू और समृद्ध बनाने के लिए है, लोकतांत्रिक माफिया बनने के लिए तो नहीं है। लेकिन दुर्भाग्य से आजादी के अमृत काल में यह कड़वा सच है कि राजनीति अब अधिकांश लोगों के लिए शुद्ध रूप से चौतरफा लाभ का धंधा है। इसीलिए वो इसे छोड़ना तो दूर इसे किसी सेठ की गद्दी की तरह पीढ़ी दर पीढ़ी कायम रखना चाहते हैं ताकि पावर, पैसा और प्रतिष्ठा की गंगोत्री सूख न सके।

पश्चिम एशिया का संकट और शांति बहाली की कोशिश

अहम हो सकती है भारत की भूमिका

इस्राइल-हमास युद्ध में कुछ देश इस्राइल के साथ, तो कुछ फलस्तीन के साथ सहानुभूति जता रहे हैं। जरूरी यह है कि इन सहानुभूतियों को शांति बहाली के प्रयासों की ओर मोड़ा जाए, जिसमें अंतरराष्ट्रीय समुदाय के साथ भारत की भी भूमिका है।

इस्राइल और हमास में चले रहे युद्ध को पूरे पश्चिम एशिया के संदर्भ में देखा जाना चाहिए, जहां की शांति, सुरक्षा व स्थायित्व, भारत के लिए बेहद महत्वपूर्ण है। भारत करीब 70 फीसदी तेल और गैस यहीं से आयात करता है। पश्चिम एशियाई देशों में 90 लाख से भी ज्यादा भारतीय रहते हैं, जो करोड़ो डॉलर भारत भेजते हैं। ज्यादातर वैश्विक व्यापार और समुद्री मार्ग पश्चिम एशिया से ही गुजरते हैं। इसलिए, भारत यही चाहेगा कि इस्राइल-हमास युद्ध वैश्विक लड़ाई में तब्दील न होने पाए। दूसरी बात, युद्ध अभी तीसरे हफ्ते में पहुंचा है और तेल की कीमतें बढ़ने लगी हैं। चूंकि, भारत ज्यादातर तेल का आयात करता है, इसलिए इससे भारत के खर्चे बढ़ेंगे, जिससे महंगाई बढ़ेगी, जो सीधे तौर पर भारतीय अर्थव्यवस्था को प्रभावित करेगी। तीसरी बात, हमें यह समझना होगा कि संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) दरअसल ट्रांजिट बिंदु है। वहां हमारी छह-सात हजार कंपनियां हैं, जो भारत में निवेश कर रही हैं। सऊदी अरब भी भारत में निवेश बढ़ाने की कोशिश में है। क्षेत्र में अशांति से ये निवेश निश्चित ही प्रभावित होंगे। चौथी बात, ईरान के साथ हमारे संबंध भी जटिल हो सकते हैं। ईरान के साथ संबंधों में चाबहार बंदरगाह और अंतरराष्ट्रीय नॉर्थ-साउथ कॉरिडोर परियोजनाएं महत्वपूर्ण हैं, जिन पर प्रभाव पड़ सकता है। पांचवीं बात, नई दिल्ली में आयोजित हुए जी-20 शिखर सम्मेलन में जिस भारत-मध्य पूर्व-यूरोप गलियारे (आइमेक) की स्थापना पर, जिसे चीन की बेल्ट ऐंड रोड पहल (बीआरआई) का जवाब माना जा रहा है, जो स्वीकृति बनी थी, उस पर भी संकट मंडराने लगे हैं। भारत बेशक यह कह रहा है कि इस युद्ध से आपसी व्यापार में कोई समस्या नहीं आएगी। यूएई और सऊदी अरब हमारे क्रमशः तीसरे और चौथे सबसे बड़े व्यापारिक सहयोगी हैं और इन देशों के साथ भारत के सीधे व्यापार में वाकई कोई भी मुश्किल नहीं है। लेकिन, अगर आइमेक कॉरिडोर की बात करें, तो यह मार्ग सऊदी अरब से जॉर्डन होते हुए इस्राइल जाता है। यह दरअसल रेल और बंदरगाहों को जोड़ने का प्रोजेक्ट है। बंदरगाह तो पहले से जुड़े हुए हैं। प्रधानमंत्री मोदी महाराष्ट्र, गुजरात व दूसरी जगहों पर कुछ नए बंदरगाह निर्मित किए जाने की भी बात कर चुके हैं, इसलिए इसमें भी कोई दिक्कत नहीं है। लेकिन फिलहाल समस्या यह है कि इस्राइल को लेकर अरब देशों में आक्रोश भरा है। एक बार मान लें कि वहां के राजनेता यदि संबंधों को बहाल करने के लिए राजी भी हो जाते हैं, तो वहां की जनता का क्या, जो इस्राइल के बिल्कुल विरोध में है। यह देखते हुए कि सऊदी अरब के महज दो फीसदी लोग इस्राइल के साथ संबंधों को बहाल करने के पक्ष में हैं, निश्चित ही कि दोनों देशों के बीच रिश्ते सामान्य होने में समय लगेगा। जाहिर है कि इससे कॉरिडोर के बनने में विलंब ही होगा, जिसका नुकसान भारत को भी उठाना होगा। इसके अलावा जिन क्षेत्रीय परियोजनाओं पर बात चल रही थी, वे भी संकट में पड़ सकती हैं। छठी बात, इस्राइल-हमास युद्ध पूरी दुनिया की तरह भारत के मुस्लिम समुदाय को भी प्रभावित कर सकता है। खासकर गाजा में जो स्थितियां हैं, जिस तरह वहां के नागरिकों को निशाना बनाया जा रहा है, उन्हें देखकर भारत के मुस्लिम समुदाय में भी आक्रोश भड़क सकता है। हालांकि, भारत के लिए अच्छी बात यह है कि यहां के ज्यादातर मुसलमान आतंकवाद में भरोसा नहीं करते हैं और यही उनकी भारतीयता है। इस्राइल पर हमास के हमले के बाद पूरी दुनिया दरअसल, बंटी हुई दिखती है। कुछ आतंकी हमले में मारे गए हजारों इस्राइलियों के साथ सहानुभूति रखते हैं, तो कुछ वर्षों से जुल्म सह रहे फलस्तीनियों के साथ खड़े दिखते हैं। भारत में भी यही हालत है। लेकिन जरूरी यह है कि इस सहानुभूति को शांति और युद्ध विराम के प्रयासों की तरफ मोड़ा जाए। इसके लिए अंतरराष्ट्रीय समुदाय का होना जरूरी है। भारत जैसे देशों को आगे आना चाहिए। मेरा मानना है कि इस्राइल-हमास युद्ध में शांति बहाली के प्रयासों की अगुआई भारत को करनी चाहिए। हम इसके लिए एक प्रतिनिधि मंडल बना सकते हैं। पड़ोस के जो देश साथ देना चाहें, उनके साथ मिलकर युद्ध को रोकने की किसी योजना पर काम कर सकते हैं। हम नई दिल्ली के जी-20 सम्मेलन में भी देख चुके हैं कि आज पूरी दुनिया भारत का सम्मान करती है। पश्चिम एशियाई देश भी चाहते हैं कि भारत आगे आए। आज उसकी साख है। भारत जब कहता है, तो दुनिया सुनती है, क्योंकि वह सिद्धांतों की बात करता है। भारत की स्वतंत्रता से पहले महात्मा गांधी ने कहा था कि जैसे इंग्लैंड अंग्रेजों के लिए और फ्रांस फ्रेंच लोगों के लिए है, उसी तरह फलस्तीन फलस्तीनियों के लिए है। 1948 में जब पहली बार वोट हुआ, तब भारत ने फलस्तीन को बांटने के प्रस्ताव के विरोध में मत दिया था। 1950 में भारत ने आधिकारिक तौर पर इस्राइल राज्य को मान्यता दी, लेकिन आधिकारिक राजनयिक संबंध 1992 में जाकर स्थापित किए। दोनों देशों को लेकर फिलहाल भारत का पक्ष दो-राज्य समाधान और शांतिपूर्ण ढंग से दोनों देशों के लिए आत्मनिर्णय के अधिकार के साथ डी-हाईफनेशन की नीति की ओर बढ़ गया है। जब इस्राइल पर हमला हुआ, तो प्रधानमंत्री मोदी ने इस्राइल के लोगों के प्रति सहानुभूति दिखाई। फिर विदेश मंत्रालय ने भी स्पष्ट किया कि भारत दो-राज्य सिद्धांत का हिमायती है। फिर जब गाजा के अस्पताल पर हमला हुआ, जिसमें 500 लोग मारे गए थे, तब प्रधानमंत्री मोदी ने फलस्तीनी राष्ट्रपति महमूद अब्बास से भी बात की थी। भारत दरअसल, बिल्कुल संतुलित रवैया रखते हुए चाहता है कि वहां शांति की स्थापना हो और कोई रास्ता निकले। दोहा, कतर, तुर्किये और मिस्र जैसे देश शांति बहाली के लिए वार्ताएं कर रहे हैं, लेकिन अगर इस्राइल जमीनी लड़ाई पर उतरता है, और जिस तरह से हिजबुल्ला, लेबनान की तरफ से दबाव बनाए हुए है, उससे तो युद्ध का लंबा खिंचना तय लगता है। रूस-यूक्रेन और अब इस्राइल-हमास के बीच युद्धों ने वैश्विक व्यवस्था को बदलने का काम किया है और इनके नतीजे ही बताएंगे कि दुनिया किस तरफ जाएगी। मुमकिन है कि शीतयुद्ध 2.0 जैसी स्थिति हो, जिसमें रूस, चीन व कुछ देश एक तरफ और अमरिका व यूरोपीय देश दूसरी तरफ हों। तीसरे पक्ष की भूमिका अगर कोई निभा सकता है, तो वह भारत है, जो रणनीतिक स्वायत्तता की नीति अपनाते हुए उन तमाम देशों को जोड़ सकता है, जो किसी भी गुट में शामिल न होना चाहें।

सरकार के नौ साल और विकास के मार्ग पर हरियाणा

प्रधानमंत्री के नए भारत के निर्माण के लक्ष्य को पूरा करने के लिए हम नए हरियाणा को विकसित करने में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे।

हरियाणा में हमारी सरकार के नौ वर्ष पूरे हो रहे हैं। नौ वर्ष पूर्व प्रदेश को नए सिरे से विकास के मार्ग पर लाना असंभव-सा लगता था। भ्रष्टाचार चरम पर था। समाज जातियों में बंटा था। जनता में सरकारी तंत्र और राजनीतिक दलों के प्रति भारी आक्रोश था। अर्थव्यवस्था बेहाल थी, सामाजिक कूरीतियां चरम पर थीं और पूरे देश को भोजन कराने वाला किसान आत्महत्या करने पर मजबूर था। मैं प्रारंभ से ही टेक्नोलॉजी से काफी नजदीक से जुड़ा रहा। इसलिए लगा कि इसकी मदद से ही एक नए हरियाणा का निर्माण किया जा सकता है। हमारी सरकार ने %हरियाणा एक, हरियाणवी एक% की नीति पर चलने का निर्णय लिया। इसमें हमारी फ्लैगशिप स्कीम परिवार पहचान पत्र ने बड़ी भूमिका निभाई। इसके तहत प्रदेशवासियों का पूर्ण विवरण इकट्ठा किया जा रहा है। इससे लोगों को किसी भी विभाग में कोई भी दस्तावेज जमा करने के झंझट से छुटकारा मिल गया। आज प्रदेश के 96 फीसदी से अधिक परिवारों के पास पीपीपी आईडी है। मैंने तय किया था कि गरीब, पिछड़ों, दलितों व शोषितों को सम्मानित जीवन देना हमारा ध्येय होना चाहिए। हमने बीपीएल परिवारों की न्यूनतम 1.80 लाख रुपये तक सालाना की। ऐसा करने वाला हरियाणा देश का पहला राज्य बना। मुख्यमंत्री अंत्योदय परिवार उत्थान योजना के तहत हमारा लक्ष्य प्रदेश के एक लाख अति गरीब परिवारों की आय बढ़ाना है। पहले चार चरणों में आयोजित अंत्योदय मेलों में करीब 50 हजार परिवारों को बैंकों से ऋण मुहैया कराए गए। हमने प्रधानमंत्री के आह्वान पर 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अभियान चलाया। आज प्रदेश में लड़कियां उच्च शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। लिंगानुपात भी 2014 के 871 से बढ़कर सितंबर, 2023 में 932 हो गया। महिलाओं के प्रति होने वाले अपराधों की सुनवाई के लिए 16 फास्ट ट्रैक अदालतें गठित हुई हैं और 12 वर्ष तक की बच्चियों से बलात्कार में फांसी की सजा का प्रावधान किया गया है। नौकरियों के लिए आवेदन से लेकर चयन तक की प्रक्रिया को ऑनलाइन बनाकर पारदर्शी बना दिया गया है। ग्रुप डी सहित सभी समूहों के लिए सभी लिखित परीक्षाएं आयोजित करने का निर्णय लिया गया। ग्रुप सी और डी पदों के लिए साक्षात्कार रोक दिए गए, जहां पहले परिणामों में हेरफेर किया गया था। कॉमन पात्रता परीक्षा की शुरुआत की, ताकि युवाओं को नौकरी के लिए न तो बार-बार आवेदन करना पड़े और न हर बार फीस देने की नौबत आए। ग्रुप सी के लिए अब तक 11 लाख युवा परीक्षा में बैठ चुके हैं। ग्रुप डी की परीक्षा 22 अक्तूबर को संपन्न हुई, जिसमें 8.51 लाख उम्मीदवार शामिल हुए। बेरोजगारों के लिए भत्ते की व्यवस्था की। नतीजतन राज्य की बेरोजगारी दर पीएलएफएस जुलाई-सितंबर, 2023 के अनुसार, 6.5 प्रतिशत तक सीमित हो गई है, जो राजस्थान और पंजाब से कम है। वर्ष 2014 से पूर्व प्रदेश में नया निवेश आना बंद हो गया था। ऐसे में, नए निवेश के लिए अनुकूल माहौल बनाया गया। भ्रष्टाचार के छिद्रों को बंद करने से राजस्व की हानि भी रोकी गई। राजस्व में उछाल भी दिखने लगा है, जो अर्थव्यवस्था के डिजिटलीकरण का भी असर है। प्रदेश की आर्थिक विकास दर सात प्रतिशत के पार है, तो प्रति व्यक्ति आय 2014 के 1.35 लाख रुपये से बढ़कर जून, 2023 में 2.96 लाख रुपये से अधिक हो चुकी है। मुझे किसानों की हरदम चिंता रहती थी। इसमें भी टेक्नोलॉजी का मेरा अनुभव काम आया। 'मेरी फसल मेरा ब्योरा' योजना से न केवल किसान को उपज बेचने की सहूलियत हो गई है, बल्कि उसका पैसा उनके बैंक खाते में ट्रांसफर होने लगा है। अब तक 85 हजार करोड़ रुपये की राशि सीधे किसानों के खातों में ट्रांसफर की जा चुकी है। हम हरियाणा को एक आदर्श, विकसित राज्य की तरफ ले जाना चाहते हैं। हमने जिन योजनाओं की शुरुआत की है, उन्हें अन्य राज्य भी अपनाने लगे हैं। आगामी एक नवंबर को हरियाणा 57 वर्ष का हो जाएगा। प्रधानमंत्री के नए भारत के निर्माण के लक्ष्य को पूरा करने के लिए हम नए हरियाणा को विकसित करने में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे। आजादी के अमृत काल के समापन पर वर्ष 2047 में हम हरियाणा को देश के एक अग्रणी विकसित राज्य के रूप में देखना चाहते हैं।

युद्ध, अर्थव्यवस्था और मानवता की चुनौतियों के बीच हैरान करती है सैन्य खर्च में बढ़ोतरी

दुनिया भर में शांति को बढ़ावा और संघर्ष की वजहों को कम करने के लिए सैन्य खर्च को बढ़ाया जाना वाकई विचित्र है, खासकर जब दुनिया की 9.3 फीसदी आबादी बेहद गरीबी में रोज 2.15 डॉलर से भी कम पर गुजारा कर रही हो।

पवित्र ग्रंथ बाइबिल कहती है कि अगर कोई तुम्हारे दाएं गाल पर तमाचा मारे, तो बायां गाल भी उसकी ओर कर दो।' ये शब्द कितने ही बुद्धिमानी से भरे हों, लेकिन ये मनुष्यों और राजाओं को अपनी सीमाओं के विस्तार के लिए हथियार उठाने से कभी रोक नहीं पाए। युद्धों में पैसा ही नहीं, लोगों की जिंदगियां भी खर्च हो जाती हैं। आधुनिक युद्धों की शब्दावली जिन लड़ाकू विमानों और मिसाइलों से भरी है, जरा उनके संचालन की लागत पर गौर करें। बहुचर्चित एफ-35 की बात करें, तो अमेरिकी सरकार 2,500 विमानों पर 17 खरब डॉलर खर्च करने की योजना बना रही है यानी कि प्रति विमान पर साढ़े सात करोड़ डॉलर का खर्च आएगा। जब यह उड़ रहा होगा, तब हर घंटे करीब 42 हजार डॉलर धुआं हो रहे होंगे। ज्यादा कुशल माने जाने वाले एफ-15 विमान की हर उड़ान में प्रति घंटे करीब 29 हजार डॉलर का खर्च आता है। आयरन डोम इस्राइल की सुरक्षा प्रणाली में कवच की तरह है। ऐसा अनुमान है कि पूरे इस्राइल में करीब दस आयरन डोम बैटरी हैं। हर बैटरी में 60 से 80 मिसाइलें हैं और हर मिसाइल की कीमत तकरीबन 40 हजार डॉलर है। बीते रविवार को अमेरिकी सरकार ने अरबों डॉलर की अत्याधुनिक थाड प्रणाली भेजने की घोषणा की। बोईंग ने इस्राइल को 1800 जीपीएस आधारित बम किटों की शीघ्र डिलीवरी की घोषणा की, जिनमें से प्रत्येक किट की कीमत करीब 24 हजार डॉलर है। इस महीने की शुरुआत में अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन ने पूर्वी भूमध्य सागर में 13 अरब डॉलर के विमानवाहक पोत यूएसएस गेराल्ड फोर्ड कैरियर स्ट्राइक ग्रुप की तैनाती की घोषणा की। यह ग्रुप 75 लड़ाकू जेट, रडार और मिसाइल लॉन्चर से सुसज्जित है। एक टॉमहॉक मिसाइल की कीमत 15 लाख डॉलर और एक पैट्रियट मिसाइल की कीमत करीब 40 लाख डॉलर है। युद्ध के हथियार वगैरह बनाने वाली कंपनियों के लिए युद्ध मुनाफे का समय होता है। यह शेयरों की कीमतों में आने वाले उतार-चढ़ाव से भी स्पष्ट होता है। सात अक्तूबर के हमलों के बाद इससे जुड़ी कंपनियों के शेयरों में उछाल देखा गया। इस क्षेत्र की शीर्ष दस कंपनियों का वर्तमान बाजार पूंजीकरण 653 अरब डॉलर है। बिजनेस रिसर्च कंपनी द्वारा जारी 2023 की वैश्विक रक्षा बाजार रिपोर्ट कहती है कि 2027 तक रक्षा बाजार का आकार बढ़कर 718 अरब डॉलर का होने की उम्मीद है। ऐसे में सवाल यह उठता है कि युद्धों की इस भारी-भरकम लागत का पैसा कहां से आता है? यह दरअसल, बहुत कुछ भू-राजनीति और घरेलू राजनीति पर निर्भर करता है। अब यूक्रेन के युद्ध को ही लें। 24 फरवरी, 2022 से अमेरिकी सरकार ने 40.4 अरब डॉलर से ज्यादा की सुरक्षा सहायता की प्रतिबद्धता जताई है, जो माल्टा और यमन जैसे देशों की संयुक्त जीडीपी के लगभग बराबर है। इस हफ्ते भी व्हाइट हाउस ने इस्राइल और यूक्रेन का समर्थन करने के लिए कांग्रेस से अतिरिक्त संसाधन उपलब्ध कराने का आह्वान किया है। पर सवाल उठता है कि आतंकवादी समूहों को धन कैसे मिल पाता है? अमेरिका और उसके सहयोगियों का मानना है कि ईरान हमास, हिजबुल्ला और हौथिस जैसे आतंकी गुटों को धन व तकनीकी मुहैया कराता है। लेकिन सवाल फिर भी बना हुआ है कि इतने प्रतिबंधों के बावजूद धन इन गुटों के पास पहुंचता कैसे है? अमेरिकी सांसद एलिजाबे वॉरेन और सौ से ज्यादा दूसरे सांसदों ने अमेरिका के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार जैक सुलिवान को एक पत्र लिखकर इस नई उभरती व्यवस्था की झलक दी। उनका दावा है कि अगस्त, 2021 से जून, 2023 के बीच हमास और फलस्तीनी इस्लामिक जिहाद (पीआईजे) ने क्रिप्टो में 13 करोड़ डॉलर से ज्यादा राशि जुटाने में कामयाबी हासिल की और पीआईजे ने 1.2 लाख डॉलर क्रिप्टो में हिजबुल्ला को दिए। घटनाएं बढ़ीं, तो पैसों का यह आवंटन भी बढ़ा। माना जाता है कि शीत युद्ध की समाप्ति से शांति की स्थापना हुई। लेकिन पिछले तीन दशकों में सैन्य खर्च काफी बढ़ा है। स्टॉकहोम इंटरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट के आंकड़ों के मुताबिक, विश्व सैन्य खर्च 1992 के करीब 1.2 लाख करोड़ डॉलर से बढ़कर 2022 में 2.24 लाख करोड़ डॉलर हो गया है। जब राष्ट्रों को जीडीपी के क्रम में रखा जाता है, तो युद्ध अर्थव्यवस्था दो लाख करोड़ डॉलर से ज्यादा के साथ दुनिया में आठवें स्थान पर फ्रांस के नीचे आती है। सैन्य खर्च करने वालों की सूची में 877 अरब डॉलर के साथ अमेरिका शीर्ष पर है, उसके बाद 292 अरब डॉलर के साथ चीन और 86 अरब डॉलर के साथ रूस आते हैं। दुनिया भर में शांति को बढ़ावा और संघर्ष की वजहों को कम करने के लिए सैन्य खर्च बढ़ाया जाना वाकई दिलचस्प है। विश्व बैंक के एक अनुमान के मुताबिक, दुनिया की 9.3 फीसदी आबादी यानी करीब 70 करोड़ लोग बेहद गरीबी में हैं, जो रोज 2.15 डॉलर से भी कम कमा पाते हैं। मिसाल के लिए, गाजा में रहने वाले हर दस में सात लोग वैश्विक मदद पर निर्भर हैं। मध्य पूर्व का युद्ध कितना लंबा खिंचेगा, यह तो नहीं कह सकते। पर यह जरूर है कि अफगानिस्तान और इराक के युद्धों में अमेरिका ने 80 खरब डॉलर खर्च किए हैं। वाट्सन इंस्टीट्यूट फॉर इंटरनेशनल अफेयर्स के अध्ययन के मुताबिक, अमेरिका में 9/11 हमले के बाद से लाखों सैनिकों और नागरिकों की मौतों और अरबों डॉलर खर्च करने के बावजूद वहां के लोगों में शायद ही शांति आई है।

मुख्यमंत्री योगी दे गए करोड़ों की सौगात

अब विकास के पथ पर रफ्तार पकड़ेगा ये शहर

एजेंसी

बागपत । बागपत जनपद के बड़ौत में जनता वैदिक कॉलेज के मैदान से मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने 351.26 करोड़ रुपये की 311 परियोजनाओं का लोकार्पण व शिलान्यास किया। सीएम ने मंच से बटन दबाकर लोकार्पण व शिलान्यास करते हुए कहा कि बागपत जनपद विकास के पथ पर आगे बढ़ रहा है। सीएम योगी आदित्यनाथ ने 113.64 करोड़ रुपये की 116 परियोजनाओं का शिलान्यास किया, जबकि 237.62 करोड़ रुपये की 195 परियोजनाओं का लोकार्पण किया। बागपत की तीनों विधानसभा में इन परियोजनाओं के माध्यम से महत्वपूर्ण कार्य हुए हैं और कुछ कार्य अभी होने हैं। बागपत में बस अड्डे के निर्माण, 30 प्राथमिक विद्यालयों का कायाकल्प, तालाबों के जीर्णोद्धार, विभिन्न गांवों को जोड़ने के लिए सड़कों के निर्माण-मरम्मत, गढ़ी कलंजरी के पास हिंडन नदी पर पुल निर्माण, अहैड़ा रेलवे हाल्ट पर ओवरब्रिज निर्माण, बागपत में हाईटेक नर्सरी निर्माण होने है। इसके अलावा बावली में बनाए गए केंद्रीय विद्यालय का लोकार्पण, पाबला में राजकीय महाविद्यालय, अमीनगर सराय व सांकरौद में राजकीय आयुर्वेदिक अस्पताल निर्माण हो चुका है।

किस विधनासभा में कितनी परियोजनाएं

विधानसभा	परियोजना
बागपत	115
बड़ौत	102
छपरौली	94

इन विभागों की परियोजना का हुआ लोकार्पण व शिलान्यास

प्रांतीय खंड लोक निर्माण विभागः 197
उत्तर प्रदेश राज्य सेतु निगमः 2
उत्तर प्रदेश राजकीय निर्माण निगमः 2
सी एंड डीएस उत्तर प्रदेश जल निगम नगरीयः 10
ग्राम पंचायतः 11
लघु सिंचाई विभागः 14
भूमि संरक्षण विभागः 13
यूपी स्टेट कंस्ट्रक्शन एंड इंफ्रास्ट्रक्चर से निर्मित आयुर्वेदिक अस्पतालः 2
यूपी प्रोजेक्ट्स कोरपोरेशन से निर्मित स्वास्थ्य केंद्रः 15
जिला अस्पताल में सीसी रोडः1
ग्रामीण अभियंत्रण विभागः 44
उद्यान विभागः 1

मोहन भागवत बोले- दुनिया को धर्म की राह दिखा रहा भारत, रखें श्रद्धा-दान और त्याग की भावना

एजेंसी

सहारनपुर। सहारनपुर जनपद के सरसावा में आज सर संघ संचालक पहुंचे हैं। वह यहां श्रीकृष्ण मंदिर का भूमि पूजन कार्यक्रम में शिरकत कर रहे हैं। पढ़ें ताजा अपडेट। सहारनपुर जनपद के सरसावा के लिए आज का दिन बेहद महत्वपूर्ण है। श्री कृष्ण मंदिर के भूमि पूजन कार्यक्रम में आज यहां देश भर से साधु-संत जुट रहे हैं, जिसमें सर संघचालक मोहन भागवत बतौर मुख्यातिथि शिरकत करने पहुंचे हैं। कार्यक्रम को लेकर पुलिस-प्रशासन भी पूरी तरह से अलर्ट है। सुरक्षा के कड़े बंदोबस्त किए गए हैं। आरएसएस प्रमुख डॉ. मोहन भागवत ने कहा कि भारत में एक विशेषता है कि वह पूरी दुनिया को धर्म की राह दिखा रहा है। सर संघचालक मोहन भागवत कार्यक्रम में करीब दो घंटे रुकने के बाद सहारनपुर के

पंत विहार स्थित श्री कृष्ण ज्ञान मंदिर के रजत जयंती महोत्सव में भी शिरकत करने पहुंचे। आरएसएस प्रमुख डॉ. मोहन भागवत ने कहा कि भारत में एक विशेषता है कि वह पूरी दुनिया को धर्म की राह दिखा रहा है। भले ही पंथ ओर सम्प्रदाय अलग अलग हों, लेकिन काम सभी एक ही कर रहे हैं। धर्म सभी को जोड़कर रखता है। कहा कि धर्म साश्वत है, अगर यह खत्म हुआ तो श्रृष्टि भी खत्म हो जाएगी। इसलिए कुशलतापूर्वक कार्य करें। कभी भी अपने अंदर अंहकार मत लाओ। पवित्रता जरूरी है। भागवत गीता में भारत के जीवन का निचोड़ है। व्यक्ति को श्रद्धा, दान और त्याग की भावना रखनी होगी। जो भी करो वह उत्तम होना चाहिए। कहा कि जीवन मे आने वाली परिस्थितियों से भागना नहीं है, इनका मुकाबला करो। यदि भाग गए तो जिंदा होते हुए भी मौत के समान है। प्रकृति के साथ चले, यह धर्म की आवश्यकता है। दुनिया मे ऐसे भी लोग हैं जो दुष्ट हैं, उनसे घबराना नहीं है। हमारी किसी से दुश्मनी नहीं है। सभी को साथ लेकर चले।

देवबंद में भी बना देंगे श्री कृष्ण मंदिर

वहीं आचार्य कारंजेकर बाबा ने कहा कि हमने देवबंद में श्री कृष्ण मंदिर का निर्माण करने के लिए लोक निर्माण विभाग के मंत्री से जमीन मांगी है। उन्होंने वहां पर जमीन दिलाने का आश्वासन दिया है अगर जमीन मिलती है तो हम देवबंद में भी श्री कृष्ण मंदिर बना देंगे। इस महोत्सव के बाद सरसंघचालक दिल्ली के लिए रवाना होंगे। सुरक्षा के मद्देनजर इसमें पांच सीओ, 16 इंस्पेक्टर, 50 कांस्टेबल, 80 होमगार्ड, यातायात पुलिस और स्थानीय पुलिस को भी तैनात किया गया है।

एक नज़र

अयोध्या में राममय हो गई कंगना, इस अंदाज में नजर आईं, बोलीं- सबसे बड़ा तीर्थ बनेगा, तस्वीरें

एजेंसी

अयोध्या । फिल्म अभिनेत्री कंगना रनौत बृहस्पतिवार को रामलला के दर्शन के लिए अयोध्या पहुंची। इस मौके पर उन्होंने राम मंदिर आंदोलन में जान गंवाने वाले स्वयंसेवकों को याद किया और कहा कि अयोध्या में बना राम मंदिर हिंदुओं के सदियों के संघर्ष का परिणाम है। आने वाले समय में अयोध्या हिंदुओं का सबसे बड़ा तीर्थ बनेगा। यहां पर 22 जनवरी को प्राण प्रतिष्ठा है। यह हमारी पीढ़ी का सौभाग्य है कि आज हम यह दिन देख पा रहे हैं जो कि निश्चित रूप से मोदी सरकार के कारण ही संभव हो सका है। उन्होंने रामलला के दरबार में हाजिरी लगाने के बाद मीडिया से बातचीत में कहा कि अयोध्या वैटिकन सिटी की तर्ज पर सबसे बड़ा धार्मिक केंद्र बनने जा रही है। यह सनातन संस्कृति का भी सबसे बड़ा केंद्र होगा। उन्होंने कहा कि 600 सालों तक चले संघर्ष के बाद अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण हो रहा है। करोड़ों लोगों की भावनाएं राम मंदिर से जुड़ी हुई हैं यह दुनिया का सबसे सुंदर तीर्थ स्थान बनने जा रहा है। कंगना ने बताया कि उनकी फिल्म तेजस जो कि वायु सेना पर आधारित है में भी राम मंदिर की अहम भूमिका रहेगी।

एमडीएम में मेन्यू की हो रही अनदेखी, बच्चों को परोसा जा रहा खराब खाना; जिम्मेदार बने उदासीन

एजेंसी

फिरोजाबाद। फिरोजाबाद में एमडीएम में बच्चों को दाल के नाम पर पीला पानी तो रोटी की जगह चावल परोसा जा रहा है। एमडीएम में निर्धारित मेन्यू की अनदेखी की जा रही है। उत्तर प्रदेश के फिरोजाबाद में मध्यान्ह भोजन को स्वाद के साथ ही सेहतमंद बनाने के लिए शासन ने मेन्यू निर्धारित किया है। मोटा अनाज शामिल किए जाने की तैयारी है। लेकिन नगर क्षेत्र के अधिकांश स्कूलों में मध्यान्ह भोजन में सप्ताह के छह दिन चावल परोसे जाते हैं। बृहस्पतिवार को रोटी-सब्जी या दाल का वितरण होना था, लेकिन एनजीओ ने बच्चों को दाल के नाम पर महज पीला पानी परोसा। शासन से निर्धारित मैन्यू की अनदेखी पर शिक्षाधिकारी भी चुप्पी साधे हैं। जिन स्कूलों में मध्यान्ह भोजन शिक्षक पकवाते हैं, वहां यदि मैन्यू के अनुसार भोजन नहीं परोसा गया तो कार्रवाई हुई हैं। लेकिन, एनजीओ द्वारा कई महीनों से मैन्यू के अनुसार रोटी-सब्जी या दाल नहीं परोसी जा रही है। बृहस्पतिवार को स्कूलों में दाल-चावल पहुंचे। कई स्कूलों में शिक्षकों का कहना था कि दाल बेहद पतली थी। स्कूलों के शिक्षकों ने बताया कि बुधवार को दूध का वितरण होता है, लेकिन एनजीओ द्वारा कई महीनों से दूध का वितरण भी नहीं किया जा रहा है। नगर शिक्षाधिकारी सुधीर गुप्ता ने बताया कि हम शिक्षकों से जानकारी लेंगे कि मैन्यू में क्या आया। अगर मैन्यू के अनुसार खाना वितरण नहीं हो रहा है तो एनजीओ खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। मिड डे मील का वितरण करने वाली संस्था के राजकुमार श्रीवास्तव ने बताया कि वह दो दिन से अलीगढ़ में हैं, जानकारी करने के बाद भी कुछ बता सकेंगे।

शासन से मिलता है गेहूं-चावल

शासन से खाद्यान्न के रूप में गेहूं और चावल दिया जाता है। उसे पकाने के लिए कन्वर्जन कास्ट अलग से प्रदान की जाती है। लेकिन, एनजीओ रोटी नहीं परोस रहा। सवाल उठ रहा है आखिर बड़ी मात्रा में गेहूं कहां जा रहा है।

दहेज हत्या में पति को दस साल की सजा, साक्ष्यों के अभाव में सास-ससुर बरी, दबा दिया था बहू का गला

एजेंसी

अलीगढ़। शादी के बाद से ही ससुराल वाले पूजा से अतिरिक्त दहेज की मांग करने लगे। इसे लेकर कई बार पंचायत भी हुई, लेकिन ससुराल वाले दहेज की मांग लगातार करते रहे। दहेज की मांग पूरी नहीं होने पर 26 अगस्त 2017 को पूजा की ससुराल वालों ने गला दबाकर हत्या कर दी थी। मथुरा में एडीजे फास्ट ट्रैक कोर्ट राकेश सिंह की अदालत से 26 अक्तूबर को दहेज मृत्यु में आरोपी पति को दोषी करार देते हुए दस साल की सजा और चार हजार रुपये का जुर्माना लगाया है। वहीं, सास और ससुर को साक्ष्यों के अभाव में बरी कर दिया गया है। सहायक शासकीय अधिवक्ता भगत सिंह आर्य ने बताया कि अलीगढ़ के पालीमुकीमपुर निवासी प्रेम सिंह ने पुत्री रितु उर्फ पूजा की शादी आकाश पुत्र सुरेश चंद्र निवासी रघुवीर बिहार कॉलोनी, जमुनापार के साथ 28 फरवरी 2017 को की थी। आरोप था कि शादी के बाद से ही ससुराल वाले पूजा से अतिरिक्त दहेज की मांग करने लगे। इसे लेकर कई बार पंचायत भी हुई, लेकिन ससुराल वाले दहेज की मांग लगातार करते रहे। दहेज की मांग पूरी नहीं होने पर 26 अगस्त 2017 को पूजा की ससुराल वालों ने गला दबाकर हत्या कर दी। बेटी की हत्या कर दिए जाने का पता लगने के बाद मायका पक्ष के लोग मौके पर पहुंच गए। पिता प्रेम सिंह ने पति आकाश, सास मीना देवी व ससुर सुरेशचंद के खिलाफ दहेज की खातिर बेटी की हत्या किए जाने का मुकदमा दर्ज जमुनापार थाने में दर्ज कराई थी।

कपिल देव सिंह की हत्या मामले में मुख्तार अंसारी दोषी करार, कल सुनाई जाएगी सजा

एजेंसी

गाजीपुर। मुख्तार अंसारी पर गैंगस्टर के मामले में आज सुनवाई हुई। न्यायाधीश ने उसे दोषी करार दिया है। मामले में कल सजा सुनाई जाएगी। माफिया मुख्तार अंसारी पर गैंगस्टर के मामले में आज सुनवाई हुई। न्यायाधीश ने उसे दोषी करार दिया है। मामले में कल सजा सुनाई जाएगी। बता दें कि इससे पहले भी गैंगस्टर के मामले में मुख्तार अंसारी को सजा हो चुकी है। फैसला सुनाए जाने के दौरान मुख्तार अंसारी को बांदा जेल से वीसी के जरिए पेश किया गया। 2009 में करंडा थाना क्षेत्र में हुई हत्या और हत्या के प्रयास को आधार मानकर मुख्तार पर केस दर्ज किया गया था। करीब 14 साल पहले कपिल देव सिंह की हत्या कर दी गई थी। आज एमपीएमएलए कोर्ट ने अपना फैसला सुना दिया है।

जेल में बंद आजम ने मिलने से किया इनकार, कांग्रेस अध्यक्ष बोले- प्रशासन ने बनाया दबाव

एजेंसी

सीतापुर । यूपी कांग्रेस अध्यक्ष अजय राय सीतापुर जेल में बंद सपा नेता आजम खां से मुलाकात करने आ रहे थे। बताया जा रहा है कि आजम ने उनसे मिलने से इनकार कर दिया। जेल प्रशासन नियमों का हवाला देते हुए कह रहा है कि सप्ताह में सिर्फ एक ही मुलाकात करवाई जा सकती है। सीतापुर जिला कारागार में बंद समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव आजम खां ने कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष अजय राय से मिलने से इनकार कर दिया है। अजय राय गुरुवार को उनसे मुलाकात करने सीतापुर पहुंचे। जेल प्रशासन के अधिकारियों ने उन्हें बताया कि सपा नेता आजम उनसे मिलना नहीं चाहते हैं। इसके बाद प्रदेश अध्यक्ष अजय राय ने जेल प्रशासन पर गंभीर आरोप लगाए। उन्होंने कहा कि जेल प्रशासन

सरकार के दबाव में काम कर रहा है। उन्हें मिलने नहीं दिया जा रहा है। न तो आजम खां से फोन पर वार्ता कराई गई और न ही उनसे कुछ ऐसा लिखित दिया गया कि आजम खां मिलना नहीं चाहते हैं।

आजम खां के परिवार को प्रताड़ित कर रही भाजपा

अजय राय ने कहा कि भाजपा आजम खां, उनकी पत्नी और बेटे को प्रताड़ित कर रही है। यह ज्यादती ठीक नहीं है। वह आजम खां की लड़ाई जरूर लड़ेंगे। हम सब उनके दुख में शामिल हैं। ऐसा माना जा रहा था कि मुस्लिम वोट बैंक को साधने में कांग्रेस इस मुलाकात से असर डाल सकती है। जेल के सूत्रों से मिली खबर के मुताबिक आजम खां ने उनसे मिलने से इनकार कर दिया। जैसे ही यह खबर जेल से बाहर आई कांग्रेस पदाधिकारियों में खलबली मच गई। सीतापुर पहुंचने पर अजय राय ने कहा कि भाजपा की सरकार आजम खां व उनके परिवार को प्रताड़ित कर रही है। दुख की इस घड़ी में हम उनके साथ खड़े।

ट्रक ने स्कूल वैन को मारी टक्कर, नौ बच्चे घायल, हाईवे पर मची चीख-पुकार

एजेंसी

शाहजहांपुर। मीरानपुर कटरा में नेशनल हाईवे पर ओवरटेक करते समय ट्रक ने पीछे से स्कूल वैन को जोरदार टक्कर मार दी। इससे वैन में सवार नौ छात्र-छात्राएं घायल हो गए। हादसे के बाद लोगों ने ट्रक चालक को पकड़ लिया। शाहजहांपुर के मीरानपुर कटरा में लखनऊ-दिल्ली राष्ट्रीय राजमार्ग पर बृहस्पतिवार को स्कूली वैन को ट्रक ने पीछे से टक्कर मार दी। इससे वैन में सवार नौ बच्चे घायल हो गए। घटना के बाद आसपास के लोग बचाव के लिए दौड़ पड़े। बच्चों को सीएचसी ले जाया गया। दो बच्चों की हालत गंभीर होने पर बरेली रेफर कर दिया गया। पुलिस ने ट्रक को नगरिया मोड़ के पास से पकड़ लिया। रेलवे स्टेशन मार्ग पर स्थित एसएसडीएम पब्लिक स्कूल में बृहस्पतिवार दोपहर करीब एक बजे छुट्टी हुई थी। स्कूल के 13 बच्चों को वैन में बैठाकर चालक प्रमोद घर छोड़ने के लिए रवाना हुआ था। मोहल्ला बिल्लीगंज में चार बच्चों को उनके घर पहुंचाने के बाद करीब दो बजे लखनऊ-दिल्ली राष्ट्रीय राजमार्ग पर बरेली की ओर से आ रहे तेज रफ्तार ट्रक के चालक ने स्कूल वैन को पीछे से टक्कर मार दी। जोरदार टक्कर लगने से नौ बच्चे जख्मी हो गए। घटना के बाद ट्रक को लेकर चालक शाहजहांपुर की ओर भाग गया। हादसे के बाद चीख-पुकार मच गई। आसपास के लोग भी मौके की ओर दौड़ पड़े और वैन से बच्चों को निकाला। छात्र-छात्राओं को तुरंत ही सीएचसी में भर्ती कराया गया। हालत गंभीर होने के चलते मोहल्ला इस्लामनगर निवासी लविश गुप्ता की आठ वर्षीय पुत्री भूमि

गुप्ता व गांव मरेना के जगतवीर गंगवार के आठ वर्षीय पुत्र अभय गंगवार को बेहोशी की हालत में बरेली रेफर कर दिया गया है। शेष का उपचार सीएचसी पर चल रहा है। रेफर किए गए बच्चों की हालत ठीक है।

इनको भी आई चोट

ट्रक की टक्कर लगने से वैन में सवार ग्राम मरेना निवासी जगतवीर गंगवार की दस वर्षीय पुत्री आरुषि गंगवार, अशोक कुमार का दस साल का बेटा ऋतिक कुमार, नीरज कुमार गंगवार की सात वर्षीय पुत्री आराधना गंगवार और आराध्या गंगवार, मोहल्ला अफरीदी निवासी सईद अहमद अंसारी की सात वर्षीय बेटी जैनम, मोहल्ला सरायं निवासी रामवीर की सात साल की पुत्री कसक वर्मा को सीएचसी पर ले जाया गया। कुछ की हालत सामान्य होने के चलते उन्हें छुट्टी दे दी गई। शेष बच्चों का प्राथमिक इलाज किया गया। हादसे के बाद बच्चे काफी घबराकर सहम गए थे।

हादसे में परिजनों में मच गई खलबली

स्कूल से छुट्टी होने के बाद आमतौर पर सभी बच्चे तीन बजे तक अपने घर पहुंच जाते हैं, लेकिन बृहस्पतिवार को स्कूली वैन में हादसे के चलते अभिभावकों के पास समय से पहले फोन पहुंचा तो उनमें खलबली मच गई। अपने लाडले की चिंता में अभिभावक दौड़े हुए सीएचसी पहुंचे। हालांकि, डॉक्टर ने तबीयत ठीक होने की बात कहकर उन्हें सांत्वना दी। इस दौरान सीएचसी पर लोगों की भीड़ लग गई।

पुलिस ने नगरिया चौकी के पास पकड़ा ट्रक

बताते हैं कि किसी वाहन को ओवरटेक करने के फेर में ट्रक ने वैन में टक्कर मार दी थी। हादसे के बाद चालक ट्रक को भगा ले गया। पुलिस ने तिलहर थाना क्षेत्र के नगरिया पुलिस चौकी के पास ट्रक को पकड़ लिया। चालक को हिरासत में ले लिया गया है। एसपी देहात संजीव वाजपेयी ने बताया कि ट्रक चालक ने तेजी व लापरवाही से चलाते हुए वैन को टक्कर मारी। हादसे में नौ बच्चे घायल हुए हैं। चालक को हिरासत में ले लिया गया है।

त्योहार स्पेशल ट्रेनों में तेजी से हो रही टिकट बुकिंग, बढ़ रही वेटिंग; बरेली से गुजरेंगी 16 गाड़ियां

एजेंसी

बरेली। रेलवे ने बरेली होते हुए 16 त्योहार स्पेशल ट्रेनों का एलान किया है। इनमें चार ट्रेनों का संचालन शुरू हो गया है। इन ट्रेनों में तेजी से बुकिंग हो रही है, जिससे वेटिंग भी बढ़ती जा रही है। त्योहारी सीजन शुरू होने के साथ ही ट्रेनों में यात्रियों की भीड़ बढ़ने लगी है। नियमित ट्रेनें पहले से फुल चल रही हैं। उनमें क्षमता से ज्यादा यात्री सफर कर रहे हैं। रेलवे ने बरेली होते हुए 16 त्योहार स्पेशल ट्रेनों का एलान किया है। इनमें चार ट्रेनों का संचालन शुरू हो गया है। चार अन्य ट्रेनों का संचालन नंबर के पहले सप्ताह में शुरू हो जाएगा। त्योहार स्पेशल इन ट्रेनों में भी प्रतीक्षा सूची लंबी होती जा रही है। जम्मू, पंजाब, हरियाणा और दिल्ली से बरेली होते हुए पूर्वांचल और बिहार जाने वाली विशेष ट्रेनों में वेटिंग बढ़ रही है। 04646/04645 जम्मूतवी-बरौनी-जम्मूतवी एक्सप्रेस एक-एक फेरा ले चुकी हैं। एसी-थ्री और चेयरकार वाली दोनों

ट्रेनों में कंफर्म सीट को लेकर मारामारी है। प्रमुख तिथियों में इस ट्रेन में वेटिंग 30 के पार पहुंच गई है। हालांकि, बीच-बीच में कुछ तिथियों में चेयरकार में सीटें उपलब्ध हैं। बुधवार से 04678/04677 फिरोजपुर-पटना-फिरोजपुर त्योहार स्पेशल का भी संचालन शुरू हो गया है। इन दोनों ट्रेनों में भी यही स्थिति है।

इन ट्रेनों में भी हो रही तेजी से बुकिंग 04518 चंडीगढ़-गोरखपुर एक्सप्रेस दो से 30 नवंबर तक प्रत्येक बृहस्पतिवार को संचालित होगी। 04517 गोरखपुर-चंडीगढ़ एक्सप्रेस तीन नवंबर से एक दिसंबर तक प्रत्येक शुक्रवार को संचालित होगी। 04530 बठिंडा-बनारस एक्सप्रेस पांच से 29 नवंबर तक प्रत्येक रविवार और बुधवार को संचालित होगी। 04529 बनारस-बठिंडा एक्सप्रेस छह से 30 नवंबर तक प्रत्येक सोमवार और बृहस्पतिवार को संचालित होगी। मुख्य वाणिज्य निरीक्षक राकेश सिंह ने बताया कि यात्रियों की सुविधा के लिए त्योहार स्पेशल ट्रेनों का संचालन किया जा रहा है। इनमें बुकिंग शुरू हो चुकी है। कुछ ट्रेनों में अतिरिक्त कोच भी लगाए जाएंगे।

सात नवंबर तक मार्ग बदल कर चलाई जाएंगी आठ ट्रेनें

पूर्वोत्तर रेलवे के औड़िहार-भटनी रेल खंड में दोहरीकरण और कुछ स्थानों पर प्री-नान इंटरलॉकिंग कार्यों के चलते ब्लॉक के बीच रेलवे ने कुछ ट्रेनों का रूट बदलने का निर्णय लिया है। इनमें से आठ ट्रेनें बरेली होकर गुजरती हैं। रेलवे ने बुधवार को ट्रेनों के रूट परिवर्तन संबंधी सूचना जारी कर दी है। 15531 सहरसा-अमृतसर जनसाधना एक्सप्रेस 29 अक्तूबर और पांच नवंबर, 15651 गुवाहाटी-जम्मूतवी लोहित एक्सप्रेस 30 अक्टूबर और छह नवंबर, 13019 हावड़ा-काठगोदाम बाघ एक्सप्रेस छह नवंबर, 14617 बनमंखी-अमृतसर जनसेवा सात नवंबर, 12491 बरौनी-जम्मूतवी मोरध्वज एक्सप्रेस 29 अक्तूबर और पांच नवंबर, 15909 डिब्रूगढ़-लालगढ़ एक्सप्रेस छह नवंबर को निर्धारित रूट सीवान-भटनी-गोरखपुर के स्थान पर सीवान-थावे-कसानगंज-गोरखपुर के रास्ते चलाई जाएंगी। इसके अलावा 15232 अमृतसर-सहरसा एक्सप्रेस और 12204 अमृतसर-सहरसा गरीब रथ एक्सप्रेस छह नवंबर को निर्धारित रूट गोरखपुर-भटनी-सीवान के स्थान पर गोरखपुर-कसानगंज-थावे-सीवान के रास्ते चलाई जाएंगी। वहीं, 13020 काठगोदाम-हावड़ा बाघ एक्सप्रेस को काठगोदाम से एक घंटे की देरी से चलाया जाएगा।

देरी से चलेंगी राजधानी, काशी विश्वनाथ एक्सप्रेस

मुरादाबाद-गाजियाबाद के बीच गढ़मुक्तेश्वर रेलवे यार्ड में उच्चीकरण के कार्यों के बीच दो दिन ब्लॉक लिया जाएगा। इस दौरान तीन ट्रेनों को देरी से चलाया जाएगा। इनमें दो राजधानी एक्सप्रेस शामिल हैं। 20506 नई दिल्ली-डिब्रूगढ़ राजधानी एक्सप्रेस और 20504 नई दिल्ली-डिब्रूगढ़ राजधानी एक्सप्रेस को 26 अक्तूबर और दो नवंबर को 40-40 मिनट की देरी से चलाया जाएगा। इसके अलावा 15128 नई दिल्ली-वाराणसी काशी विश्वनाथ एक्सप्रेस को 26 और 27 अक्तूबर को 30 मिनट की देरी से चलाया जाएगा।

संयुक्त पुलिस टीम ने मुठभेड़ में बीस हज़ार का इनामिया हाशिम उर्फ बग्घा को किया गिरफ्तार हुआ घायल

अपर पुलिस अधीक्षक उत्तरी आशुतोष मित्रा ने प्रेस वार्ता कर मिश्रा ने दी जानकारी

द अचीवर टाइम्स अनुराग मल्होत्रा

बाराबंकी। पुलिस अधीक्षक बाराबंकी दिनेश कुमार सिंह द्वारा अपराध पर प्रभावी नियंत्रण हेतु अपराधियों के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान के तहत बाराबंकी पुलिस द्वारा सख्त कार्यवाही की जा रही है। इसी क्रम में बीती रात्रि थाना जहांगीराबाद क्षेत्रान्तर्गत ग्राम कनौजिया व चन्दौली के बीच छोटी पुलिया के पास स्वाटव सर्विलांस व थाना जहांगीराबाद की संयुक्त पुलिस टीम द्वारा चेकिंग की जा रही थी कि एक संदिग्ध वाहन आता हुआ दिखाई दिया जिसे पुलिस टीम द्वारा रोकने का प्रयास किया । पुलिस टीम को देखकर गिरफ्तारी से बचने हेतु बदमाश द्वारा पुलिस टीम पर फायरिंग की गई। पुलिस टीम द्वारा की गई आत्मरक्षार्थ फायरिंग में बदमाश के पैर में गोली लगने से घायल हो गया। घायल अभियुक्त हाशिम उर्फ बग्घा पुत्र राजेन्द्र प्रसाद निवासी टिकरिया थाना देवा को उपचार हेतु अस्पताल में भर्ती कराया गया। अभियुक्त के कब्जे से 1 तमंचा .315 बोर 2 खोखा तथा 1 जिंदा कारतूस व एक अदद मोटर साइकिल बरामद किया गया है । अभियुक्त के विरुद्ध थाना जहांगीराबाद में कई मुक़दमे पंजीकृत हैं । अभियुक्त थाना जहांगीराबाद आर्म्स एक्ट में वांछित व 20000/-रुपये का इनामिया है जिसके विरूद्ध विभिन्न थानों पर लगभग 12 से अधिक अभियोग पंजीकृत हैं। अभियुक्त हाशिम उर्फ बग्घा इसके अतिरिक्त कोतवाली नगर व थाना घुंघटेर पर पंजीकृत अभियोगों में भी वांछित था तथा थाना देवा का हिस्ट्रीशीटर (हिस्ट्रीशीट संख्या ,-56) अपराधी भी है। पूछताछ से ज्ञात हुआ कि अभियुक्त गोकशी, मादक पदार्थ तस्करी व गैंगस्टर एक्ट का अपराधी है तथा अपने गिरोह के सदस्यों हफीज उल्ला पुत्र वसी उल्ला निवासी बांसा थाना मसौली हाल पता जमाल कमाल तकिया थाना देवा, नूर आलम पुत्र जाहिद अली निवासी रसौली थाना सफदरगंज ,महबूब आलम पुत्र जमाल वारिस निवासी जमाल कमाल तकिया थाना देवा , मिथुन पुत्र हेमराज निवासी नटखेड़ा पारा थाना गुडम्बा जनपद लखनऊ हाल पता अछई का पुरवा थाना देवा ,आलोक उर्फ सोनू पुत्र राम चन्द्र निवासी पलिया मसूदपुर थाना जहांगीराबाद, जुबेर पुत्र जाहिद अली निवासी रसौली थाना सफदरगंज , शाहिद पुत्र उम्मेद अली निवासी रसौली थाना सफदरगंज हाल पता आलापुर थाना कोतवाली नगर जिला बाराबंकी के साथ मिलकर थाना जहांगीराबाद क्षेत्रान्तर्गत ग्राम निगरी के पास एक बाग में व मार्च के महीने में थाना कोतवाली क्षेत्रान्तर्गत कुरौली कट से मौथरी रोड के पास तथा थाना घुंघटेर क्षेत्रान्तर्गत मुनेश्वर में कब्रिस्तान के पास गोवंशीय पशुओं का वध करके मांस को ले जाकर जनपद लखनऊ में बेच दिया था द्वारा गिरोह बनाकर गोवंशीय पशुओं का वध कर मांस को जनपद बाराबंकी व लखनऊ तथा आस पास के जनपदों में बेच दिया जाता है तथा प्राप्त रुपयों को आपस में बांट लेते हैं। अभियुक्त के साथी हफीज उल्ला , नूर आलम , महबूब आलम ,मिथुन ,आलोक उर्फ सोनू , जुबेर , शाहिद को पूर्व में ही गिरफ्तार कर पहले ही जेल भेजा जा चुका है। अभियुक्तों को गिरफ्तार करने वाली पुलिस टीम में स्वाट टीम उ0नि0 अमर कुमार चौरसिया प्रभारी स्वाट टीम ,उ0नि0 संजीव प्रकाश सिंह, उ0नि0 अभिमन्यु सिंह सर्विलांस सेल उ0नि0 रमाकान्त भारतीय प्रभारी सर्विलांस सेल के साथ थाना जहांगीराबाद थानाध्यक्ष अजय कुमार सिंह थाना जहांगीराबाद,व0उ0नि0 धनीराम वर्मा, उ0नि0 सुधाकर यादव, उ0नि0 अवधेश कुमार, उ0नि0 अशोक कुमार, उ0नि0 विश्वनाथ यादव आदि मौजूद रहे

युवक ने यमुना में लगाई छलांग

खर्च के लिए पैसा न मिलने पर आत्म हत्या करने का किया प्रयास

संवाददाता

कालपी जालौन। नगर के मोहल्ला हरिगंज निवासी एक युवक ने मां से खर्च के लिए रुपए न मिलने पर यमुना पुल से यमुना नदी में छलांग लगा दी स्थानीय पुलिस की मदद से गोताखोरों से युवक की तलाश की जा रही है बुधवार को दोपहर 3ः00 के लगभग नगर के हरिगंज निवासी विमल सोनकर पुत्र माता प्रसाद सोनकर उम्र 35 वर्ष खर्च के लिए अपनी मां से कुछ रुपए की मांग की थी लेकिन मां ने खर्च के लिए रुपए देने से मना कर दिया जिससे वह नाराज होकर घर से निकलकर यमुना पुल की ओर चला आया जहां पर उसने अपने कपड़े चप्पल उतार कर यमुना नदी के गहरे पानी में छलांग लगा दी यह दृश्य पुल से गुजर रहे लोगों के अलावा यमुना नदी में मछली का शिकार कर रहे मछुआरों में भी देखा और उसकी सहायता करने की कोशिश की लेकिन युवक का कहीं पता नहीं चल सका इसकी जानकारी जब उसके परिजनों को हुई तो सुबह मौके पर पहुंच कर युवक के कपड़ों एवं चप्पलों के आधार पर पहचान की गई है वहीं युवक के यमुना में कूदने की जानकारी पाकर मौके पर आई पुलिस ने युवक की स्थानीय गोताखोरों से तलाश शुरू कर दिए परिजनों ने बताया युवक पांच भाई और दो बहने हैं यह दूसरे नंबर पर का भाई है युवक की एक 5 साल की पुत्री भी है परिजनों ने यह भी बताया युवक की पत्नी अभी अपने कानपुर देहात के मोहनपुरा पुरवा अपने मायके गई हुई है

एक नज़र

25000/-हजार का इनामियां बदमाश गिरफ्तार

अमित कुमार यादव संवाददाता

कालपी जालौन। पुलिस अधीक्षक जालौन इरज राजा के आदेशानुसार ,आपरेशन पाताल, के अन्तर्गत पुरे जिले में चेकिंग, संदिग्ध व्यक्ति से पूंछ तांछ्वाहन चेकिंग ,पुलिस का धर पकड़ अभियान चलाया जा रहा है। इसी के अंतर्गत 25अक्टूबर को एक मुखबिर के द्वारा मिली सुचना पर आटा थाना प्रभारी के नेतत्व्व वाली टीम ने एक 25000/-का इनामियाँ बदमाश इस्माईल पुत्र हसन निवासी जल्लापुर सिकंदरा थाना राजपुर कानपुर देहात को चमारी कट के पास मंदिर गेट के सामने ग्राम चमारी से गिरफ्तार किया गया है। आटा पुलिस ने इस शातिर अपराधी को गिरफ्तार कर उस पर विधिक कार्यवाही शुरू कर दी। अभियुक्त का अपराधिक इतिहास काफ़ी बडा रहा है।

श्रद्धा भाव से किए माता रानी को जवारे अर्पण

संवाददाता

एट जालौन। डाकोर ब्लॉक के अंतर्गत आने वाली ग्राम सभा चिल्ली में शारदीय नवरात्रि पवन पर्व के अवसर पर पांडा प्रमोद शर्मा के नेतृत्व में बड़ी श्रद्धा भाव से मां दुर्गा जवारे स्थापित किए गए 0 9 दिन तक भक्ति भाव से माँ की सेवा कर दसवीं के दिन माँ काली माता धन्यजु बाबा मनसा देवी माता एकरावाली माता माँ शारदा माता 1 बैरागढ़ धाम आदि पांच देवी स्थलों पर जवारे चढ़ाए गए और माँ की सुन्दर सुंदर परंपरागत अक्षरी देवीभजन का गायन करते हुए गाजे वाजे के साथ हर्षोल्लास व श्रद्धा भाव से माता जी को जबारे चढ़ाये गए मुख्य सहयोगी श्रद्धालु इस प्रकार रवि शर्मा गजराज शर्मा रमेश कुशवाहा सीताराम शर्मा राम लखन सविता राम सनेही वृजपाल हरिशचंद सत्यम राज शर्मा व विमलेश मिथलेश शर्मा पुष्पा शर्मा प्रीति शर्मा रानी शर्मा विमलेश शर्मा मूर्ति कुशवाहा राज कुमारी कुशवाहा गौरी शर्मा खुशी शर्मा रिया शर्मा पीयूष शर्मा आदि समस्त ग्रामवासी मौजूद रहे।

समस्त थाना क्षेत्र में पड़ने वाले बैंकों एटीएम विभिन्न वित्तीय संस्थानों की चेकिंग की गई

संवाददाता

उरई जालौन । जनपद जालौन के क्षेत्राधिकारी एवं थाना प्रभारी व चौकी प्रभारी मय पुलिस टीम द्वारा थाना व चौकी क्षेत्र में पड़ने वाले बैंकों एवं एटीएम व विभिन्न वित्तीय संस्थानों में चेकिंग की गयी। चेकिंग के दौरान सराफा बाजार व बैंक में लगे अलार्म एवं सीसीटीवी कैमरों को चेक किया गया कि सही प्रकार से कार्य कर रहे है या नही शाखा प्रबंधक से इस सम्बन्ध में वार्ता की गयी। बैंक डयूटी में लगे पुलिसकर्मियों को चेक कर सतर्कता पूर्वक डयूटी करने हेतु निर्देश दिये गये। बैंक परिसर में संदिग्ध व्यक्तियों से पूछताछ की गयी एवं अनावश्यक रूप से बैठे व्यक्तियों को बैंक परिसर से बाहर किया गया।

हमीरपुर-कालपी हाईवे पर अनियंत्रित कार पेड़ से टकराई, दो लोगों की मौत और एक घायल

एजेंसी

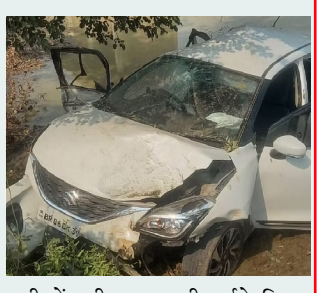

कालपी (जालौन)। पुलिस ने घायल को मेडिकल कॉलेज पहुंचाया और शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। वहीं डॉक्टरों ने घायल की गंभीर हालत को देखते हुए मेडिकल कॉलेज झांसी के लिए रेफर कर दिया है। जालौन के कालपी में हमीरपुर-कालपी हाईवे स्थित जोल्हूपुर मोड़ के पास कार अनियंत्रित होकर पेड़ से टकरा गई, जिससे कार सवार दो लोगों की मौके पर ही मौत हो गई। जबकि एक युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने घायल को मेडिकल कॉलेज पहुंचाया और शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। वहीं डॉक्टरों ने घायल की गंभीर हालत को देखते हुए मेडिकल कॉलेज झांसी के लिए रेफर कर दिया है। कालपी कोतवाली क्षेत्र के मटरा गांव में नवरात्र के पर्व पर सोमवार को भंडारा किया गया था।

एसपी ने देवां मेला एवं प्रदर्शनी का भ्रमण किया दिए सख्त निर्देश

द अचीवर टाइम्स संवाददाता बाराबंकी। पुलिस अधीक्षक बाराबंकी दिनेश कुमार सिंह द्वारा सुरक्षा व्यवस्था के दृष्टिगत थाना देवा क्षेत्रान्तर्गत आयोजित होने वाले देवा मेला एवं प्रदर्शनी का भ्रमण कर सम्बन्धित को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गये। साथ में देवां कोतवाली प्रभारी पंकज सिंह रहे मौजूद

जिलाधिकारी तथा मुख्य विकास अधिकारी को माननीय प्रभारी मंत्री नरेंद्र कश्यप ने की सराहा

सल्लियाँ ग्राम में बनी गौशाला बन सकती है आदर्श : माननीय मंत्री

द अचीवर टाइम्स फसाद खान

शाहजहांपुर। प्रभारी मंत्री नरेंद्र कश्यप ने खन्नौत नदी पर निर्माणाधीन सेतु तथा सल्लियाँ में बनी गौशाला का निरीक्षण किया। सर्वप्रथम मंत्री जी खन्नौत नदी पर निर्माणाधीन पुल के निरीक्षण हेतु पहुंचे। मंत्री जी ने निर्माण कार्य को संतोषजनक बताया । इस दौरान उन्होंने अधिशासी अभियंता रथिन सिन्हा तथा महेंद्र पाल की सराहना भी की। इसके पश्चात माननीय प्रभारी मंत्री जी ने सलिया ग्राम में स्थित गौशाला का भी निरीक्षण किया। गौशाला में सारी व्यवस्थाएं संतोष जनक पाए जाने पर माननीय मंत्री जी ने जिलाधिकारी, मुख्य विकास अधिकारी तथा अन्य संबंधित अधिकारियों की सराहना की। उन्होंने कहा कि सलिया में स्थित गौशाला आदर्श गौशाला भी बन सकती है। गौशाला में गोबर गैस प्लांट भी लगाया जा रहा है तथा गर्भधारण कर चुकी गायों के लिए अलग से टीन शेड की व्यवस्था है माननीय मंत्री जी ने इन दोनों प्रयोगो को बेहद नवाचारी बताया। माननीय मंत्री जी ने गायों के प्रति सम्मान व्यक्त करते हुए उनको माल्यार्पण कर उन्हें गुड भी खिलाया। इसके अलावा मंत्री जी ने ग्राम प्रधान, सलिया से भी मुलाकात की और उन्हें ऐसे ही अच्छा कार्य करने हेतु प्रेरित किया। उन्होंने निर्देशित किया कि सर्दी के मौसम को दृष्टिगत रखते हुए समुचित प्रबंध पहले ही कर लिए जाएं।

बंद पड़े फ्लैटों को निशाना बनाकर चोरी करने वाला गिरोह गिरफ्तार

द अचीवर टाइम्स संवाददाता

नोएडा, दिल्ली, गाजियाबाद और लखनऊ सहित कई राज्यों में चोरी की घटनाओं को दे चुके हैं अंजाम

लखनऊ। बी.बी.डी पुलिस द्वारा ऐसे गिरोह का पर्दाफाश किया है. जिसने लखनऊ ,दिल्ली, गाजियाबाद सहित कई राज्यों में चोरी की घटनाओं को अंजाम दिया .इस गिरोह द्वारा बंद पड़े फ्लैटों को निशाना बनाया जाता था.

लखनऊ। पुलिस द्वारा एक ऐसे गिरोह को गिरफ्तार किया गया है. जो दिल्ली ,नोएडा और गाजियाबाद जैसे राज्यों में चोरी की घटनाओं को अंजाम दे चुके हैं .बीते दिनों बी.बी.डी थाना अंतर्गत चोरी की घटना हुई थी.जिसमें वादी दिलीप कुमार यादव निवासी पुत्र श्री राम प्यारे यादव निवासी गोयल हाइट्स फैजाबाद रोड द्वारा बी. बी .डी थाना पर मुकदमा पंजीकृत कराया गया था. बी.बी.डी पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार वादी द्वारा तहरीर के मध्यम से बताया गया कि उसके बंद पड़े फ्लैट का ताला तोड़कर चोरों ने जेवरात और नगदी की चोरी की गई थीं .जिसके बाद बी.बी.डी पुलिस द्वारा चोरों की गिरफ्तारी को लेकर टीम गठित की गई. चोरी की घटना का सफ़ल खुलासा करते हुए आरोपियों को चिनहट (तिवारीगंज)से गिरफ्तार किया गया.पकड़े गए आरोपियों में आरिफ उर्फ कल्लू पुत्र इब्राहिम निवासी जनपद हापुड़ ,ईस पुत्र आस मोहम्मद, तथा मुस्तकीम पुत्र नसीम शमिल हैं. गिरफ्तार आरोपियों के पास से सोने की चेन, लॉकेट,अंगूठी साहित दो पहिया वाहन तथा पास से देशी पिस्टल बरामद किया.डीसीपी पूर्वी द्वारा जानकारी देते हुए बताया कि तीन आरोपी युवको को चिनहट से बी.बी.डी पुलिस द्वारा गिरफ्तार किया गया .जिनमें से आरिफ ने पूछताछ के दौरान बताया कि बंद पड़े फ्लैटों में वह चोरी की घटना को अंजाम देता था.पहले बंद पड़े फ्लैट की रेकी करता था और उसी दौरान अगर कोई फ्लैट बंद पड़ा मिलता था तो उसी में वह सरिया डालकर ताला तोड़ देता था.जिसके बाद अंदर मौजूद सामान पर हाथ साफ कर देता था.खास बात तो यह थी की आरिफ अपने साथियों के साथ ऐसी घटनाओं को दिन में ही अंजाम देता था चोरी की घटना को अंजाम देते थे चोरी करते समय उसके अन्य साथी बाहर से आने ङ्क जाने वाले लोगों पर नज़र रखते थे .साथ ही अन्य प्राप्त जानकारी के अनुसार यह जिस जिले में चोरी करते थे वहा से यह दिल्ली और नोएडा चले जाते थे ताकि किसी भी तरह से इनकी पुलिस को जानकारी न दे सके।

देश बचाओ,देश बनाओ, समाजवादी साइकिल यात्रा अगामी लोकसभा चुनाव में लाएगी रंग

सैकड़ो समाजवादी पदाधिकारी और कार्यकर्ताओं ने यात्रा का जोरदार स्वागत किया

द अचीवर टाइम्स अनुराग मल्होत्रा

बाराबंकी । देश बचाओ,देश बनाओ÷,समाजवादी साइकिल यात्रा ने आज जिला अध्यक्ष हाफिज अयाज अहमद और सदर विधायक धर्मराज सिंह सुरेश यादव के नेतृत्व में बड़ेल स्थित नेशनल पैलेस से सैकड़ो साइकिल यात्रियों के साथ दशहरा बाग नाका सातरिख होते हुए लाजपत नगर, बेगमगंज, नेबलेट चौराहा, धनोखर चौराहा पर पहुंचकर समाजवादी पुरोधा सेवक यादव जी की मूर्ति पर माल्यार्पण करने के पश्चात घंटाघर बाजार सट्टी बाजार पहुंची जहां जहां पर पूर्व कैबिनेट मंत्री राकेश वर्मा, पूर्व विधान परिषद सदस्य राजेश यादव राजू, पूर्व प्रमुख सुरेंद्र सिंह वर्मा, सभासद ताज बाबा के साथ उपस्थित सैकड़ो समाजवादी पदाधिकारी और कार्यकर्ताओं ने यात्रा का जोरदार स्वागत करते हुए सभी साइकिल यात्रियों को माला और अंग वस्त्र भेंट कर सम्मानित करते हो यात्रा में शामिल हुए यहां से साइकिल यात्रा नवीगंज, पल्हरी चौराहा, रामनगर तिराहा होते हुए मोहनलाल डिग्री कॉलेज में पहुंचकर समाजवादी पार्टी वरिष्ठ नेता स्वर्गीय बेनी प्रसाद वर्मा की मूर्ति पर माल्यार्पण करने के उपरांत विधानसभा जैदपुर के लिए प्रस्थान कर गई। देश बनाओ देश बचाओ समाजवादी साइकिल यात्रा में मुख्य रूप से 79 दिनों से यात्रा कुशल संचालन कर रहे समाजवादी साइकिल यात्रा के नायक लोहिया वाहिनी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अभिषेक यादव के साथ जिला अध्यक्ष हाफिज अयाज अहमद, पूर्व एमएलसी राजेश यादव राजू, प्रदेश सचिव सरताज चौधरी, पूर्व प्रमुख सुरेंद्र सिंह वर्मा, जिला महामंत्री हिमांशु यादव, जिला उपाध्यक्ष अजय वर्मा बबलू, कामता प्रसाद यादव, रिजवान संजय, जिला कोषाध्यक्ष प्रीतम सिंह वर्मा, जिला प्रवक्ता वीरेंद्र प्रधान, दिनेश वैश, मोहम्मद आफाक, मोनू रावत, राजकुमार वर्मा, सभासद ताज बाबा, बृजेश यादव, सोनू यादव, बाबू भाई, वैभव धीमान, आजम मलिक, मोहम्मद मेराज नितिन वर्मा, रजत वर्मा, सुमित वर्मा, विधानसभा अध्यक्ष विनय यादव, प्रेम प्रकाश यादव, लवली रावत, वेद प्रकाश रावत, उबेद सानू, शरीफ प्रधान आदि तमाम पदाधिकारी और कार्यकर्ता शामिल रहे।

नवरात्रि जागरण के उपरांत हुआ भंडारे का आयोजन

संवाददाता

एट जालौन। कोटरा थाने के अंतर्गत ग्राम मवई (एट) मे बरुआ वाली माता मंदिर पर सर्दिये नवरात्रि के उपलक्ष में श्रद्धालुओं ने नवरात्रि के पावन पर्व पर मां बरुआ वाली की सेवा उपासना करते हुए और दसवीं के दिन श्रद्धा भाव से हवन पूजन इत्यादि करते हैं इसके पश्चात आज एकादशी को विगत 10 बरसों की भांति इस वर्ष भी भंडारे का आयोजन श्रद्धा भाव से किया गया बताते चले इस भंडारे में ग्राम मवई वासियो का मुख सहयोग रहता है भंडारा रास्ता बंद एवं धुआं बंद कर होता आ रहा है इस धार्मिक कार्यक्रमके मुख्य प्रेरणा स्रोत मंदिर पुजारी डोलू बाबा एवं सहयोगी समस्त ग्रामवासी मवई.

बिजली विभाग के अधिकारियों को लगी कड़ी फटकार

दोषी बचे नहीं और निर्दोष फंसे नहीं :मंत्री

❖ गन्ने का बकाया भुगतान ससमय न करने वालों पर कड़ी कार्यवाही करेंगे : मंत्री जी

द अचीवर टाइम्स फसाद खान

शाहजहांपुर। विकास भवन में विकास कार्यों एवं कानून व्यवस्था की समीक्षा बैठक प्रभारी मंत्री श्री नरेंद्र कश्यप जी की अध्यक्षता में संपन्न हुई। माननीय मंत्री जी ने केंद्र तथा राज्य सरकार की विभिन्न महत्वाकांक्षी योजनाओं की विभागवार समीक्षा की। माननीय प्रभारी मंत्री ने जिले में फैल रहे डेंगू की स्थिति को चिंताजनक बताया। संबंधित अधिकारियों ने उन्हें अवगत कराया कि जिले की पुवांया तहसील में स्थिति सबसे ज्यादा गंभीर है । माननीय मंत्री जी ने सीएमओ डॉक्टर आरके गौतम को दिए सख्त निर्देश लापरवाही बर्दाश्त नहीं होगी नियमानुसार कार्य करें। प्रभारी मंत्री ने कर तथा करेत्तर राजस्व संग्रह की भी समीक्षा की। मंत्री जी परिवहन विभाग द्वारा कम राजस्व के संग्रह पर नाराजगी व्यक्त करते हुए इस स्थिति में सुधार हेतु निर्देशित किया। बिजली विभाग द्वारा राजस्व का संग्रह लक्ष्य के सापेक्ष 50.55 त्न रहा। बिजली विभाग के अधिकारियो को सचेत करते हुए उन्होंने कहा कि अगले महीने की समीक्षा बैठक में स्थिति बदली हुई नजर आनी चाहिए। बैठक में उपस्थित श्री विनीत मिश्रा के द्वारा यह शिकायत की गई कि बिजली विभाग के अधिकारी जनता की समस्याओं के प्रति संवेदनहीन है। प्रभारी मंत्री ने अधिशासी अभियंता तथा अधीक्षण अभियंता को फटकार लगाते हुए या निर्देश दिया कि वे समय-समय पर अपने निचले स्तर के अधिकारियों तथा कर्मचारियों के साथ वर्चुअल मीटिंग करके जनता की सभी समस्याओं को सुलझाने का प्रयत्न करें। सलोना कुशवाहा ने कुछ गावों में जले हुए ट्रांसफार्मर को न बदलने की शिकायत भी प्रभारी मंत्री से की। माननीय मंत्री जी ने त्वरित कार्यवाही हेतु अधिकारियों को निर्देशित किया। अधिशासी अभियंता शारदा नहर को प्रभारी मंत्री ने निर्देशित किया कि नहरों की सिल्ट सफाई नवंबर के अंत तक हर हाल में पूर्ण हो जानी चाहिए। संबंधित अधिकारियों ने पंचायत भवन निर्माण की स्थिति के विषय में अवगत कराते हुए बताया कि 751 पंचायत भवन बन चुके हैं तथा 10 पर अभी कार्य चल रहा है। अमृत योजना के विषय में मंत्री जी ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि क्रिटिकल एरियाज में योजना बद्ध तरीके से कार्य करें जिससे कि आम जनमानस के जीवन पर कम से कम प्रतिकूल प्रभाव पड़े। प्रधानमंत्री आवास योजना में 4876 आवासों का लक्ष्य रखा गया था, जिनमें से सभी स्वीकृत हो चुके हैं। सामूहिक विवाह योजना के विषय में समाज कल्याण अधिकारी वंदना सिंह ने बताया कि जिले को 1610 विवाह करने का लक्ष्य प्राप्त हुआ है जिसके सापेक्ष 882 आवेदकों का सत्यापन कराया जा चुका है। यह सामूहिक विवाह नवंबर के अंत में संपन्न कराए जाएंगे। जनपद में 12294 कुपोषित बच्चे चिन्हित किए गए थे। जिला कार्यक्रम अधिकारी ने अवगत कराया कि कुपोषित बच्चों में से 11770 को अब सुपोषित कर लिया गया है। प्रभारी मंत्री जी ने निवेश मित्र एवं झटपट पोर्टल, सेतु निर्माण गो संरक्षण की स्थिति, नई सड़कों का निर्माण तथा चौड़ीकरण एवं सुदृढ़ीकरण, कन्या सुमंगला योजना, मनरेगा, स्कूल चलो अभियान, रोजगार सृजन योजना, मुद्रा योजना, श्रम योगी मानधन योजना तथा स्वामित्व योजना की भी समीक्षा की। कानून व्यवस्था की स्थिति के विषय में प्रभारी मंत्री ने पुलिस अधीक्षक अशोक कुमार मीना से जानकारी ली। पुलिस अधीक्षक ने जानकारी देते हुए बताया कि जनपद में कानून व्यवस्था सामान्य है। उन्होंने बताया कि एक एन.एस.ए. प्रस्तावित है। प्रभारी मंत्री जी ने पुलिस विभाग की सराहना करते हुए कहा कि ऑपरेशन कन्वीक्शन में अच्छा काम हुआ है। पुलिस अधीक्षक को निर्देशित करते हुए उन्होंने कहा कि पुलिस विभाग इस अवधारणा के साथ काम करे कि कोई भी दोषी बचना नहीं चाहिए और कोई निर्दोष फंसना नहीं चाहिए। समीक्षा बैठक में जिलाधिकारी उमेश प्रताप सिंह, मुख्य विकास अधिकारी श्याम बहादुर सिंह, पुलिस अधीक्षक अशोक कुमार मीणा, चीफ मेडिकल ऑफिसर डॉ आरके गौतम, पीडब्ल्यूडी मंत्री जितिन प्रसाद जी के प्रतिनिधि के रूप में विनीत मिश्रा, के सी मिश्रा सहित अन्य अधिकारी तथा जनप्रतिनिधि मौजूद रहे।

सुनसान रस्ते पर लोगों को निशाना बना कर लूटपाट करने वाले गिरोह का पूलिस ने किया पर्दाफाश

दो आरोपियों से हथियार, चार मोबाइल फोन व वारदात में प्रयोग किया मोटर साइकिल बरामद किया।

एजेंसी

नवांशहर। जिला शहीद भगत सिंह नगर पुलिस ने सुनसान रास्तों पर लोगों को अपना निशाना बना लूटपाट करने वाले अंतर जिला गिरोह का पर्दाफाश करते हुए गिरोह के दो लुटेरों को गिरफ्तार करने में सफलता प्राप्त की है। पुलिस ने लुटेरों से एक लोहे का दातर, छीनें हुए 4 मोबाइल फोन व वारदात में इस्तेमाल बाइक बरामद कर लिया है। इस संबंध में प्रेसवार्ता दौरान जानकारी देते एसएसपी शहीद भगत सिंह नगर डॉ अखिल चौधरी ने बताया कि 24 अक्टूबर 2023 को थाना सदर बंगा पुलिस को शिकायतकर्ता गांव जंडियाला निवासी राम लाल ने सूचना दी थी कि 22 अक्टूबर 2023 को वह घरेलू सामान की खरीद करने के लिए अपनी स्कूटी पर सवार होकर गांव सूंढ की तरफ जा रहा था। इस दौरान गांव के बाहर एक स्कूल समीप बाइक पर सवार तीन युवकों ने उसे घेर लिया व लोहे का दातर दिखाकर उससे 15 हजार रुपए छीन लिए और मौके से फरार हो गए। पुलिस ने शिकायतकर्ता की शिकायत पर थाना सदर बंगा में तीन अज्ञात व्यक्तियों के खिलाफ धारा 379 बी व 34 तहत मुकदमा नंबर 92 दर्ज कर लुटेरों की तलाश शुरू कर दी थी। उन्होंने बताया कि मामले की संवेदनशीलता को देखते हुए एसपी (जांच) डॉ मुकेश कुमार व डीएसपी बंगा सरवण सिंह बल्ल की अध्यक्षता में थाना सदर बंगा राजीव कुमार की पुलिस पार्टी ने कार्रवाई करते हुए इस लूटपाट की वारदात को अंजाम देने वाले दो लुटेरों को गिरफ्तार करने में सफलता प्राप्त की है। लुटेरों की पहचान गांव अजनोहा (होशियारपुर) निवासी सुखजिंदर सिंह (बिट्टा) पुत्र गुरजीत सिंह व गांव खेड़ा (होशियारपुर) निवासी दीदार सिंह (गग्गी) पुत्र हरजिंदर सिंह के रूप में हुई है। जबकि इस वारदात में शामिल तीसरे लुटेरे बलजिंदर सिंह की तलाश जारी है। एसएसपी ने बताया कि इन लुटेरों की गिरफ्तारी से लूटपाट की काफी वारदातों को ट्रेस किया गया है। यह एक अंतर जिला गिरोह है, इस गैंग के सदस्य दीदार सिंह (गग्गी) के खिलाफ 07 मामले, सुखजिंदर सिंह (बिट्टा) के खिलाफ 03 व इनके तीसरे सदस्य बलजिंदर सिंह के खिलाफ लूटपाट सहित एनडीपीएस एक्ट तहत 09 मामले दर्ज हैं। लुटेरों से की गई पूछताछ दौरान सामने आया है कि इन्होंने जिला शहीद भगत सिंह नगर के थाना सदर बंगा, मुकंदपुर व बहराम सहित होशियारपुर के थाना चबबेवाल क्षेत्र में लूटपाट की काफी वारदातों को अंजाम दिया है। उन्होंने बताया कि इन लुटेरों की गिरफ्तारी से जिला शहीद भगत सिंह नगर के विभिन्न थानों से संबंधित 05 मामले व जिला होशियारपुर से संबंधित 01 मामला कुल 06 मामलों को ट्रेस कर लिया गया है। उन्होंने बताया कि लुटेरों द्वारा उक्त मामलों के अलावा जिला शहीद भगत सिंह नगर की सब डिवीजन बंगा के क्षेत्रों व जिला होशियारपुर के थाना माहिलपुर के क्षेत्रों में उक्त लुटेरों द्वारा लूटपाट की 11 अन्य वारदातों को अंजाम दिया गया है। एसएसपी ने बताया कि लुटेरों से और पूछताछ के लिए माननीय अदालत में पेश कर दो दिन का पुलिस रिमांड हासिल किया है। जिससे लुटेरों द्वारा की गई लूटपाट की अन्य वारदातों की जानकारी हासिल हो सकती है। उन्होंने बताया कि तीसरे लुटेरे बलजिंदर सिंह की धड़ पकड़ के लिए पुलिस द्वारा उसके ठिकानों पर पुलिस द्वारा रेड की जा रही है व उसे भी जल्द गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

हिमाचल में छह दिनों तक मौसम साफ, केलांग का न्यूनतम तापमान माइनस में पहुंचा

एजेंसी

शिमला। प्रदेश के उच्च और मध्य पर्वतीय जिलों में सुबह-शाम के समय मौसम में ठंडक बढ़ गई है। बुधवार को प्रदेश भर में धूप खिली। ऊना में अधिकतम तापमान 31.2 डिग्री सेल्सियस दर्ज हुआ। हिमाचल प्रदेश में 31 अक्तूबर तक मौसम साफ रहेगा। केलांग का न्यूनतम तापमान माइनस में पहुंच गया है। प्रदेश के उच्च और मध्य पर्वतीय जिलों में सुबह-शाम के समय मौसम में ठंडक बढ़ गई है। बुधवार को प्रदेश भर में धूप खिली। ऊना में अधिकतम तापमान 31.2 डिग्री सेल्सियस दर्ज हुआ। मौसम विज्ञान केंद्र शिमला के अनुसार आने वाले एक सप्ताह तक प्रदेश में मौसम शुष्क बना रहेगा। पश्चिमी विक्षोभ के सक्रिय नहीं होने से मौसम में यह बदलाव आया है। आने वाले दिनों में धूप खिलने से तापमान में बढ़ोतरी दर्ज होगी। बुधवार को सुंदरनगर में अधिकतम तापमान 29.6, कांगड़ा में 29.5, चंबा में 28.8, बिलासपुर में 28.7, भुंतर में 28.5, धर्मशाला में 28.0, मंडी में 27.6, नाहन में 27.2, शिमला में 21.4 और मनाली में 21.4 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड हुआ। उधर, मंगलवार रात को कुकुमसेरी में न्यूनतम तापमान 1.3, समदो में 1.9, कल्पा में 2.4, मनाली में 5.2 और शिमला में 10.9 डिग्री सेल्सियस दर्ज हुआ।

एक नज़र

जिला कलक्टर एवं एसपी ने आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर का किया निरीक्षण।

एजेंसी

धौलपुर राजस्थान। विधानसभा चुनाव की तैयारियों एवं मतदान केंद्रों पर व्यवस्थाओं के निरीक्षण के अवसर पर सुनकई राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में बालिकाओं को सबल बनाने के लिए चलाए जा रहे आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर का जिला निर्वाचन अधिकारी एवं जिला कलक्टर अनिल कुमार अग्रवाल एवं जिला पुलिस अधीक्षक मनोज कुमार ने निरीक्षण किया । उन्होंने बालिकाओं एवं प्रशिक्षण देने वाले शिक्षिका से बातचीत कर संतोष व्यक्त किया। उन्होंने इस अवसर पर कहा कि सेल्फ डिफेंस के प्रशिक्षण के माध्यम से बालिकाएं सबल बन रही है। बालिकाएं सेल्फ डिफेंस प्रशिक्षण के अवसर पर रूचिपूर्ण तरीके से प्रशिक्षण ले रही थी। इस अवसर पर उपखण्ड अधिकारी सरमथुरा रेखा मीणा एवं सीओ पुलिस सरमथुरा रविराज सहित अन्य उपस्थित थे।

रिजर्व सैक्टर अधिकारी दायित्वों हेतु रहें तत्पर।

एजेंसी

धौलपुर राजस्थान। कलेक्ट्रेट सभागार में रिजर्व सैक्टर अधिकारी फ्लांइग स्क्वॉड एवं एसएसटी के कार्मिकों को प्रशिक्षण के दौरान उप जिला निर्वाचन अधिकारी बालकृष्ण तिवारी ने कहा कि स्वतंत्र भयमुक्त एवं निष्पक्ष मतदान के लिए क्षेत्र में मतदाताओं को प्रेरित करें एवं किसी भी समय दायित्व निर्वहन हेतु तत्पर रहें। अवैध वाहनों की जांच करें एवं अवैध नगदी सामग्री को जब्त करने की कार्यवाही करें। जिला स्तरीय मास्टर ट्रेनर सुरेन्द्र कुमार दीक्षित ने भयग्रस्त मतदाताओं की सूची बनाने, मतदान बूथों पर सुविधाओं का आंकलन, होम वोटिंग, ईवीएम की सम्पूर्ण जानकारी के संबंध में प्रशिक्षण दिया गया। इसके साथ ही अतुल चौहान ने एफएसटी तथा एसएसटी द्वारा भरे जाने वाले प्रतिदिन के प्रपत्र एवं उनके द्वारा निर्वहन की जाने वाली समस्त जानकारियों का प्रशिक्षण दिया गया। समस्त प्रशिक्षार्थी निर्भीक होकर अपने क्षेत्र में कार्य करें तथा अपने उत्तरदायित्वों का भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार पालना करें।

जिला निर्वाचन अधिकारी और पुलिस अधीक्षक की मौजूदगी में निकाला फ्लैग मार्च।

आमजन को दिया निर्भीक होकर मतदान करने का संदेश।

एजेंसी

धौलपुर राजस्थान। विधानसभा आम चुनाव 2023 में निष्पक्ष, शांतिपूर्ण और भयमुक्त मतदान का संदेश देने के लिए जिला निर्वाचन अधिकारी अनिल कुमार अग्रवाल और जिला पुलिस अधीक्षक मनोज कुमार ने मय जाब्ते एवं पैरा मिलिट्री फोर्स के जवानों के साथ सरमथुरा कस्बे के मुख्य मार्गों से होते हुए फ्लैग मार्च निकला तथा फ्लैग मार्च निकालकर चुनावी के प्रति प्रशासन की सक्रियता का संदेश दिया। मतदाताओं से आगामी 25 नवंबर को होने वाले विधानसभा आम चुनाव में निष्पक्ष और भयमुक्त होकर शत प्रतिशत मतदान करने की अपील की। गौर तलब है की राजस्थान में आगामी विधानसभा चुनाव के मद्देनजर प्रशासन पूरी तरह से अलर्ट मोड पर है। इसी को लेकर सरमथुरा कस्बे में पुलिस और पैरा मिलिट्री फोर्स के जवानों के साथ फ्लैग मार्च निकाला गया। जिला निर्वाचन अधिकारी व जिला पुलिस अधीक्षक फ्लैग मार्च की अगुवाई करते हुए आमजन को सुरक्षा व शांति का भरोसा दिलाया । फ्लैग मार्च के दौरान अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक देवेंद्र सिंह, एआरओ बसेड़ी रेखा मीणा , सीओ सरमथुरा रविराज सहित पैरा मिलिट्री फोर्स के जवानों सहित पुलिस बल के जवान एवं अन्य आलाधिकारी मौजूद रहे।

राहो स्कूल में करवाया डा. ढिल्लो और गहूण का गैसट लैकचर

एजेंसी

नवांशहर /बलाचौर। सरकारी सीनीयर सैकेडरी सम्राट स्कूल लडके राहों में प्रिंसीपल जगजीत कौर की अगुवाई में सकयूरिटी विभाग दरा गैसट लैकचर करवाया गया। सकयूरिटी टीचर कैपटन कुलदीप सिंह ने आए हुए मेहमानो को जी आया कहा और जान पहचान की। स्टेट आवाडी हरदीप सिंह गहूण ने बच्चों को संबोधन करते हुए साईबर सुरक्षा जैसे गंभीर विषय पर नजरसानी करते हुए अलग अलग उदाहरणे दी। डा. कशमीर सिंह ढिल्लो ने फसट एड की विस्तुत जानकारी देते बच्चों को समाजसेवी गुणो के धारनी होने को कहा। आखिर में स्कूल अध्यापक योगेश कौड़ा ने बच्चो को मिली शिक्षा पर अमल करने और आए हुए मोहमानो का विशेष तौर पर धन्यावाद किया।

रियात कॉलेज ऑफ लॉ ने नेशनल डिबेट चैंपियनशिप का आयोजन किया।

एजेंसी

नवांशहर काठगढ। छात्रों के बीच बौद्धिक प्रवचन, आलोचनात्मक सोच और विविध दृष्टिकोणों के आदान-प्रदान को बढ़ने के लिए रयात कॉलेज ऑफ लॉ, रालमाजरा द्वारा राष्ट्रीय वाद-विवाद चैम्पियनशिप का आयोजन किया गया था। डॉ. संदीप सिंह कौरा, सलाहकार राष्ट्रीय कौशल विकास परिषद और चांसलर, लेमारिन टेक स्किल्स यूनिवर्सिटी पंजाब, प्रोफेसर इमैनुएल नाहर, अध्यक्ष पंजाब राज्य अल्पसंख्यक आयोग, डॉ. वंदना शुक्ला, प्रसिद्ध स्तंभकार और प्रोफेसर ए.एस. चावला, कुलपति, लैमरिन टेक स्किल्स यूनिवर्सिटी कार्यक्रम के दौरान विशेष अतिथि थे। चैंपियनशिप में नोएडा, हिमाचल प्रदेश, चंडीगढ़ और पंजाब के विश्वविद्यालयों और कॉलेजों की टीमों ने भाग लिया। उद्घाटन सत्र के दौरान अपने संबोधन में प्रो. नाहर ने कार्यक्रम के आयोजन में रयात कॉलेज ऑफ लॉ के छात्रों और कर्मचारियों के समर्पण और कड़ी मेहनत की सराहना की। उन्होंने छात्रों को अपने कानूनी कौशल को निखारने के लिए ऐसी प्रतियोगिताओं में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। कौशल विकास के महत्व पर प्रकाश डालते हुए, उन्होंने छात्रों को कौशल-आधारित गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने और मानव विकास, उद्योग और जीवन की गुणवत्ता पर ध्यान केंद्रित करने वाला एक नया कौशल विश्वविद्यालय खोलने की प्रतिबद्धता के लिए प्रबंधन की सराहना की। उन्होंने कहा कि ये पहल देश के लिए महत्वपूर्ण योगदान देंगी और युवाओं में आत्मविश्वास पैदा करेंगी।

डॉ. संदीप सिंह कौरा ने आयोजन के लिए चुने गए विषयों की सराहना की उन्होंने कौशल बढ़ाने के महत्व पर जोर दिया, क्योंकि वे देश के विकास के लिए एक महत्वपूर्ण संपत्ति हैं। डॉ कौरा ने भारत की युवा आबादी के संदर्भ में कौशल विकास के महत्व पर भी चर्चा की। उन्होंने पंजाब की अर्थव्यवस्था के विकास और कौशल विकास की संभावनाओं के लिए प्रतिभा पलायन के बजाय कौशल विनिमय के महत्व पर प्रकाश डाला। इसके अलावा, उन्होंने सिफारिश की कि पर्यावरणीय चुनौतियों से निपटने के लिए पर्यावरणीय न्यायशास्त्र और पर्यावरण पर वैधानिक कानूनों जैसे विषयों पर बहस आवश्यक है। उन्होंने छात्रों से बहु-विषयक प्रयासों के महत्व पर जोर देते हुए नदी जल की गुणवत्ता जैसे मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करने का आग्रह किया। डॉ. वंदना शुक्ला एवं प्रोफेसर ए.एस. चावला ने कार्यक्रम के अंतिम दौर को जज करने के बाद छात्रों के साथ वाद-विवाद कौशल के विभिन्न पहलुओं पर अपनी अंतर्दृष्टि साझा की। इससे पूर्व महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. मोनिका शर्मा ने अतिथियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि इस आयोजन में लोगों की भरपूर भागीदारी रही है. डीन एकेडमिक डॉ. मनीष कुमार ने कहा कि चैंपियनशिप कॉलेज की छात्र सोसायटी आरसीएल लिटरेरी सोसाइटी की एक पहल थी। उन्होंने कहा कि आयोजन के दौरान आयोजित विभिन्न राउंड प्रतिभागियों की उल्लेखनीय प्रतिभा और ज्ञान का प्रमाण थे। आर्मी इंस्टीट्यूट ऑफ लॉ, मोहाली के अरमान कथूरिया और योगेश रेढू ने चैंपियनशिप जीती और एक ट्रॉफी और दस हजार का नकद पुरस्कार प्राप्त किया। यूआईएलएस, पंजाब यूनिवर्सिटी, चंडीगढ़ से समीक्षा हंस और कार्तिक शर्मा ने दूसरा स्थान हासिल किया और ट्रॉफी के साथ सात हजार का नकद पुरस्कार प्राप्त किया। रियात कॉलेज ऑफ लॉ के शौर्य शर्मा और जसकरण सिंह ने तीसरा पुरस्कार पांच हजार और ट्रॉफी जीती। इस अवसर पर श्रीमती शुभा राठौड़, श्रीमती मोनिका चावला, डॉ. राजिंदर कौर गिल, डॉ. महिंदर सिंह, डॉ. आकाशदीप सिंह आदि गणमान्य लोग उपस्थित थे।

बलाचौर में हर साल की तरह इस साल भी सीता राम मंदिर में दुशहरे का पर्व धूमधाम से मनाया

एजेंसी

नवांशहर /बलाचौर। हर वर्ष की तरह इस साल भी बलाचौर में सीता राम मंदिर में दुशहरे के पर्व बहुत धूमधआम के साथ मनाया गया। बुराई व चंगियाई की जीत की याद में दुशहरे का पर्व मनाया गया। इस मौके मुख्य मेहमान हलका विधयाक संतोष कटारिया और पूर्व विधायक चौधरी दर्शन लाल मंगूपुर ने शिरकत की। उन्होने कहा कि पहले एक ही रावन था पर अब कई रावन पैदा हो चुके है। इस को खतम करने के लिए हमें प्रयास करने पड़ेगे। आज के युग में बुराई और चंगियाई की जीत होगी। इस मौके प्रधान टिंकू घई ने कहा कि सीता राम मंदिर के मैदान में पीने वाले साफ पानी क ा बोर खराब हो गया जिस की जलदी से जलदी मुरंमत करवाई जाए। साफ पानी न मिलने के कारण लोगों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ रहै। विधायक ने इस समस्या को मुख्य रखते हुए नगर कौसिल के प्रबंधक एसडीएम विक्रमजीत पांधे के साथ बातचीत की । जलदी ही नए बोर का काम शुरु हो जाएगा और लोगों क ो आ रही मुशकिल से राहत मिलेगी। उन्होने कहा कि पिछले साल भी इस मंच से शहर के विकास की बात की गई थी। आज भी बलाचौर शहर के हर वार्ड में विकास काम चल रहे है और आगे भी चलते रहेगे। इस दौरान कलाकारों ने लोगों को खूब मनोरंजन कि या। दोपहर से ही प्रोग्राम चलता रहा बच्चों के लिए झूले लगाए गए। कई तरह के सटाल भी लगाई गए। इस दौरान राम लीला कमेटी के प्रधान नरिंदर कुमार टिंकू घई, जिला प्रधान सतनाम सिंह जलालपुर, कांग्रेस पार्टी के जिला प्रधान अजय मंगूपुर , बलाक समिति बलाचौर के चेयरमैन धर्मपाल, देसराज हकला, रजिंदर सिंह छिंदी, रिकी ब जाज, बोबी राणा, मंगा राणा, सोमनाथ टकला, भूपिंदरजीत सिंह सूरी, डा. अमनदीप कौर सूरी, हनी डब, प्रवीन पप्पा, रामपाल, गुरप्रीत गुजर, नरेश चेची, लाल बहादुर गांधीस डीएसपी शाम सुंदर शर्मा, एसएचओ मंजीत सिंह, एसएचओ जरनैल सिंह, रमन मित्र, सुलोचन राणा, सतीश जैन, महिंदर सैनी, कमल शर्मास मनोज घई, शकित जोशी, सुखदेव, जसविंदर, डा. सुनील , चंद्र मोहन जेडी, सुरिंदर पाल , निर्मला देवी आदि मौजूद रहे।

उत्तराखंड के लिए औद्योगिक निवेश जुटाने चेन्नई पहुंचे सीएम, कल होगा रोड शो

देहरादून। मुख्यमंत्री धामी के मुताबिक, सरकार का सम्मेलन से पहले बड़े निवेश की ग्राउंडिंग करने पर फोकस है। इस रोड शो में हेल्थ केयर, फार्मा, ऊर्जा क्षेत्र पर विशेष फोकस होगा। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी अधिकारियों के साथ बुधवार को औद्योगिक निवेश जुटाने के मकसद से चेन्नई पहुंच गए। बृहस्पतिवार को वह महात्मा गांधी मार्ग स्थित होटल ताज में विभिन्न औद्योगिक क्षेत्रों से जुड़े निवेशकों के साथ संवाद करेंगे। इस रोड शो में हेल्थ केयर, फार्मा, ऊर्जा क्षेत्र पर विशेष फोकस होगा। इसके अलावा शिक्षा, पर्यटन सेक्टर में भी औद्योगिक क्षेत्रों में निवेश के एमओयू होने की संभावना है। मुख्यमंत्री धामी के मुताबिक, सरकार का सम्मेलन से पहले बड़े निवेश की ग्राउंडिंग करने पर फोकस है। मुख्यमंत्री के साथ पर्यटन मंत्री सतपाल महाराज के अलावा कैबिनेट मंत्री सौरभ बहुगुणा भी रोड शो में शामिल होंगे। चेन्नई रवाना होने से मीडिया से बातचीत में सीएम ने कहा कि उत्तराखंड और तमिलनाडु का गहरा सांस्कृतिक संबंध है। वहां से निवेश के पहले भी प्रस्ताव आए हैं। हमें भरोसा है कि शिक्षा, पर्यटन और औद्योगिक क्षेत्रों में उद्यमी उत्तराखंड में निवेश करेंगे। 2018 के निवेशक सम्मेलन में एमओयू को लेकर विपक्ष के आरोप पर मुख्यमंत्री ने कहा कि उनके पास कहने के लिए कुछ नहीं है। 2018 के बाद कोरोना महामारी आ गई थी। जो एमओयू पहले हुए हैं, हम उनसे भी बात कर रहे हैं। हमें पूरी उम्मीद है कि उत्तराखंड में बड़ा निवेश आएगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी कोशिश है कि निवेशक सम्मेलन से पहले बड़े निवेश की ग्राउंडिंग हो जाए।

5000 सफाईकर्मी होंगे नियमित, केजरीवाल ने पूरा किया वादा

दिल्ली-एनसीआर। दिवाली से पहले दिल्ली नगर निगम के पांच हजार सफाईकर्मी नियमित होंगे। गुरुवार को एमसीडी सदन की बैठक में प्रस्ताव पेश किया जाएगा। सफाई कर्मचारियों को दिवाली का तोहफा देने की तैयारी हो गई है। दिवाली से पहले पांच हजार सफाई कर्मचारी नियमित किए जाएंगे। एमसीडी सदन की शुक्रवार को होने वाली बैठक में सफाई कर्मचारियों को पक्का करने का प्रस्ताव पेश किया जाएगा। प्रस्ताव के मुताबिक, पूर्ववर्ती ईडीएमसी ने 18 अप्रैल 2013 को सदन में 5000 सफाई कर्मचारियों के पदों के सृजन का प्रस्ताव पास किया था और एक अप्रैल 1996 से 31 मार्च 1998 के दौरान भर्ती सफाई कर्मचारियों को एक अप्रैल 2013 से नियमित करने की अनुमति दी गई थी। बाद में ईडीएमसी ने 13 दिसंबर 2014 को एक और प्रस्ताव पारित किया, जिसमें कहा गया कि सफाई कर्मचारियों के नियमितीकरण की तारीख एक अप्रैल 2013 की जगह एक अप्रैल 2004 कर दी गई है, लेकिन निगम की वित्तीय स्थिति लगातार खराब होने के कारण कर्मियों को नियमित नहीं किया गया। ये सफाई कर्मचारी पक्की नौकरी के लिए आए दिन निगम से मांग करते हैं। फिलहाल, एमसीडी के एकीकरण और इसके चुनाव को करीब दस महीने बीत गए। मेयर का चुनाव होने के बाद भी एमसीडी की स्टैंडिंग कमेटी अब तक नहीं बनी। दिल्ली में निगम से जुड़े विकास से संबंधित आर्थिक व कानूनी फैसले नहीं हो पा रहे। अब सदन की बैठक में सफाईकर्मियों के हक में फैसला लिए जाने की खबर है। 583.10 करोड़ नियमितीकरण बकाया है। प्रस्ताव में निगम के पुराने फैसलों से जुड़े तथ्य हैं, जिसके मुताबिक पांच हजार सफाई कर्मचारियों के नियमितीकरण के प्रस्ताव के पास होने की तारीख से अब तक 583.10 करोड़ रुपये निगम पर बकाया हैं। सफाई कर्मियों के बढ़े वेतन, सेवानिवृत्ति लाभ के लंबित बकाए का भुगतान एमसीडी ने नहीं किया है।

अब मिल सकती है पक्की नौकरी

सफाई कर्मचारियों को नियमितीकरण का बकाया मिलेगा या नहीं मिलेगा इसका फैसला निगम अपनी नीतियों से तय करेगा। पूर्ववर्ती निगमों ने जिन सफाई कर्मचारियों को पक्का करने का निर्णय लिया है, उन्हें पक्की नौकरी मिलने की अब संभावना बनी है। मेयर डॉ. शैली ओबरॉय ने सफाई कर्मचारियों को पक्का करने के संकेत दिए हैं, जबकि सीएम अरविंद केजरीवाल ने हाल ही में कहा है कि निगम कर्मियों को हम जल्द पक्का करेंगे।

मुरैना में सत्ता का संग्राम, जानिए कैसे राजनीतिक दलों के नेताओं ने एक-दूसरे पर लगाए आरोप?

मुरैना। भारतवर्ष के दिल मध्यप्रदेश में 2023 का चुनावी रण कवर करने के लिए अमर उजाला का चुनावी रथ एमपी के विधानसभा क्षेत्रों में जाकर चुनावी मुद्दों को जान रहा है। इसी को लेकर आज मुरैना में %सत्ता का संग्राम% हुआ, जहां अमर उजाला ने राजनीतिक दलों के नेताओं से बातचीत की और उनसे वोट मांगने के मुद्दों की जानकारी ली। इस दौरान अपनी बात रखते हुए नेता एक-दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप लगाते भी दिखे। मध्यप्रदेश में आगामी 17 नवंबर को विधानसभा चुनाव के लिए मतदान होना है। प्रदेश के चुनावी माहौल का जायजा लेने और राजनीतिक दलों के नेताओं से उनके वोट मांगने के मुद्दों पर चर्चा करने के लिए अमर उजाला का चुनावी रथ सत्ता का संग्राम बुधवार को मुरैना पहुंचा।

वनडे विश्व कप 2023 में इंग्लैंड की चौथी हार

विश्व कप में श्रीलंका से लगातार पांचवां वनडे हारा इंग्लैंड, निसांका-सदीरा ने श्रीलंका को दिलाई जीत

बेंगलूरू। पांच में से चार मुकाबले हारने के बाद इंग्लैंड की टीम मुश्किल में फंस गई है। यहां से एक और हार इंग्लैंड को सेमीफाइनल की दौड़ से पूरी तरह बाहर कर देगी। अभी भी इंग्लैंड का अंतिम चार में पहुंचना बेहद मुश्किल है। वनडे विश्व कप 2023 में गत चैंपियन इंग्लैंड का शर्मनाकर प्रदर्शन जारी है। विश्व कप के 25वें मैच में इंग्लैंड को श्रीलंका के खिलाफ हार झेलनी पड़ी। इस विश्व कप के पांच मैचों में यह इंग्लैंड की चौथी हार है। बंगलूरू के एम चिन्नास्वामी स्टेडियम में इंग्लैंड ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए 33.2 ओवर में 156 रन बनाए थे। इसके जवाब में श्रीलंका ने 25.4 ओवर में दो विकेट खोकर 160 रन बना लिए और मैच आठ विकेट से अपने नाम किया। इंग्लैंड के लिए बेन स्टोक्स ने सबसे ज्यादा 43 रन बनाए। वहीं, श्रीलंका के लिए पथुम निसांका ने 77 और सदीरा समरविक्रमा ने 65 रन की नाबाद पारियां खेलीं। इंग्लैंड के डेविड विली ने दो विकेट लिए। श्रीलंका के लहुरू कुमार ने तीन और एंजेलो मैथ्यूज-कसून रजिता ने दो-दो विकेट लिए। श्रीलंका के खिलाफ इंग्लैंड को विश्व कप में लगातार पांचवें मैच में हार मिली है। लंकाई टीम के खिलाफ 1999 में उसे पिछली जीत मिली थी। उसके बाद 2007, 2011, 2015, 2019 और 2023 में हार का सामना करना पड़ा। 2003 में दोनों टीमें एक-दूसरे के खिलाफ नहीं खेली थीं। विश्व कप में अब तक दोनों के बीच 12 मैच खेले गए हैं। इनमें छह इंग्लैंड ने अपने नाम किया है। वहीं, श्रीलंका को भी छह में जीत मिली है।

इंग्लैंड के बल्लेबाज फेल

टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए इंग्लैंड ने अच्छी शुरुआत की। जॉनी बेयरस्टो और डेविड मलान की जोड़ी ने तेज शुरुआत की और पहले विकेट के लिए 45 रन जोड़े। मलान 28 रन बनाकर एंजेलो मैथ्यूज का शिकार बने। हालांकि, इसके बाद विकेटों की झड़ी लग गई। जो रूट तीन रन बनाकर रन आउट हुए। बेयरस्टो को 30 रन के स्कोर पर कसून रजिता ने आउट किया। कप्तान बटलर आठ और लिविंगस्टोन एक रन बनाकर आउट हुए।

स्टोक्स को नहीं मिला साथ

85 रन पर पांच विकेट गंवाने के बाद इंग्लैंड की टीम संघर्ष कर रही थी। हालांकि, एक छोर पर बेन स्टोक्स खड़े थे। ऐसे में इंग्लैंड के बल्लेबाजों से सूझबूझ भरी बल्लेबाजी की उम्मीद थी, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। इंग्लैंड के बल्लेबाज खराब शॉट खेलकर विकेट फेंकते रहे। मोईन अली 15, क्रिस वोक्स 0 और आदिल राशिद दो रन बनाकर आउट हुए। इस बीच बेन स्टोक्स भी 43 रन के निजी स्कोर पर चलते बने। राशिद ने अपनी लापरवाही से विकेट गंवाया। अंत में मार्क वुड भी पांच रन बनाकर आउट हो गए। विली 14 रन बनाकर नाबाद रहे। श्रीलंका के लिए लहिरू कुमारा ने तीन विकेट लिए। एंजेलो मैथ्यूज और कसून रजिता को दो-दो विकेट मिले। तीक्ष्णा ने एक विकेट हासिल किया।

निसांका-सदीरा ने श्रीलंका को दिलाई जीत

157 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए श्रीलंका की शुरुआत अच्छी नहीं थी। कुसल परेरा चार रन बनाकर आउट हो गए। इसके बाद कुसल मेंडिस भी 11 रन के स्कोर पर पवेलियन लौट गए। 23 रन पर दो विकेट गंवाने के बाद श्रीलंका मुश्किल में फंस सकती थी, लेकिन पथुम निसांका और सदीर समरविक्रमा ने शतकीय साझेदारी कर अपनी टीम को जीत दिलाई। निसांका 77 रन और सदीरा 65 रन बनाकर नाबाद रहे। इंग्लैंड के लिए दोनों विकेट डेविड विली ने लिए।

इंग्लैंड के खिलाफ प्लेइंग-11 में बदलाव कर सकती है टीम इंडिया, लखनऊ में अश्विन के खेलने की संभावना

एजेंसी

लखनऊ। स्टार ऑलराउंडर हार्दिक पांड्या टखने की चोट से उबर नहीं पाए हैं जिसके कारण पिछले मैच में नहीं खेल पाए थे। उनका इंग्लैंड के खिलाफ खेलना संदिग्ध है। भारत उसके बाद दो नवंबर को मुंबई में श्रीलंका से खेलेगा। भारतीय टीम विश्व कप के अपने छठे मुकाबले में इंग्लैंड के खिलाफ रविवार (29 अक्तूबर) को उतरेगी। दोनों टीमों के बीच यह मैच लखनऊ के भारत रत्न श्री अटल बिहारी वाजपेयी इकाना स्टेडियम में खेला जाएगा। टीम इंडिया अपने विजय अभियान को जारी रखने के लिए उतरेगी। ऐसा माना जा रहा है कि कप्तान रोहित शर्मा प्लेइंग-11 में बदलाव कर सकते हैं। ऑफ स्पिनर रविचंद्रन अश्विन को लखनऊ में खेलने का मौका मिल सकता है। स्टार ऑलराउंडर हार्दिक पांड्या टखने की चोट से उबर नहीं पाए हैं जिसके कारण पिछले मैच में नहीं खेल पाए थे। उनका इंग्लैंड के खिलाफ खेलना संदिग्ध है। भारत उसके बाद दो नवंबर को मुंबई में श्रीलंका से खेलेगा। वहीं, पांच नवंबर को टीम इंडिया दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ कोलकाता में खेलेगी। पांड्या इंग्लैंड के अलावा इन दो मुकाबलों से भी दूर रह सकते हैं।

बांग्लादेश के खिलाफ मैच में लगी थी हार्दिक को चोट

हार्दिक 19 अक्तूबर को पुणे में बांग्लादेश के खिलाफ खेलते हुए बॉलिंग में गेंद के फॉलोअप में फिसल गए थे और 22 अक्तूबर को धर्मशाला में न्यूजीलैंड के खिलाफ मैच में नहीं खेल पाए थे। बड़ौदा के इस खिलाड़ी ने चोट के प्रबंधन के लिए सोमवार को बंगलूरू में राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी (एनसीए) को रिपोर्ट किया था।

लखनऊ में तीन मैचों में गेंदबाजों का प्रदर्शन

लखनऊ में इस विश्व कप का यह चौथा मैच होगा। अब तक यहां तीन मैच खेले गए हैं। लक्ष्य का पीछा करने वाली टीम तीन में से दो मैचों में जीती है। अब तक 47 विकेट गिरे हैं। इनमें से 26 विकेट तेज गेंदबाजों ने लिए हैं। वहीं, 15 विकेट स्पिन गेंदबाजों के हिस्से आए हैं। ऐसा माना रहा है कि इंग्लैंड के खिलाफ मैच के दौरान पिच स्पिन गेंदबाजों को मदद पहुंचाएगा। भारतीय टीम इंग्लैंड के खिलाफ अश्विन को उतारकर नई रणनीति अपनाने पर विचार कर रही है।

सिराज को दिया जा सकता है आराम

हार्दिक पांड्या की अनुपस्थिति ने न्यूजीलैंड के खिलाफ प्लेइंग-11 में सूर्यकुमार यादव और मोहम्मद शमी को जगह मिली थी। शमी ने टूर्नामेंट के अपने पहले मैच में शानदार प्रदर्शन करते हुए पांच विकेट चटकाए थे। लखनऊ की पिच से धीमे गेंदबाजों को मदद मिलने की संभावना है और ऐसे में इस मैच के लिए अश्विन को प्लेइंग-11 में जगह मिल सकती है। अगर ऐसा होता है तो बल्लेबाजी भी मजबूत होगी क्योंकि अश्विन आठवें नंबर पर खेलेंगे। अगर अश्विन की वापसी होती है तो शमी या सिराज में से किसी एक को बाहर होना पड़ेगा। सिराज लगातार मैच खेल रहे हैं। उन्हें आराम दिया जा सकता है।

इंग्लैंड के खिलाफ भारत की संभावित प्लेइंग-11

रोहित शर्मा (कप्तान), शुभमन गिल, विराट कोहली, श्रेयस अय्यर, केएल राहुल (विकेटकीपर), सूर्यकुमार यादव, रवींद्र जडेजा, रविचंद्रन अश्विन/मोहम्मद सिराज, मोहम्मद शमी, जसप्रीत बुमराह, कुलदीप यादव।

हार्दिक के टखने में सूजन, फिट होने में लगेंगे दो हफ्ते

एजेंसी

नई दिल्ली। हार्दिक पांड्या 19 अक्तूबर को पुणे में बांग्लादेश के खिलाफ खेलते हुए बॉलिंग में गेंद के फॉलोअप में फिसल गए थे और 22 अक्तूबर को धर्मशाला में न्यूजीलैंड के खिलाफ मैच में नहीं खेल पाए थे। बड़ौदा के इस खिलाड़ी ने चोट के प्रबंधन के लिए सोमवार को बंगलूरू में राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी (एनसीए) को रिपोर्ट किया था।

भारतीय टीम ने विश्व कप के मौजूद संस्करण में अब तक शानदार प्रदर्शन किया है। उसने पांच में से पांच मैच जीते हैं। टीम इंडिया अंक तालिका में पहले स्थान पर हैं। उसे अपना अगला मुकाबला रविवार (29 अक्तूबर) को इंग्लैंड के खिलाफ खेलना है। उसके बाद टीम दो नवंबर को श्रीलंका और पांच नवंबर को दक्षिण अफ्रीका से खेलेगी। भारत के लिए चिंता की बात यह है कि ऑलराउंडर हार्दिक पांड्या अब तक फिट नहीं हो पाए हैं और उनका अगले कई मैचों में खेलना संदिग्ध है। हार्दिक पांड्या 19 अक्तूबर को पुणे में बांग्लादेश के खिलाफ खेलते हुए बॉलिंग में गेंद के फॉलोअप में फिसल गए थे और 22 अक्तूबर को धर्मशाला में न्यूजीलैंड के खिलाफ मैच में नहीं खेल पाए थे। बड़ौदा के इस खिलाड़ी ने चोट के प्रबंधन के लिए सोमवार को बंगलूरू में राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी (एनसीए) को रिपोर्ट किया था। अब उनके इंग्लैंड, श्रीलंका और दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ मैच से भी दूर रहने की संभावना है।

कंगना रनौत से लेकर आमिर खान तक, अपने करियर को बनाने के लिए इन 10 सितारों ने की थी अपने मां-बाप से बगावत

एजेंसी

नई दिल्ली। यहां कंगना रनौत, टॉम क्रूज़, आमिर खान और अन्य लोकप्रिय हस्तियों की सूची दी गई है, जिन्होंने फिल्मों में करियर बनाने के लिए अपने माता-पिता के खिलाफ बगावत की। माता-पिता आमतौर पर अपने बच्चों के लिए एक सुरक्षित नौकरी का निर्णय लेते हैं और चाहते हैं कि उनका भविष्य सुरक्षित हो। अधिकांश माता-पिता यह भी चाहते हैं कि उनके बच्चे ऐसा करियर बनाएं जिसे वे अपनाने में सक्षम नहीं थे। इससे माता-पिता और बच्चों के बीच टकराव होता है। क्या आप जानते हैं, आमिर खान, सारा अली खान, कंगना रनौत, राधिका आप्टे और अन्य सितारों सहित बॉलीवुड हस्तियों ने अपने वांछित करियर को आगे बढ़ाने के लिए अपने माता-पिता की इच्छाओं के खिलाफ कदम उठाया?

आमिर खान के माता-पिता चाहते थे कि वह इंजीनियरिंग करें

फिल्मी परिवार से होने के बावजूद बॉलीवुड अभिनेता आमिर खान के माता-पिता ने उन्हें इंजीनियरिंग की पढ़ाई करने की सलाह दी थी। आमिर के पिता निर्देशक ताहिर हुसैन ने उनके बॉलीवुड में शामिल होने का विरोध किया था और कहा था कि यह इसके लिए अच्छी जगह नहीं है।

इरफ़ान खान के लिए अपने सपनों की राह आसान नहीं थी

दिवंगत बॉलीवुड स्टार इरफान खान के परिवार ने कभी नहीं सोचा था कि वह एक अभिनेता के रूप मे अपना करियर बनाएंगे। उन्होंने एक इंटरव्यू में कहा था कि वह एक पारंपरिक सामंती परिवार से आते हैं और वे कभी नहीं चाहते थे कि वह अभिनेता बनें।

कंगना रनौत ने कम उम्र में ही घर छोड़ दिया था

तेजस एक्ट्रेस कंगना रनौत ने फिल्म इंडस्ट्री में करियर बनाने के लिए कम उम्र में ही घर छोड़ दिया था। खैर, उसके इस कदम का असर उसके परिवार के साथ उसके रिश्ते पर पड़ा। कंगना के पिता चाहते थे कि वह डॉक्टर बनें।

राधिका आप्टे के पिता को लगता था कि अभिनय एक बिना दिमाग वाला पेशा है

अभिनेत्री राधिका आप्टे के पिता ने उनसे कहा था कि यह काम उन्हें उदास कर देगा क्योंकि यह बिना दिमाग वाला पेशा है। लेकिन, अब एक्ट्रेस इंडस्ट्री में नाम कमा चुकी हैं।

सारा अली खान ने कहा कि उनके पिता को उनके करियर का फैसला मंजूर नहीं था

चार साल पहले फिल्म केदारनाथ से अपने अभिनय करियर की शुरुआत करने वाली अभिनेत्री सारा अली खान ने खुलासा किया था कि उनके पिता सैफ अली खान को उनके करियर का फैसला मंजूर नहीं था क्योंकि वह उनके लिए घबराए हुए थे। उन्होंने कहा कि सैफ सबसे स्थिर प्रोफेशन नहीं है।

टॉम क्रूज़ के पिता ने उनसे कैथोलिक पादरी बनने का आग्रह किया

हॉलीवुड सुपरस्टार टॉम क्रूज़ अभिनय करियर बनाना चाहते थे लेकिन उनके पिता ने उनसे कैथोलिक पादरी बनने का आग्रह किया। उद्योग में शामिल होने से पहले टॉम मूल रूप से कैथोलिक पादरी बनने के लिए प्रशिक्षण ले रहे थे।

करिश्मा कपूर अपने कपूर परिवार के खिलाफ चली गईं

यह एक सर्वविदित तथ्य है कि किसी भी कपूर महिला ने इंडस्ट्री में काम नहीं किया है। लेकिन, इसके बावजूद अभिनेत्री करिश्मा कपूर ने अपने पिता रणधीर कपूर के खिलाफ जाकर 15 साल की उम्र में अपना अभिनय करियर शुरू करने का फैसला किया।

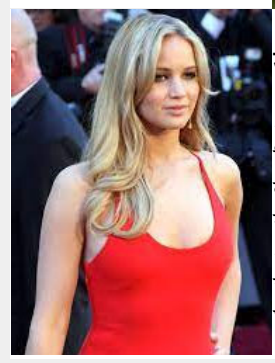

जेनिफर लॉरेंस के करियर निर्णय को उनके माता-पिता ने अस्वीकार कर दिया था

हॉलीवुड अभिनेत्री जेनिफर लॉरेंस अपने धार्मिक माता-पिता के साथ बड़ी हुई, जिन्होंने सोचा था कि फिल्म स्टार बनना कोई यथार्थवादी लक्ष्य नहीं है। उनके करियर संबंधी निर्णय को उनके माता-पिता ने अस्वीकार कर दिया था। जेनिफर की मां चाहती थीं कि वह फेल हो जाएं ताकि वह घर आ सकें।

मल्लिका शेरावत ने अपने समुदाय में पितृसत्ता से लड़ाई लड़ी

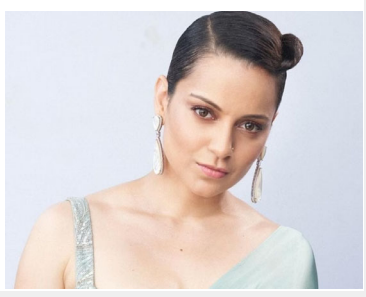

अभिनेत्री मल्लिका शेरावत ने अपने समुदाय में पितृसत्ता से जूझने के बारे में अपने दिल की बात कही। अभिनेत्री घर से भाग गई क्योंकि उसके माता-पिता ने उसके फिल्मी करियर को अस्वीकार कर दिया था और उसके पिता ने उसे धमकी दी थी कि अगर उसने अभिनय करना शुरू किया तो वह उसे छोड़ देगी। उन्होंने कहा कि उनके पिता का मानना था कि उनके अभिनय से परिवार को शर्मिंदगी उठानी पड़ेगी. वह विद्रोही हो गई और उनका उपनाम हटा दिया।

विजयदशमी पर 'हिंदुस्तानी' का फर्स्ट लुक जारी, प्रदीप पांडे चिंटू ने उठाया तीर कमान

वजयदशमी के अवसर पर भोजपुरी अभिनेता प्रदीप पांडे चिंटू की फिल्म %हिंदुस्तानी% का फर्स्ट लुक जारी कर दिया गया है। फिल्म के फर्स्ट लुक में प्रदीप पांडे चिंटू हाथ में धनुष बाण लिए कलयुगी रावण जैसी काया का वध करते हुए दिख रहे हैं। रावण के लुक में अभिनेता देव सिंह नजर आ रहे हैं। भोजपुरी फिल्म %हिंदुस्तानी% के फर्स्ट लुक को लेकर उत्साहित अभिनेता प्रदीप पांडे चिंटू ने अपने प्रशंसकों को विजयदशमी की शुभकामनाएं देते हुए कहा, 'हिंदुस्तान की धरती पर जब जब अत्याचार बढ़ा है। संत सनातन की रक्षा के लिए प्रभु श्रीराम अवतार लेते है। और, मर्यादा में रहते हुए तब तक धनुष बाण नहीं उठाते है,जब तक रावण रूपी मानव मर्यादा को भंग ना करे। अभिनेता प्रदीप पांडे चिंटू कहते हैं, %यह फिल्म बुराई पर अच्छाई का प्रतीक है, इसलिए हमने विजयदशमी के अवसर पर फिल्म का फर्स्ट लुक जारी किया है। आज समाज में देश के अंदर ही रावण का नकाब पहने बहुत लोग घूम रहे हैं। जो देश को भीतर भीतर ही दीमक की तरह काट रहे है। आज हमें पड़ोसी मुल्कों से खतरा देश में बैठे रावण से ही है। और, जब जब रावण रूपी इंसान ने देश और समाज को नुकसान पहुंचाता है कोई न कोई राम बनकर धनुष बाण उठाया है। यह फिल्म पूरी तरह से देश भक्ति फिल्म है। इस फिल्म के निर्देशक नील मणि सिंह कहते हैं, %यह पूरी तरह से हिंदुस्तानी फिल्म है, जिसकी शूटिंग हमने गोरखपुर में की है। इस फिल्म का पोस्ट प्रोडक्शन भी पूरा हो गया है। जल्द ही इस फिल्म के रिलीज डेट की घोषणा की जाएगी। इस फिल्म की कहानी आम भोजपुरी फिल्मों से काफी हटकर है। प्रदीप पांडे चिंटू अपनी हर फिल्म में खूब मेहनत करते ही है, लेकिन इस फिल्म में उन्होंने मेरी उम्मीद से बढ़कर काम किया है। इस फिल्म में प्रदीप पांडे चिंटू के अलावा यामिनी सिंह, बृजेश त्रिपाठी, कृष्ण कुमार, देव सिंह, बालेश्वर सिंह, पप्पू यादव, सोनिया मिश्रा, अनूप लोटा, ऋतु सिंह और ग्लोरी मोहंता की मुख्य भूमिकाएं हैं।

स्वामी, प्रकाषक, मुद्रक विवेक श्रीवास्तव द्वारा ओम साई क्रियेषन्स, आषा काम्पलके स, इन्दिरा नगर लखनऊ से मुद्रित एव ं पहला तल, निधि काम्प्लेक्स, विकास नगर लखनऊ (उ0प्र0) से प्रकाषित।
RNI No.UPHIN/2015/6090 सम्पादक- विवेक श्रीवास्तव, फोन नं0- 8004949556, 7570901365 Email. info@theachievertimes.com किसी भी वाद विवाद का निस्तारण लखनऊ न्यायालय ही मान्य होगा।

समाचार-पत्र का मुख्य उद्देय ग्रामीण भारत का सत प्रतिशत मीडिया कवरेज कर समाज में फैला भ्रष्टाचार समाजिक बुराइयों एवं कुरीतियों को अपने स्तर पड़ताल करके सम्बन्धित उच्चअधिकारियों को ध्यानकर्षण कर उन्हें समाप्त कराना है।